RNI: UPHIN/2015/60902

राजधानी से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

www.theachivertimes.com

डाक पंजीयन संख्या
एस.एस.पी.एल.डब्लू/एन
पी.439/2015-2017

वर्ष : 9 अंक : 264
पृष्ठ : 8 मूल्य : 3 रुपया
लखनऊ, गुरुवार, 18 जनवरी, 2024

द अचीवर टाइम्स

श्रीराम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह

मंदिर परिसर पहुंची रामलला की अचल मूर्ति, गर्भगृह में श्रीरामयंत्र की हुई स्थापना

एजेंसी

लखनऊ। प्राण प्रतिष्ठा अनुष्ठान के दूसरे दिन रामलला की चांदी की मूर्ति को राममंदिर परिसर का भ्रमण कराया गया है। पहले रामलला की अचल मूर्ति को जन्मभूमि परिसर में भ्रमण कराने की योजना थी। सुरक्षा कारणों और मूर्ति का वजन अधिक होने की वजह से परिसर भ्रमण की रस्म रामलला की छोटी रजत प्रतिमा को लेकर पूरी कराई गई। इसी के साथ गर्भगृह में श्री रामयंत्र की स्थापना हुई। इस मौके पर मुख्य यचमान अनिल मिश्र मौजूद रहे। 10 किलो वजनी चांदी से बनी रामलला की प्रतिमा को मुख्य यजमान डॉ अनिल मिश्रा ने पालकी पर विराजमान कर मंदिर के अंदर व मंदिर के चारों तरफ भ्रमण कराया। मंदिर परिसर वैदिक मंत्रोंच्चारों से गूंजता रहा। आचार्यों व मंदिर निर्माण में लगे इंजीनियरों व सुरक्षा कर्मियों ने प्रतिमा पर पुष्पवर्षा की। विहिप के संरक्षक मंडल के सदस्य दिनेश चंद्र व मुख्य यजमान डॉ अनिल मिश्र ने रामलला की रजत प्रतिमा का पूजन किया।निर्मोही अखाड़ा के महंत दिनेंद्र दास और पुजारी सुनील दास ने गर्भगृह में सिंहासन की पूजा की। रामलला की अचल मूर्ति बुधवार की देर शाम विवेक सृष्टि परिसर से भारी सुरक्षा में राम जन्मभूमि परिसर पहुंचाई गई। अचल मूर्ति को बंद ट्रक में विराजमान कर ले जाया गया। सुरक्षा में पीएसी के दो सौ जवान, एटीएस की टीम और पुलिस अधिकारी शामिल रहे। अचल मूर्ति को सोने के सिंहासन पर बृहस्पतिवार को विराजित किया जाएगा। गर्भगृह में सिंहासन बनकर तैयार है। उधर, रामलला के नवनिर्मित गर्भगृह में श्रीरामयंत्र की स्थापना के साथ ही प्राण प्रतिष्ठा के कर्मकांड का शुभारंभ विधान पूर्वक तीर्थ पूजन, कलश पूजन, वर्धिनी पूजन संपन्न कराया।

शुभ मुहूर्त में दोपहर 1:20 बजे हुआ कलश पूजन

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के अनुष्ठान के दूसरे दिन का शुभारंभ शुभ मुहूर्त में दोपहर 1:20 बजे सरयू तट पर कलश पूजन के साथ हुआ। मुख्य यजमान डॉ अनिल मिश्र ने संकल्प लेकर सपत्नीक कलश पूजन किया। इस दौरान कुल दस कलशों का पूजन हुआ। इसके बाद 21 मातृ शक्तियों ने जल कलश यात्रा निकाली। मुख्य कलश को राम जन्मभूमि परिसर में बने यज्ञमंडप में स्थापित किया गया है।

गर्भगृह में जाने से पहले सरयू स्नान करेंगे पीएम मोदी, जल लेकर पैदल जाएंगे राम मंदिर

एजेंसी

अयोध्या। हनुमानगढ़ी के अलावा मां सीता की कुलदेवी देवकाली मंदिर में भी दर्शन की योजना पर विचार किया जा रहा है। प्रधानमंत्री के प्राण प्रतिष्ठा समारोह से एक दिन पहले ही 21 जनवरी को अयोध्या आ जाने की संभावना है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नए और भव्य मंदिर में रामलला के गर्भगृह में प्रवेश करने से पहले सरयू में आस्था की डुबकी लगाएंगे। यहां स्नान के बाद सरयू का पवित्र जल लेकर राम मंदिर तक पैदल जाएंगे। हनुमानगढ़ी के अलावा मां सीता की कुलदेवी देवकाली मंदिर में भी दर्शन की योजना पर विचार किया जा रहा है। प्रधानमंत्री के प्राण प्रतिष्ठा समारोह से एक दिन पहले ही 21 जनवरी को अयोध्या आ जाने की संभावना है। पीएम जगद्गुरु रामभद्राचार्य के अमृत जन्मोत्सव व रामचरित मानस प्रवचन में भी शामिल होंगे। प्रधानमंत्री मोदी का 22 जनवरी को रामलला के नवीन विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा में आगमन पहले से सुनिश्चित है। अब उनके अयोध्या दौर से जुड़े कुछ नए कार्यक्रमों पर भी विचार किया जा रहा है। इसके लिए रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट समेत प्रशासन व पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी एसपीजी के साथ मंथन कर रहे हैं। एसपीजी की ओर से हरी झंडी दिए जाने के बाद ही इसे फाइनल किया जाएगा। प्रशासनिक सूत्रों के अनुसार पीएम के अयोध्या प्रवास के दौरान 22 जनवरी को उनके सुबह की शुरुआत सरयू स्नान के साथ होगी। यहां स्नान के बाद कलश में जल लेकर पीएम राम पथ से भक्ति पथ होकर राम मंदिर की ओर बढ़ेंगे। भक्ति पथ पर ही हनुमानगढ़ी स्थित है। राम मंदिर में प्रवेश से पहले मोदी हनुमंत लला को अपनी श्रद्धा निवेदित करेंगे। प्रशासन और एसपीजी इस बिंदु पर माथापच्ची कर रहे हैं कि राम जन्मभूमि पथ की दूरी ज्यादा है। ऐसे में भक्ति पथ को ही प्रधानमंत्री का रूट तय किया जाए। भक्ति पथ पर ही छोटी देवकाली मंदिर है। मां सीता की कुलदेवी के रूप में इनकी महत्ता को देखते हुए मोदी यहां भी दर्शन-पूजन कर सकते हैं।

आदित्य ठाकरे के करीबी सूरज चव्हाण को ईडी ने किया गिरफ्तार

मुंबई। बीएमसी खिचड़ी कोविड घोटाला मामले में ईडी ने शिवसेना (यूबीटी) विधायक आदित्य ठाकरे के करीबी सूरज चव्हाण को गिरफ्तार किया। जानकारी के मुताबिक, एजेंसी के कार्यालय में पूछताछ के बाद चव्हाण को देर शाम धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत हिरासत में लिया गया। चव्हाण महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री और शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) प्रमुख उद्धव ठाकरे के बेटे आदित्य ठाकरे के सहयोगी बताए जाते हैं। पुलिस के अनुसार, कोविड-19 के दौरान प्रवासियों को खिचड़ी बांटने के लिए बृहन्मुंबई नगर निगम (बीएमसी) की ओर से 8.64 करोड़ रुपए का ठेका देते समय अनियमितताएं की गई थीं। मुंबई की आर्थिक अपराध शाखा का आरोप है कि प्रवासी मजदूरों को खिचड़ी बांटने के लिए ठेके के लिए कीर्तिकर को 52 लाख रूपये, वहीं सूरज चव्हाण को फर्म से 37 लाख रूपये दिए गए। यह कॉन्ट्रैक्ट बृहन्मुंबई नगर निगम की तरफ से दिया गया था।

एक नज़र

बंगाल में ईडी की टीम पर हमले की जांच के लिए सीबीआई-पुलिस की एसआईटी टीम का होगा गठन, कोर्ट ने दिए आदेश

कोलकाता। कलकत्ता हाईकोर्ट के न्यायाधीश जय सेनगुप्ता ने निर्देश दिया कि जांच की निगरानी उनकी ओर से की जाएगी। एसआईटी सुनवाई की अगली तारीख 12 फरवरी को जांच की प्रगति रिपोर्ट दाखिल करेगी।

पश्चिम बंगाल के संदेशखाली में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अधिकारियों पर हुए हमले की जांच के लिए कलकत्ता हाईकोर्ट ने सीबीआई और बंगाल पुलिस की एक संयुक्त विशेष जांच टीम (एसआईटी) के गठन का आदेश दिया है। कोर्ट ने निर्देश दिया कि सीबीआई के एक एसपी रैंक के अधिकारी का नाम गुरुवार तक बताने को कहा है। इस्लामपुर जिले के एसपी जसप्रीत सिंह संयुक्त रूप से एसआईटी का नेतृत्व करेंगे। न्यायाधीश जय सेनगुप्ता ने निर्देश दिया कि जांच की निगरानी उनकी ओर से की जाएगी। एसआईटी सुनवाई की अगली तारीख 12 फरवरी को जांच की प्रगति रिपोर्ट दाखिल करेगी। उल्लेखनीय है कि 5 जनवरी को ईडी टीम पर तृणमूल कांग्रेस के नेता शाजहां शेख के समर्थकों ने उस वक्त हमला कर दिया था, जब ईडी की टीम शेख के परिसर की तलाशी लेने गए थे।

गौरीगंज व अमेठी में होगा जनसाधारण एक्स. का ठहराव

अमेठी सिटी। दिल्ली जाने वाले यात्रियों के लिए राहत भरी खबर है। आनंद विहार-दानापुर जनसाधारण एक्सप्रेस का ठहराव अब गौरीगंज व अमेठी रेलवे स्टेशन पर होगा। इसके अतिरिक्त उदयपुर-पाटिलपुत्र तथा इंदौर-पटना एक्सप्रेस निहालगढ़ रेलवे स्टेशन पर रुकेगी। रेल मंत्रालय ने बुधवार को आदेश जारी कर दिया है। केंद्रीय मंत्री व स्थानीय सांसद स्मृति ईरानी ने बीते दिनों केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से मुलाकात की थी। इसमें रेल सुविधाओं के विकास व कई प्रमुख ट्रेनों के ठहराव की मांग की थी। इसके बाद लखनऊ-प्रतापगढ़-वाराणसी रेल ट्रैक पर प्रतिदिन आनंद विहार-दानापुर के बीच संचालित होने वाली जनसाधारण एक्सप्रेस का ठहराव गौरीगंज और अमेठी रेलवे स्टेशन पर होगा।

ईरान ने पाकिस्तान पर की एयरस्ट्राइक

आत्मरक्षा में कई देश करते है एयर स्ट्राइक : भारत

एजेंसी

नई दिल्ली। पाकिस्तान के बलूचिस्तान में आतंकी संगठन जैश अल अद्ल के ठिकानों पर ईरान ने मंगलवार रात को एयर स्ट्राइक की। इसके बाद पाकिस्तान और ईरान के रिश्तों में जबरदस्त तनाव पैदा हो गया। पाकिस्तान ने मिसाइल और ड्रोन अटैक में 2 बच्चों की मौत की पुष्टि की है। साथ ही 3 लोग घायल बताए जा रहे हैं. पाकिस्तान ने इन हमलों के बाद कहा कि ईरान को इसके लिए गंभीर नतीजे भुगतने पड़ेंगे। अब इस पूरे मामले को लेकर भारत ने भी प्रतिक्रिया दी है।

भारत के विदेश मंत्रालय बुधवार को ईरान-पाकिस्तान तनाव पर बयान जारी किया। विदेश मंत्रालय ने कहा कि ये ईरान और पाकिस्तान के बीच का मामला है। जहां तक भारत का सवाल है, आतंकवाद को लेकर हमारी नीति ज़ीरो टॉलरेंस की है। हम इस बात को समझते हैं कि कई देश आत्मरक्षा में कार्रवाई करते हैं।

ईरान मीडिया की एक रिपोर्ट के मुताबिक- ईरान ने अपने बॉर्डर पर फौज की तैनाती अचानक बढ़ा दी है. माना जा रहा है कि पाकिस्तान की फौज आतंकियों को ढाल बनाकर ईरान के खिलाफ जवाबी कार्रवाई कर सकती है।

असल में जैश-अल-अद्ल पहले ग्लोबल टेररिस्ट संगठन जुंदल्लाह का हिस्सा हुआ करता था. जैश-अल-अद्ल का मतलब इंसाफ की फौज यानी न्याय की सेना होता है. यह एक सुन्नी सलाफी अलगाववादी आतंकी संगठन है. आतंकी संगठन जैश-अल-अद्ल का मुख्य ठिकाना पाकिस्तान के बलूचिस्तान में है। 2012 से इस आतंकी संगठन की पाकिस्तान में मजबूत मौजूदगी है।

पाकिस्तान ने ईरान के राजदूत को देश छोड़ने को कहा

'जियो न्यूज के मुताबिक- इस घटना के बाद पाकिस्तान में जबरदस्त सियासी और फौजी कवायद देखी गई. रातभर मीटिंग्स का दौर चला. बुधवार दोपहर विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता मुमताज जाहरा बलोच मीडिया से मुखातिब हुई. उन्होंने कहा- ÷हमने तेहरान में मौजूद अपने राजदूत से फौरन देश लौटने को कहा है. ईरान के एम्बेसडर को देश छोड़ने के लिए कह दिया गया है.÷ हालांकि, इस वक्त ईरान के राजदूत अपने देश में ही मौजूद हैं। मुमताज जाहरा ने आगे कहा कि ईरान ने उकसाने वाली हरकत की है। हम इसे किसी कीमत पर बर्दाश्त नहीं कर सकते।

5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था में होगा सहकारिता का अहम रोलः अमित शाह

एजेंसी

नई दिल्ली। साल 2028 तक 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के भारत के लक्ष्य को पूरा करने में सहकारी समितियों की बड़ी हिस्सेदारी होगी। केंद्रीय सहकारिता और गृह मंत्री अमित शाह ने इन समितियों के विकास पर जोर देने की अपील करते हुए बुधवार को ये बात कही। वे दिल्ली के नौरोजी नगर स्थित वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में केंद्रीय सहकारी समितियों के रजिस्ट्रार (सीआरसीएस) के नए कार्यालय का उद्घाटन करने के बाद बोल रहे थे। गौरतलब है कि 41,000 वर्ग फुट में फैली इस इमारत का निर्माण एनबीसीसी ने किया है। गृहमंत्री शाह ने कहा कि नए कार्यालय का अधिग्रहण 175 करोड़ रुपये में किया गया है। उन्होंने कहा कि केंद्र लगातार सहकारी आंदोलन के लिए विकास के लिए अग्रसर है। उन्होंने बताया कि सरकार ने सहकारी आंदोलन के विकास के लिए पिछले 30 महीनों में 60 प्रमुख पहल की हैं। शाह ने कहा कि अब हमने तय कर लिया है कि पीएम मोदी की 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को हासिल करने में सहकारी समितियों की बड़ी हिस्सेदारी हो। उन्होंने पिछली सरकारों पर तंज कसते हुए कहा कि पिछले 75 सालों में इस क्षेत्र का विकास उस गति से नहीं हुआ जैसे होना चाहिए था। उन्होंने कहा कि सहकारी क्षेत्र 19वीं सदी से सीधे 21वीं सदी में आगे बढ़ेगा। शाह ने कहा कि सहकारी आंदोलन को मजबूत करने के लिए सरकार ने बहु-राज्य सहकारी सोसायटी अधिनियम में संशोधन किया है। साथ ही पैक्स (प्राथमिक कृषि ऋण समितियों) को मजबूत करने के लिए मॉडल उपनियम लाए हैं। इतना ही नहीं केंद्र सरकार पैक्स का कम्प्यूटरीकरण करने की दिशा में भी लगातार काम कर रही है। इस दौरान उन्होंने यह भी कहा कि भाजपा सरकार के कार्यकाल में 12,000 नए पैक्स बनाए गए हैं। इसके साथ ही हमने अगले पांच वर्षों में दो लाख बहुउद्देशीय पैक्स/डेयरी/मत्स्य सहकारी समितियां स्थापित करने का लक्ष्य रखा है। इस दौरान शाह ने सहकारी क्षेत्रों में और अधिक बैंक खोलने की आवश्यकता पर जोर दिया। साथ ही बहु-राज्य क्रेडिट समितियों से खुद को बैंकों में बदलने की भी अपील की। सहारा सहकारी समितियों के 2.5 लाख निवेशकों को अब तक 241 करोड़ रुपये का रिफंड मिला। इस दौरान, सहकारिता मंत्री अमित शाह ने यह भी बताया कि सहारा समूह की कंपनियों से जुड़ी चार सहकारी समितियों में धन जमा करने वाले लगभग 2.5 लाख छोटे निवेशकों को 241 करोड़ रुपये वापस कर दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि लगभग 1.5 करोड़ निवेशकों ने पोर्टल पर अपना पंजीकरण कराया है। इनमें से लगभग 2.5 लाख निवेशकों को 241 करोड़ रुपये पहले ही वापस कर दिए गए हैं। गौरतलब है कि बीते साल मार्च में सुप्रीम कोर्ट ने सहारा-सेबी रिफंड खाते से 5,000 करोड़ रुपये सेंट्रल रजिस्ट्रार ऑफ कोऑपरेटिव सोसाइटीज (सीआरसीएस) को ट्रांसफर करने का निर्देश दिया था। बाद में जुलाई में सीआरसीएस-सहारा रिफंड पोर्टल लॉन्च किया गया। इसका उद्देश्य करीबन चार करोड़ छोटे निवेशकों की मदद करना था।

गुरु गोविंद सिंह जी की जयंती पर जीवक परिवार की नई पहल

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। स्वास्थ्य सेवा आपके द्वार योजना पर कार्य करते हुए जीवक परिवार जो पहले से ही आयुर्वेद एंव एलोपैथ के जरिए शहर के साथ साथ ग्रामीण स्तर पर भी बेहतर स्वास्थ्य सेवाए उपलब्ध कराने के उद्देश्य से कार्यरत है। अपनी इस योजना की शुरुआत गुरू गोविंद सिंह जी की जयंती के अवसर पर विधि-विधान से कर रहे है। इस योजना के तहत जीवक केयर के नाम से संचालित संस्था पहले से कार्यरत अन्य संस्थाओ द्वारा प्रदत्त महंगी सेवाओ को ध्यान मे रखकर सस्ती एंव शुलभ सेवाए देने का प्रयास करेगी। संस्था के निदेशक मंडल ने हमे बताया कि हम पिछले 25 वर्षो से चिकित्सा एंव चिकित्सालय सेवा से जुड़कर कार्य कर रहे है। स्वयं का आयुर्वेदिक एंव ऐलोपैथिक अस्पताल बनाकर सैकड़ो मरीजो को कैंसर जैसी असाध्य बीमारी से बचाया है। इसके साथ-साथ यशविन जीवक इंस्टीट्यूट ऑफ पैरामेडिकल फाउंडेशन के जरिए स्वास्थ्य शिक्षा अभियान एंव समय समय पर निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाकर गरीब एंव असहाय मरीजो की सेवा की जा रही है। इसी क्रम मे समय की मांग पर हम मरीज के घर पहुंच कर उसके समुचित इलाज की व्यस्था करने का प्रयास करने जा रहे है जिससे मरीज एंव उनके तीमारदारो का भटकाव कम हो।

रामलला की चांदी की मूर्ति को कराया परिसर भ्रमण अचल मूर्ति ने भी परिसर में किया प्रवेश

एजेंसी

लखनऊ। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के दूसरे दिन रामलला की चांदी की मूर्ति को राममंदिर परिसर का भ्रमण कराया गया है। पहले रामलला की अचल मूर्ति को राम जन्मभूमि परिसर में भ्रमण कराने की योजना था, लेकिन मूर्ति का वजन अधिक होने व सुरक्षा कारणों से इस योजना को निरस्त कर दिया गया। परिसर भ्रमण की रस्म रामलला की छोटी रजत प्रतिमा को लेकर पूरी कराई गई। वहीं देर शाम को रामसेवक पुरम स्थित योग केंद्र विवेक सृष्टि परिसर से रामलला की अचल मूर्ति को रामजन्मभूमि परिसर में पहुंचा दिया गया है। बुधवार दोपहर 10 किलो वजनी चांदी से बनी रामलला की प्रतिमा को मुख्य यजमान डॉ अनिल मिश्रा ने पालकी पर विराजमान कर मंदिर के अंदर व मंदिर के चारों तरफ भ्रमण कराया। इस दौरान मंदिर परिसर वैदिक मंत्रोंच्चारों से गूंजता रहा। आचार्यों व मंदिर निर्माण में लगे इंजीनियरों व सुरक्षा कर्मियों ने प्रतिमा पर पुष्पवर्षा भी की। वहीं राम जन्मभूमि परिसर की भव्य सजावट भी की गई है। इससे पहले विहिप के संरक्षक मंडल सदस्य दिनेश चंद्र व मुख्य यजमान डॉ अनिल मिश्र ने रामलला की रजत प्रतिमा का पूजन भी किया। इसके पहले दिन में 2ः30 बजे निर्मोही अखाड़ा के महंत दिनेंद्र दास और पुजारी सुनील दास ने गर्भगृह में पूजा की। रामलला की अचल मूर्ति बुधवार की देर शाम विवेक सृष्टि परिसर से भारी सुरक्षा में राम जन्मभूमि परिसर पहुंचाई गई। अचल मूर्ति को बंद ट्रक में विराजमान कर ले जाया गया। इस दौरान सुरक्षा में पीएसी के दो सौ जवान, एटीएस की टीम व अन्य पुलिस अधिकारी शामिल रहे। विवेक सृष्टि से धर्मपथ, लता चौक, मुख्य मार्ग होते हुए क्रॉसिंग 11 से अचल मूर्ति को परिसर में पहुंचाई गई। जहां अचल मूर्ति को भारी सुरक्षा में रखा जाएगा। अचल मूर्ति को सोने के सिंहासन पर विराजित किया जाएगा। गर्भगृह में सिंहासन बनकर तैयार है। प्रभु श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा से पहले बुधवार को महिलाओं ने जल कलश यात्रा निकाली। कलश यात्रा के जरिये महिलाओं ने अपने लल्ला यानी रामलला के प्रति अपार प्रेम दर्शाया। इस यात्रा में 500 से अधिक महिलाएं शामिल रहीं। बुधवार को प्राण-प्रतिष्ठा अनुष्ठान का दूसरा दिन रहा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के आह्वान पर समूचा समाज इस आयोजन से जुड़ गया है। श्रीराम नगरी में अयोध्या महानगर की महिलाओं ने सुबह सरयू तट से यात्रा का शुभारंभ किया। श्रीराम की पताका फहराते, सिर पर कलश में भरा मां सरयू का जल लेकर महिलाएं राम धुन पर झूमते व जय श्रीराम का जयघोष करते निकलीं। पीले वस्त्र में निकले महिलाओं का समूह देखकर लग रहा था मानो रामनगरी ने जैसे पीतांबरी ओढ़ ली हो। यात्रा महापौर महंत गिरीश पति त्रिपाठी के संयोजन में निकाली गई। इसका नेतृत्व महापौर की धर्मपत्नी रामलक्ष्मी त्रिपाठी ने किया। महापौर ने कहा कि हमारे आराध्य प्रभु श्रीराम अपने नूतन आवास में प्रवेश कर रहे हैं। इसकी खुशी हम सभी को है। यह आयोजन अयोध्या की मातृ शक्ति का है।

गणतंत्र दिवस एवं राम मंदिर समारोह के मद्देनजर दिल्ली में सुरक्षा कड़ी की गई

एजेंसी

नई दिल्ली। गणतंत्र दिवस एवं अयोध्या में होने वाले राम मंदिर समारोह से पहले राष्ट्रीय राजधानी में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है. पुलिस के एक अधिकारी ने इसकी जानकारी दी. पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बुधवार को बताया कि दिल्ली पुलिस हाई अलर्ट पर है और उत्तर पूर्वी दिल्ली के जंगल के इलाकों में रोशनी के लिए पुलिस 'फ्लेयर गन या 'वेरी लाइट पिस्तौल (वीएलपी) का इस्तेमाल कर रही है। उत्तर पूर्वी दिल्ली के पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) जॉय टिर्की ने कहा, 22 जनवरी और 26 जनवरी से पहले (दिल्ली की) सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी गई है। किसी भी तरह की अवैध गतिविधियों को रोकने के मद्देनजर उत्तर पूर्वी दिल्ली के वन इलाकों में रोशनी के लिए मंगलवार रात को 'फ्लेयर गन का इस्तेमाल किया गया। उन्होंने कहा कि उत्तर पूर्वी दिल्ली को संवेदनशील इलाका माना जाता है. टिर्की ने कहा, आगामी गणतंत्र दिवस समारोह के मद्देनजर यमुना नदी के किनारे और खादर क्षेत्र में सघन गश्त एवं तलाशी अभियान जारी है। किसी को भी कानून व्यवस्था का उल्लंघन करने की इजाजत नहीं दी जाएगी। गणतंत्र दिवस की परेड के लिए दिल्ली भर में 8,000 से अधिक पुलिसकर्मी पहले ही तैनात किए जा चुके हैं। रात्रि गश्त कर्मियों को होटल, गेस्ट हाउस व धर्मशालाओं की जांच करने का निर्देश दिया गया है।

जेल में निरूद्ध बन्दियों को निशुल्क विधिक सहायता उपलब्ध करायेगा प्राधिकरण -छाया शर्मा, अपर जिला जज/सचिव

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। जनपद न्यायाधीश व अध्यक्ष,जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, मलखान सिंह के मार्गदर्शन में जिला कारागार, डासना गाजियाबाद का निरीक्षण छाया शर्मा अपर जिला जज व सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, द्वारा किया गया। निरीक्षण के दौरान जिला कारागार डासना, गाजियाबाद में जेल अधीक्षक, डिप्टी जेलर संजय कुमार आदि साथ रहे। तो वही छाया शर्मा अपर जिला जज व सचिव द्वारा जिला कारागार, डासना गाजियाबाद में पी-वार्गेनिंग विषय पर विधिक जागरुकता शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें छाया शर्मा द्वारा बताया गया कि कोई भी बंदी पी-वार्गेनिंग के आधार पर अपना वाद समाप्त कर सकते है एवं बंदियों को उनके विधिक अधिकारों से अवगत कराया गया। निरीक्षण के दौरान छाया शर्मा ने बन्दियों को बताया गया कि ऐसे बंदी जो समयपूर्व रिहाई हेतु पात्र है व आर्थिक रुप से कमजोर है एवं जमानत दाखिल करने में असमर्थ के साथ ऐसे बन्दी जिसकी जमानत चुकी है किन्तु उनके पास जमानती उपलब्ध न होने के कारण वे कारागार में अभी तक निरुद्ध है विधिक सहायता हेतु अपना आवेदन कार्यालय जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, हापुड़ में प्रस्तुत कर सकते है। जिससे सर्वोच्च न्यायालय के आदेशों का अनुपालन सुनिश्चित हो सकें। इसी दौरान छाया शर्मा ने लीगल एड क्लीनिक, कम्प्यूटर रूम, हॉस्पिटल व पाकशाला का निरीक्षण किया गया एवं अधोहस्ताक्षरी द्वारा बंदियों हेतु बनाये गये भोजन की गुणवत्ता की जांच की गयी, तो गुणवत्ता सामान्य पाई गयी। भोजन तैयार करने में पूर्णता सफाई बरती जा रही थी। निरीक्षण के दौरान छाया शर्मा द्वारा जेल अधीक्षक को जिला कारागार में साफ-सफाई की उचित व्यवस्था हेतु भी निर्देशित किया गया। निरीक्षण के दौरान जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, हापुड़ की ओर से पराविधिक स्वंयसेवक तरु त्यागी व सोनू कुमार उपस्थित रहे।

राम धुन गा कर भाजपा के कार्यकर्ताओं की सद्बुद्धि की कांग्रेस जनों ने की कामना

❖ध्वज के अपमान पर कांग्रेसियों में फूटा गुस्सा,गांधी प्रतिमा पर दिया धरना।

❖हापुड में बुधवार को जिला कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारीयो द्वारा हापुड़ नगर पालिका स्थित गांधी प्रतिमा पर धरना दिया गया।

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। कांग्रेस पार्टी के प्रदेश सचिव व हापुड़ के जिलाध्यक्ष मिथुन त्यागी ने बताया की 15 जनवरी को कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव अविनाश पांडे, राष्ट्रीय महासचिव धीरज गुर्जर, प्रदेश अध्यक्ष अजय राय सहित अनेक कांग्रेसी नेता अयोध्या राम मंदिर के दर्शन हेतु गए थे तभी वहां आरएसएस और भाजपा के कार्यकर्ता पहुंच गए और उन्होंने कांग्रेस के ध्वजवाहक अनोखेलाल के साथ धक्का मुक्की की और कांग्रेस के झंडे को नीचे गिरा कर पैरों से कुचल दिया। भारतीय जनता पार्टी का यह कृत्य बहुत ही निंदनीय है कांग्रेस पार्टी भाजपा और आरएसएस की इस विचारधारा की कड़े शब्दों में निंदा करती है और अपने हर कार्यकर्ता की लड़ाई को मजबूती से लड़ सकती है आज बापू प्रतिमा के सामनेराम धुन गा कर भाजपा के कार्यकर्ताओं की सद्बुद्धि की कामना की है बैठ कर राम धुन गा कर भाजपा के कार्यकर्ताओं की सद्बुद्धि की कामना की है पूर्व प्रदेश सचिव डॉ. शोएब ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहाआजादी से पहले भी आरएसएस राष्ट्र विरोधी कार्य करती थी और आज भी वही कार्य कर रही है, किसी भी देश या पार्टी के झंडे का अपमान करना बहुत ही निन्दनीय कार्य होता है भाजपा के कार्यकर्ता ने कांग्रेस के झंडे का अपमान करके अपनी ओछी मानसिकता का परिचय दिया है। कांग्रेस पार्टी का कार्यकर्ता आज भी इस देश के लिए और अपने झंडे के लिए मर मिटने के लिए तैयार है। अल्पसंख्यक विभाग के प्रदेश प्रवक्ता डॉक्टर खालिद मोहम्मद ने अपने विचार रखते हुए कहा कि अयोध्या में आरएसएस के कार्यकर्ताओं द्वारा कांग्रेस पार्टी के नेताओ और झंडे के साथ अभद्र व्यवहार करके बीजेपी ने अपना असली चेहरा दिखा दिया है। किसी भी पार्टी के झंडे का अपमान करने से ये सिद्ध हो जाता है कि बीजेपी की विचारधारा कितनी जहरीली है। भारतीय जनता पार्टी नहीं चाहती कि हिंदू मुस्लिम या इस देश का कोई भी निवासी एक साथ मिलजुल कर रहे, क्योंकि अगर ये सभी लोग एक साथ हो गए तो भाजपा की राजनीति खत्म हो जाएगी, क्योकि भाजपा नफरत की राजनीति करती है। अभी हाल की घटना से यह प्रतीत हो रहा है कि जैसे राम मंदिर की पूजा अर्चना करने का अधिकार केवल भारतीय जनता पार्टी को ही हो। भारतीय जनता पार्टी ने राम मंदिर पूजन का कार्य अपने हाथों में लेकर यह जता दिया है कि यह कार्यक्रम केवल एक पार्टी का है ना की धार्मिक। इस अवसर पर वरिष्ठ कांग्रेसी अरविंद शर्मा, वी.सी.शर्मा, रघुवीर सिंह एडवोकेट, सुखपाल गौतम, मुकेश कौशिक, यशपाल सिंह ढिलोर, राज सिंह गुर्जर, आतिफ हसन, जकरिया मनसबी, अमरजीत सिंह जंगी, रविन्द्र गुर्जर, जलज तेवतिया, राहत चौधरी, निसार पठान, तारकेश्वर त्यागी, देवेन्द्र कुमार जाटव,यश कुमार, मुज्जमिल मालिक, महाराज अहमद, कादिर अली आदि लोग मौजूद रहे।

एक नज़र

बाबूगढ़ निवासी हिस्टीशीटर अपराधी अवैध असलहा के साथ हुआ गिरफ्तार

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा के निर्देश अनुसार अपराध की रोकथाम एवं आपराधिक घटनाओं पर अंकुश लगाये जाने हेतु थाना बाबूगढ़ उप निरीक्षक जब्बार अहमद व उप निरीक्षक ब्रजवीर सिंह ने बछलोता नहर पुल के पास चैकिंग के दौरान हिस्टीशीटर अपराधी बॉबी उर्फ बोबिंद्र निवासी ग्राम होशदापुर गढ़ी थाना बाबूगढ़ को गिरफ्तार किया है जिसके कब्जे से अवैध असलहा बरामद हुआ है तो वही थाना बाबूगढ़ पर अभियोग पंजीकृत कर अग्रिम विधि कार्रवाई की गई।

जीआरपी,हापुड़ पुलिस व आरपीएफ़ द्वारा डॉग स्कोड द्वारा चलाया रेलवे स्टेशन पर चेकिंग अभियान

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। आगमी 22 जनवरी को अयोध्या में होने वाले श्री राम मंदिर प्रांण प्रतिष्ठा के उद्घाटन और गणतंत्र दिवस के परिपेक्ष में लोगों की सुरक्षा के दृष्टिगत रेलवे स्टेशन हापुड़ पर बुधवार को जीआरपी, हापुड़ पुलिस और आरपीएफ़ टीम द्वारा संयुक्त रूप से डॉग स्कोड आदि द्वारा संघन चेकिंग अभियान चलाया गया। इस दौरान पुलिसकर्मियों ने संदिग्ध लोगों के बैग चेक किये। इस मौके पर जीआरपी प्रभारी देवेंद्र उपाध्याय,आरपीएफ़ प्रभारी सुभाष यादव और हापुड़ हापुड़ नगर कोतवाली उप निरीक्षक हरि कुमार, का. नरेन्द्र सिंह,हरेंद्र राठी आदि पुलिसकर्मी मौजूद रहे।

शटर तोड़कर समान सहित लाखों की नगदी लेकर चोर हुए फरार

द अचीवर टाइम्स/निखिल मिश्रा

माल। उत्तर प्रदेश राजधानी लखनऊ कमिश्नरेट के थाना माल में मिली जानकारी अनुसार बीती रात थाना क्षेत्र अंतर्गत लोधौरा बाजार में चोरों ने एक ही रात में चार दुकानों का शटर तोड़कर समान सहित लाखों की नगदी पर हाथ साफ कर दिया जिसमें राकेश कुमार तिवारी के परचून की दुकान को निशाना बनाते हुए एक लाख पैंतीस हजार रुपए नगद व बारह किलो सिक्के और समान वहीं थोड़ी दूर पर स्थित विपिन तिवारी के परचून की दुकान से बारह हजार रुपए नगद लगभग आठ हजार रुपए का सामान वहीं पास में अन्य दुकान धीरेंद्र प्रताप की कपड़े की दुकान से कपड़े व बाइस हजार रूपए नगद,साथ ही पास में स्थित सत्यपाल के परचून की दुकान से तीस हजार रुपए नगदी सहित समान व पांच किलो फुटकर सिक्के पर हाथ साफ कर शातिर चोर फरार हो गए। पीड़ितों ने माल थाने पहुंच अज्ञात चोरों के खिलाफ तहरीर देकर रिपोर्ट दर्ज करने की मांग की है। इस संबंध में माल थाना प्रभारी निरीक्षक राजेश कुमार त्रिपाठी ने बताया कि मिली तहरीर के आधार पर अज्ञात चोरों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर आसपास के सीसीटीवी फुटेज के जरिए चोरों की तलाश की जा रही है।

मोहम्मदी पुलिस ने नशीले पाउडर के साथ दो आरोपी किए गिरफ्तार मुकदमा दर्ज

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

लखीमपुर खीरी। मोहम्मही कोतवाली पुलिस ने 40 ग्राम अवैध अल्प्रासेफ नशीला पाउडर के साथ 02 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया। मुकदमा दर्जकर भेजा जेल। पुलिस अधीक्षक खीरी गणेश प्रसाद साहा के निर्देशन व अपर पुलिस अधीक्षक खीरी के निकट पर्यवेक्षण में संपूर्ण जनपद में अपराध की रोकथाम व अवैध मादक पदार्थों के निर्माण, बिक्री व परिवहन के विरुद्ध चलाया गया अभियान। जिसके अंतर्गत को थाना मोहम्मदी पुलिस द्वारा अभियुक्त नरवीर पुत्र रामस्वरुप निवासी ग्राम बवक्करपुर थाना मोहम्मदी जनपद खीरी को कुम्भी चीनी मिल के पास से 26 ग्राम अल्प्रासेफ नशीला पाउडर के साथ गिरफ्तार किया गया व अभियुक्त आमीर पुत्र ईस्लाम निवासी रसूलपुर थाना मोहम्मदी जनपद खीरी को मोहम्मदपुर से 14 ग्राम अल्प्रासेफ नशीला पाउडर के साथ गिरफ्तार किया गया पंजीकृत कर न्यायिक अभिरक्षा हेतु भेजा जा रहा है।

35 लाख रुपए की लागत से होने वाले निर्माण कार्य से लोगों को मिलेगी राहत- पुष्पा देवी, अध्यक्ष हापुड़

❖ वार्ड नंबर 17 के फूलगढी कोटला सादात में इंटरलॉकिंग सड़क निर्माण कार्य का पालिका अध्यक्षा पुष्पा देवी ने किया शिलान्यास।

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। नगर पालिका अध्यक्ष पुष्पा देवी ने शहर में नाली,खड़ंजे, सड़कों के निर्माण व साफ सफाई व्यवस्था को लेकर आधिकारीयो को निर्देश दिए हुए हैं और उनके द्वारा शहर के विकास के लिए धीरे-धीरे हर वार्ड के लोगों को होने वाली समस्याओं का समाधान करने का प्रयास किया जा रहा है। तो वहीं हापुड़ नगर पालिका परिषद अध्यक्ष पुष्पा देवी ने बुधवार को हापुड़ के वार्ड नंबर 17 के फूलगढी कोटला सादात में 20 फूटा रोड पर हारून के मकान से छोटे के मकान तक 35 लाख रुपए की लागत से होने वाले इंटरलॉकिंग सड़क निर्माण कार्य का शिलान्यास कर लोगों को राहत देने का कार्य किया गया। तो वही पालिका अध्यक्ष पुष्पा देवी कहा कि शहर का विकास करना हमारी पहली प्राथमिकता है। धीरे-धीरे वाकी के हर वार्ड में होने वाले निर्माण कार्यों का शीघ्र शिलान्यास कर निर्माण कार्य चालू कर दिए जाएंगे। शहर में होने वाली साफ सफाई के साथ पानी की समस्याओं के समाधान हेतु अधिकारियों को निर्देश भी दिए हुए हैं। शिलान्यास के दौरान नगर पालिका कर्मचारी, सभासद संदीप वाल्मीकि, सभासद फिरोज मलिक सभासद कासिम कुरैशी सहित समस्त वार्ड के लोगों उपस्थित रहे।

भारतीय ज्योतिष कर्मकांड महासभा सनातन धर्म व संस्कृति के लिए बहुत अच्छा कार्य कर रही-बुधेश्वर त्रिपाठी

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। भारतीय ज्योतिष कर्मकांड महासभा के तत्वाधान में 14 जनवरी से 22 जनवरी 2024 तक अयोध्या में भगवान श्री रामलला के गर्भगृह में विराजित होने के उपलक्ष्य में मनाये जा रहे विजय पर्व महोत्सव कार्यक्रम के तीसरे दिन 16 जनवरी मंगलवार को ग्राम करीमपुर मिलक में श्री संकटमोचन हनुमान मंदिर पर धूमधाम के साथ सुन्दरकाण्ड व संकीर्तन कार्यक्रम हर्षोल्लास से हुआ। तो वही महासभा अध्यक्ष पंडित के0 सी0 पाण्डेय ने आचार्य पंडित वासुदेव शर्मा व आचार्य देवी प्रसाद तिवारी के द्वारा प्रथम पूजन किया महासभा प्रवक्ता पंडित अजय शर्मा व बंशीधर शर्मा की टीम द्वारा सुन्दरकांड, हनुमान चालीसा के साथ साथ प्रभु श्रीराम का सुन्दर भक्तिगीत प्रस्तुत किया गया जिससे पुरा माहौल भक्तिमय व राममय हो गया। कार्यक्रम की व्यवस्था मुख्य पुजारी व महासभा विद्वान पंडित जगदंबा शर्मा के साथ गजेंदर सिंह, जितेदर सिंह, सुशील शर्मा, धीरेन्दर सिंह आदि ने की। कार्यक्रम में मंत्री गौरव कौशिक, पंडित प्रशांत वशिष्ठ, एस्ट्रो धर्मेंद्र बंसल,पियूष, शिवम शर्मा आदि भी शामिल रहें कार्यक्रम में आये सभी सभी भक्तों को भगवान श्रीराम व हनुमान का पटका पहनाया गया व आरती के बाद प्रसाद का वितरण हुआ कार्य हुआ मुख्य अतिथि बुधेश्वर त्रिपाठी ने कार्यक्रम में उपस्थित बड़ी संख्या में लोगों को देखकर कहा कि प्रभु राम के कृपा से यहाँ आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जनसमाज की भक्ति देखकर खुशी व प्रसन्नता से मन उत्साहित है भारतीय ज्योतिष कर्मकांड महासभा सनातन धर्म व संस्कृति के लिए बहुत अच्छा कार्य कर रही है।

राष्ट्रीय महासचिव सर्वेश पाठक का हापुड़ आगमन पर कार्यकताओं ने किया स्वागत

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। भारतीय श्रमिक कामगार कर्मचारी महासंघ के राष्ट्रीय महासचिव का हापुड़ कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया एवम संगठन विस्तार हेतु चर्चा की। प्रदेश मंत्री सन्नी शर्मा के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया साथ ही उन्होंने बताया कि हम संगठन के माध्यम से राज्य सरकार एवम केंद्र सरकार द्वारा दी जा रही सभी सुविधाओं को जन जन तक पहुंचाने कार्य करते रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे। कार्यक्रम का संचालन शारीफ अली, अरुण कुमार, टीटू कुमार, राहुल गोस्वामी, शिवम कुमार, शिवा राठौर, राहुल कुमार व रवि आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

छात्राओं को यातायात नियमों को पालन करने हेतु यातायात पुलिस ने किया जागरूक

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। स्थित जेएमएस इंस्टीट्यूशन्स के 30 छात्रों ने यातायात जागरूकता अभियान में हिस्सा लिया जहां उन्हें बताया कि यातायात पुलिसकर्मी किस तरह कड़ा परिश्रम कर यातायात व्यवस्था को संभालते हैं। इस दौरान सभी छात्र भी सड़क पर यातायात व्यवस्था को संभालने में एक कदम आगे आए। सात दिन के राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा सप्ताह का जागरूकता अभियान बुधवार को समापन किया गया। जहां छात्रों ने काफी कुछ सीखा। तो वही बुधवार को टीएसआई ओंकार सिंह सहरावत ने जेएमएस के छात्रों को यातायात जागरूकता अभियान के तहत जागरूक करते हुए नियमों का पालन करना कितना जरूरी है। उसके बाद छात्राओं के साथ पुलिसकर्मी सड़कों पर उतरे तो छात्रों ने वाहन चालकों से अपील की कि किसी भी स्थिति में नियमों का उल्लंघन न करें। ऐसा करना जानलेवा साबित हो सकता है। उन्होंने बताया कि यातायात नियमों का पालन करना चाहिए ,दो पहियां वाहन पर तीन सवारियां ना बैठे, हेलमेट का प्रयोग अवश्य करें,गाड़ी चलाते वक्त सीट बेल्ट जरूर लगाए,वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का इस्तेमाल ना करें और कभी भी शराब पीकर गाड़ी ना चलाएं आदि यातायात नियमों से संबंधित सभी नियमों का पालन करने की आपील की।

राम दीपक बना रहे कुम्हारों का मंत्री ने बढ़ाया उत्साह

द अचीवर टाइम्स अखिलेश दास बाराबंकी। अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा के दिन दीपोत्सव मनाया जाएगा। राम ज्योति घर-घर जलाई जाएगी। इसके लिए रामसनेहीघाट के तासीपुर में एक दर्जन से ज्यादा कुम्हार परिवार दीए बना रहे हैं। खाद्य रसद एवं नागरिक आपूर्ति राज्यमंत्री सतीश चंद्र शर्मा इन परिवारों के बीच पहुंचे। खुद भी चाक पर दीया बनाकर उनका उत्साहवर्धन किया। मंत्री ने कहा कि दीए बनाने से आमदनी के साथ ही रामकाज में सहभागिता हो रही है। इस मौके पर दीया बनाने वाले धीरज प्रजापति, उजागर प्रजापति, घनश्याम प्रजापति, गया प्रसाद, लालता प्रसाद विश्वकर्मा, कैलाश विश्वकर्मा, राम अचल प्रजापति, रामकुमार रावत, केशव राम रावत, वीरेंद्र गुप्ता, सुरेश गुप्ता, सरन विश्वकर्मा आदि मौजूद रहे।

श्री योगेश्वर महादेव मंदिर की कमेटी की ओर से जरूरतमंद लोगों को कंबल वितरित किए गए

द अचीवर टाइम्स ङ्क निखिल मिश्रा

उन्नाव। उन्नाव जनपद के हसनगंज तहसील के दिबियापुर गांव में श्री योगेश्वर महादेव मंदिर की कमेटी की ओर से जरूरतमंद लोगों को कंबल वितरित किए गए। आपको बता दें कि इन दिनों पड़ रही भीषण ठंड से सभी लोग पूरी तरह से परेशान है । लेकिन सबसे बुरा हाल गरीबों का है। दिबियापुर गांव में श्री योगेश्वर महादेव मंदिर की कमेटी की ओर से दर्जनों जरूरतमंद लोगों को कंबल वितरित किए गए। मंदिर के संरक्षक पुजारी उमेश शर्मा ने पूछे जाने पर कहा कि कड़ाके की ठंड पड़ रही है। जिससे गरीबों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इसलिए समाज के सभी लोगों को इनकी मदद के लिए आगे आना होगा।मंदिर कमेटी की तरफ से हर वर्ष कंबल वितरित किए जाते हैं साथ ही गरीब कन्याओं के विवाह में उचित सहयोग किया जाता है। इस मौके पर अधिवक्ता सुजीत शर्मा ने कहा कि गरीबों व असहायों की मदद करने से बड़ा कोई पुण्य कार्य नहीं है। हर सामर्थ्यवान व्यक्ति को गरीबी और असहायों की मदद के लिए आगे आना चाहिए। इस मौके पर रोहित शर्मा, मोनू विश्वकर्मा, राष्ट्र स्वयंसेवक गौ सेवक अभय शर्मा, सुनील उर्फ बजरंगी थावर गौ सेवक बहेलिया सर्वेश सविता सूरज शर्मा हनुमेष कुमार गोविंद बीडीसी माही आदि लोग उपस्थित रहें।

दो काले कानून वापस को लेकर ट्रक ड्राइवरों ने किया धरना प्रदर्शन

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। के धौलाना विधानसभा क्षेत्र के गांव देहरा झाल पर ट्रक ड्राइवर ने सरकार द्वारा दो काले कानून जो लागू किए गए थे उस काले कानून को वापस लेने के लिए धरना प्रदर्शन किया तो वही भारतीय किसान संगठन के हापुड़ जिला अध्यक्ष अजय यादव व कार्यकर्ता ने ट्रक ड्राइवर को अपना समर्थन कर उनके साथ धरना में शामिल हुए। ट्रक ड्राइवर के धरने प्रदर्शन किसी सूचना पर मौके पर पहुंचे धौलाना थाना प्रभारी निरीक्षक देवेंद्र सिंह बिष्ट और औधोगिक क्षेत्र खिचरा के चौकी इंचार्ज मनोज कुमार ने ट्रक ड्राइवर और संगठन के कार्यकर्ता से बात करके धरना को समाप्त कराया व संगठन के कार्यकर्ता और ट्रक ड्राइवर ने एसडीएम के नाम काले कानून की मांग को वापस लेने के लिए थाना प्रभारी निरीक्षक देवेंद्र सिंह बिष्ट को ज्ञापन सौंपते हुए सरकार द्वारा दो काले कानून को वापस लेने के लिए सरकार से अपील किए।

डॉ आराधना बाजपेई नोएडा में हुई सम्मानित

❖हापुड़ मंडल से इकलौते नाम का चयन होकर सम्मानित होना गर्व और गौरव का विषय- डॉ आराधना बाजपेई।

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। साहित्यकार एवं कवयित्री एल. एन. पब्लिक स्कूल की प्रधानाचार्य डॉ आराधना बाजपेई को नोएडा के सेक्टर 6 में आयोजित ÷एक शाम नारी शक्ति के नाम ÷समारोह में सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महेश शर्मा सांसद एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री भारत सरकार के साथ अति विशिष्ट अतिथि बिमला बाथम अध्यक्ष उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग, अति विशिष्ट अतिथि मनीष वर्मा जिलाधिकारी,शैलेंद्र बहादुर समाज कल्याण अधिकारी,लायंस क्लब मंडलाध्यक्ष पंकज विजलवान, इंटरनेशनल डायरेक्टर एंडोरसी विनय मित्तल,उप मंडलाध्यक्ष ए के मित्तल प्रथम,उपमंडलाध्यक्ष विनय सिसोदिया द्वितीय थे।

डॉ आराधना बाजपेई ने कहा लायंस क्लब नोएडा शिवा एवं नव ऊर्जा युवा संस्था द्वारा आयोजित भव्य कार्यक्रम में पूरे हापुड़ मंडल से इकलौते नाम का चयन होकर सम्मानित होना गर्व और गौरव का विषय है। तो वही उपमंडलाध्यक्ष ए के मित्तल ने कहा कि डॉ आराधना बाजपेई न केवल साहित्य एवं शैक्षिक संस्थान के माध्यम से उल्लेखनीय कार्य कर रही हैं अपितु वे विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के पद पर कार्य करते हुए गत कई वर्षों से कार्य करती आ रहीं हैं। हम सभी अतिथि उन्हें सम्मानित करते हुए गौरवान्वित हैं।

इस अवसर पर यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस के पदाधिकारियों,लायंस क्लब गौरव ,एलायंस क्लब इंटरनेशनल,भारत विकास परिषद परिवर्तन ,हरे कृष्ण संकीर्तन मंडल के पदाधिकारियों ने बधाई प्रेषित करते हुए कहा कि यह उनके लिए अत्यंत गौरव का विषय है।

लोधेश्वर महादेवा मंदिर परिसर में चलाया स्वच्छ तीर्थ अभियान

द अचीवर टाइम्स अखिलेश दास बाराबंकी। अयोध्या धाम में श्री राम लाल प्राण प्रतिष्ठा को लेकर राज्य मंत्री मयंकेश्वर शरण सिंह ने महादेवा मंदिर पहुंचकर आदि देव महादेव का जलाभिषेक कर मानव कल्याण की कामना की। इसके बाद मंदिर परिसर में झाड़ू लगाकर स्वच्छ तीर्थ अभियान में सम्मिलित हुए। पूर्व में निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार संसदीय कार्य शिक्षा चिकित्सा परिवार कल्याण एवं मातृ शिशु कल्याण राज्य मंत्री मयंकेश्वर शरण सिंह ने सपा पर कटाक्ष करते हुए कहा कि विनाश काले विपरीत बुद्धि की कहावत इन पर सही साबित हो रही है। भारतीय जनता पार्टी आगामी लोकसभा चुनाव में पूर्ण बहुमत की सरकार पुनः बनाएगी। पिछले चार चुनाव से जनता का प्यार व आशीर्वाद जिस प्रकार मिल रहा है। वह अपने आप में परिलक्षित कर रहा है कि प्रदेश में ही नहीं पूरे देश में सर्वांगीण विकास हो रहा है।

जंगली जानवरों के हमले में मारे जाने पर मिलेगा 10 लाख का मुआवजा गाय-भैंस के मारने पर मिलेंगे 20 हजार

संवाददाता

लखनऊ। यूपी में जंगली जानवर के हमले से मारे जाने पर परिजनों को 10 लाख रुपये का मुआवजा मिलेगा। गाय-भैंस या दूसरे घरेलू जानवरों के हमले से मर जाने पर राशि बहुत कम होगी। प्रदेश में जंगली जानवरों के हमले में इंसानों के मारे जाने पर मुआवजा राशि बढ़ाकर 10 लाख रुपये की जाएगी। घायल होने और पालतू जानवरों के मारे जाने पर भी मुआवजा राशि बढ़ेगी। इसके लिए प्रदेश सरकार ने वन विभाग से प्रस्ताव मांगा है। नई दरें शीघ्र ही लागू किए जाने की उम्मीद है। पिछले 10 साल से यूपी में मानव-वन्यजीव संघर्ष में इंसानों की मौत या घायल होने और पालतू जानवरों के मरने पर मिलने वाली मुआवजा राशि में कोई बढ़ोतरी नहीं हुई है। अभी तक मानव-वन्यजीव संघर्ष में किसी व्यक्ति के मारे जाने पर आश्रितों को 5 लाख रुपये मुआवजे का प्रावधान है। जबकि, महाराष्ट्र में 25 लाख, कर्नाटक में 15 लाख, तेलंगाना व केरल में 10-10 लाख, मध्य प्रदेश में 8 लाख, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ व उत्तराखंड में 6-6 लाख रुपये दिया जाता है। अब यूपी के वन विभाग ने भी मुआवजा राशि में वृद्धि का प्रस्ताव शासन को भेज दिया है। प्रस्ताव में पूरी तरह से अपंग होने पर मुआवजा राशि 4 लाख से बढ़ाकर 6 लाख रुपये करने का प्रस्ताव है। वहीं व्यक्ति को हल्की चोट व घायल होने पर पहली बार 10 हजार रुपये का मुआवजा प्रस्तावित किया गया है। प्रदेश में जंगली जानवरों के हमले में गाय, बैल और भैंस के मारे जाने पर सहायता राशि 15 हजार से बढ़ाकर 20 हजार रुपये करने की तैयारी है। दो-तीन वर्ष के बछड़ा-बछिया और पड़वा-पड़िया के मारे जाने पर सहायता राशि 8 हजार से बढ़ाकर 10 हजार रुपये किए जाने का प्रस्ताव है। गधा के मारे जाने पर सहायता राशि 5 हजार से बढ़ाकर 7 हजार और बकरी या भेड़ के मारे जाने पर 3 हजार रुपये से बढ़ाकर 4 हजार रुपये करने का प्रस्ताव है। कच्चे मकान के क्षतिग्रस्त किए जाने पर दो हजार रुपये और झोपड़ी के क्षतिग्रस्त होने पर 5 हजार रुपये की वृद्धि प्रस्तावित है। अभी तक प्रदेश में मानव-वन्यजीव संघर्ष के तहत जंगली बाघ, तेंदुआ, भालू, लकड़बग्घा, भेड़िया, हाथी, गैंडा, मगर और घड़ियाल के हमले में मृत या घायल होने पर मुआवजा मिलता था। लेकिन, अब प्रस्तावित सूची में शेर और जंगली सुअर को भी शामिल किया गया है। उत्तर प्रदेश में खुले जंगलों में शेर नहीं हैं, तो इस सूची में उन्हें क्यों शामिल किया जा रहा है, वन विभाग के अधिकारियों का कहना है कि राज्य आपदा मोचक निधि के तहत मिले निर्देशों के तहत प्रस्ताव में शेर को शामिल किया गया है।

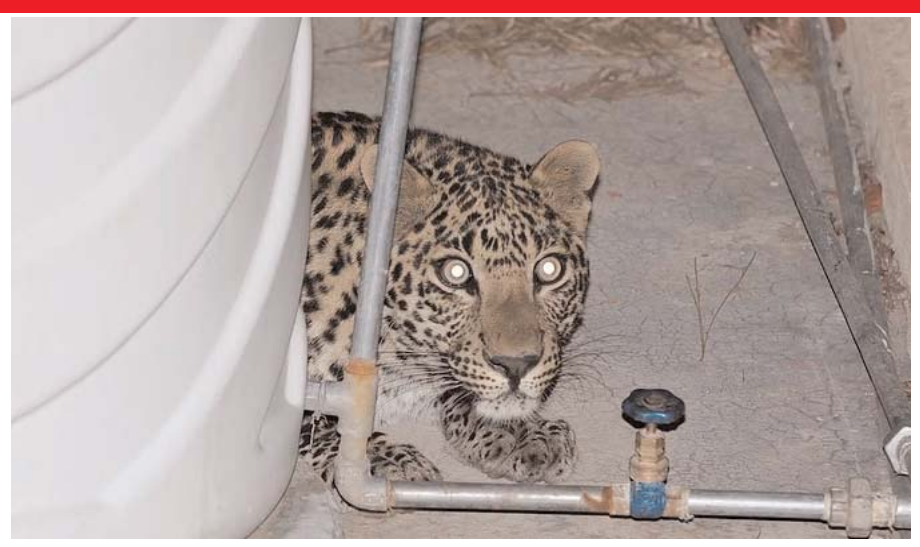

व्यक्तियों के मारे जाने पर कब-कितना दिया गया मुआवजा (रुपये में)

वर्ष	मुआवजा राशि
2012-13	16 लाख
2013-14	45 लाख
2014-15	27.5 लाख
2015-16	24.5 लाख
2016-17	1.45 करोड़
2017-18	96.5 लाख
2018-19	1.17 करोड़
2019-20	75 लाख
2020-21	60 लाख
2021-22	50 लाख
2022-23	1.05 करोड़
2023-24 (सितंबर तक)	1.15 करोड़

मानव-वन्यजीव संघर्ष में कब-कितने लोग मारे गए

वर्ष	मृत
2012-13	22
2013-14	26
2014-15	21
2015-16	14
2016-17	28
2017-18	33
2018-19	21
2019-20	45
2020-21	38
2021-22	30
2022-23	54
2023-24	36

एक नज़र

आईएसआईएस के अलीगढ़ मॉड्यूल का आतंकी फैजान गिरफ्तार, 25 हजार रुपये का है इनाम

लखनऊ। यूपी एटीएस ने बुधवार को आईएसआईएस के आतंकी फैजान बख्तेयार को गिरफ्तार कर लिया है। वह अपने साथियों के साथ मिलकर देश विरोधी घटना को अंजाम देने की फिराक में था। यूपी एटीएस ने बुधवार को आईएसआईएस के अलीगढ़ मॉड्यूल के आतंकी फैजान बख्तेयार को अलीगढ़ से गिरफ्तार कर लिया है। उस पर 25 हजार रुपये का इनाम था। वह आईएसआईएस की शपथ लेकर अलीगढ़ मॉड्यूल को तैयार कर इससे और लोगों को भी जोड़ रहा था। एटीएस ने अभी तक इस मॉड्यूल से जुड़े आठ आतंकियों को गिरफ्तार किया है और एक ने कोर्ट में समर्पण किया है। फैजान बख्तेयार (24) अपने सभी साथियों के साथ मिलकर देश विरोधी घटना को अंजाम देने की फिराक में था। एटीएस को कई दिनों से उसकी तलाश थी। अलीगढ़ मॉड्यूल प्रदेश के कई जिलों में फैला हुआ है।

युवती की आत्महत्या परिजनों से मिलने कन्नौज जाएगा सपा का प्रतिनिधिमंडल, करेगा जांच

लखनऊ। युवती की आत्महत्या मामले की जांच करने के लिए सपा का प्रतिनिधिमंडल कन्नौज जाएगा और पीड़ित परिजनों से मुलाकात करेगा। कन्नौज में एक दबंग अध्यापक की जोर जबरदस्ती से आहत होकर एक युवती ने आत्महत्या कर ली थी। मामले की जांच करने और परिजनों को सांत्वना देने के लिए सपा का प्रतिनिधिमंडल बुधवार को कन्नौज जाएगा। सपा प्रतिनिधिमंडल मामले की रिपोर्ट प्रदेश कार्यालय को सौंपेगा। इस प्रतिनिधिमंडल में सपा की समाजवादी महिला सभा की राष्ट्रीय अध्यक्ष जूही सिंह, समाजवादी महिला सभा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नेहा यादव, समाजवादी महिला सभा कन्नौज की जिलाध्यक्ष कंचन कनौजिया, औरैया की पल्लवी पाल, विधूना की रचना सिंह, सपा के प्रदेश सचिव रामपाल नायक बंजारा, सपा के कन्नौज के जिलाध्यक्ष कलीम खान और विधानसभा क्षेत्र के पूर्व प्रत्याशी अनिल पाल शामिल हैं। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव पहले से ही प्रदेश में कानून-व्यवस्था को लेकर यूपी सरकार पर सवाल उठाते रहे हैं।

पूर्वांचल को मथने में जुटी कांग्रेस, आज वाराणसी में जोनल तो कल मिर्जापुर में सामाजिक न्याय सम्मेलन

लखनऊ। यूपी कांग्रेस ने पूर्वांचल पर फोकस बढ़ा दिया है। क्षेत्र में किए जाने वाले सम्मेलनों में कांग्रेस जातिगत जनगणना और आरक्षण बढ़ाने के मुद्दे को धार देगी। कांग्रेस ने पूर्वांचल पर फोकस बढ़ा दिया है। मंगलवार को गोरखपुर में जोनल सम्मेलन से बाद प्रदेश नेतृत्व वाराणसी पहुंच गया है। यहां बुधवार को प्रयागराज जोन के सभी जिलों के जिलाध्यक्षों और अन्य वरिष्ठ नेताओं के साथ बैठक होगी। इसके बाद बृहस्पतिवार को मिर्जापुर में सामाजिक न्याय सम्मेलन का भी आयोजन किया गया है। पुराने वोटबैंक को फिर से हासिल करने के लिए बेताब कांग्रेस एक के बाद एक सम्मेलन कर रही है। जोनल सम्मेलन के जरिए जिलेवार संगठन की मजबूती पर जोर दिया जा रहा है। मंगलवार को गोरखपुर में हुए सम्मेलन में प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने पार्टी नेताओं को हर चुनाव में पूरी सक्रियता दिखाने का आह्वान किया। बुधवार को वाराणसी में होने वाले सम्मेलन में पार्टी ताकत दिखाने के लिए तैयार है। इसी क्रम में बृहस्पतिवार को मिर्जापुर के राजदीप महाविद्यालय सभागार में होने वाले सामाजिक न्याय सम्मेलन में पिछड़ी जातियों की गोलबंदी की जाएगी। इस महासम्मेलन में पूर्वांचल के विभिन्न जिलों के दिग्गज जुटेंगे। कांग्रेस पिछड़ा वर्ग विभाग के प्रदेश अध्यक्ष मनोज यादव ने बताया कि इस सम्मेलन के जरिये जातिगत जनगणना कराओ, आरक्षण बढ़ाओ अभियान को धार दिया जाएगा।

राम मंदिर एरियल दर्शन के लिए देने होंगे 3,539 रुपये

लखनऊ। प्रमुख सचिव पर्यटन मुकेश मेश्राम ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राम भक्तों को हेलीकॉप्टर सुविधा उपलब्ध कराने के निर्देश दिये थे। इसी के तहत प्रदेश के 6 जिलों से हेलीकॉप्टर सेवा शुरू की जा रही है। यह सुविधा भक्तों और पर्यटकों को ऑपरेटर मॉडल पर उपलब्ध करायी जाएगी। इसके अलावा राम भक्तों को राम मंदिर ऐरियल दर्शन भी कराए जाएंगे। इसके लिए रामभक्त सरयू तट स्थित टूरिज्म गेस्ट हाउस के पास बने हैलीपेड से उड़ान भर सकेंगे। इसके तहत श्रद्धालुओं को राम मंदिर, हनुमानगढ़ी, सरयू घाट समेत प्रसिद्ध दर्शनीय स्थलों की हवाई सैर भी करायी जाएगी।

दिव्य महापुरुष थे गुरु गोविंद सिंहः सीएम योगी

खालसा पंथ बना मुगल साम्राज्य के पतन का कारण

संवाददाता

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ दशमेश गुरु गोविंद सिंह जी के प्रकाश पर्व कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि इतिहास में बहुत कम देखने को मिलता है कि कई पीढ़ियां देश और धर्म की रक्षा के लिए खुद को बलिदान कर दें। गुरु गोविंद सिंह ने अपने बलिदान से सभी के लिए उदाहरण प्रस्तुत किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरु गोविंद सिंह जी के प्रकाश पर्व पर प्रदेशवासियों को लख लख बधाइयां दीं। डीएवी डिग्री कॉलेज में बुधवार को आयोजित कार्यक्रम में अपने संबोधन के दौरान उन्होंने कहा कि गुरु गोविंद सिंह एक दिव्य महापुरुष थे, जिनका इस धराधाम पर निश्चित प्रायोजन से आगमन हुआ था। खालसा पंथ की स्थापना ही मुगल साम्राज्य के पतन का कारण बना। पूरा देश आज दशमेश गुरु महाराज के प्रकाशोत्सव के साथ जुड़कर उनकी स्मृतियों को नमन करते हुए एक नई प्रेरणा प्राप्त कर रहा है। गुरु गोविंद सिंह महाराज एक शहीद पिता के पुत्र और शहीद पुत्रों के पिता भी हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि गुरु तेग बहादुर जी महाराज ने सत्य और न्याय की स्थापना के लिए शहादत की जो शृंखला उस कालखंड में शुरू की थी, उस परंपरा को गुरु गोविंद सिंह महाराज ने भी आगे बढ़ाया। उनके चारों पुत्र साहिबजादा अजीत सिंह, जुझार सिंह, जोरावर सिंह और फतेह सिंह धर्म और देश के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान देते हैं। उस वक्त गुरु गोविंद सिंह जी महाराज ने हमारे सामने जो उदाहरण प्रस्तुत किया वो आज भी हम सबके लिए प्रेरक हैं। मुख्यमंत्री ने गुरु गोविंद सिंह जी को नमन करते हुए कहा कि इतिहास में बहुत कम देखने को मिलता है कि कई पीढ़ियां देश और धर्म की रक्षा के लिए खुद को बलिदान कर दें। ये हमारा सौभाग्य है कि लखनऊ गुरुद्वारा प्रबंध समिति द्वारा साहिबजादों के बलिदान और उनकी स्मृति में वीर बाल दिवस की मांग 2018-19 में उठाई गई और पहली बार मुख्यमंत्री आवास में महान कीर्तन का आयोजन हुआ, जिसके बाद 2022 से वीर बाल दिवस का राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन शुरू हो गया है। आज भारत के कोटि कोटि नौजवानों के लिए गुरु गोविंद सिंह जी के साहिबजादे प्रेरणा बन चुके हैं। मात्र सात साल और नौ साल की उम्र में भी देश और धर्म के प्रति संकल्प से साहिबजादे टस से मस नहीं हुए। कल्पना कीजिए कितनी मजबूत नींव है सिख पंथ की। मुख्यमंत्री ने कहा कि सिख जहां भी रहता है वहां अपने परिश्रम, पुरुषार्थ और सेवाकार्य के लिए जाना जाता है। देश और धर्म के लिए मर मिटने के लिए हमेशा तैयार रहता है। सिख गुरुओं ने अलग-अलग कालखंड में समाज का मार्गदर्शन किया है। उत्तर प्रदेश में कई ऐतिहासिक महत्व के गुरुद्वारे मौजूद हैं। प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर सिख गुरुओं का आगमन हुआ है। इन्हें संभालकर रखना हमारी जिम्मेदारी है। ये आने वाली पीढ़ियों का मार्गदर्शन करेंगे। भीषण शीतलहर में भी गुरु परंपरा के प्रति सम्मान व्यक्त करने आप सब आए हैं। यही विरासत का सम्मान है। गुरु गोविंद सिंह हमें इतनी शक्ति दें कि हम उनके मार्ग का अनुसरण करते हुए देश और समाज के लिए कुछ कर सकें। कार्यक्रम के दौरान लखनऊ गुरुद्वारा प्रबंध समिति की ओर से मुख्यमंत्री का स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। सीएम योगी ने इस अवसर पर नेशनल गेम्स में स्वर्ण और रजत पदक प्राप्त करने वाले खालसा इंटर कॉलेज के 6 बच्चों को सम्मानित किया। कार्यक्रम में सरदार राजेन्द्र सिंह बग्गा, सतपाल सिंह, सरदार परविंदर सिंह टीटू, भाजपा लखनऊ महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी, अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य सरदार परविंदर सिंह मौजूद रहे।

यूपी के छह जिलों से अयोध्या धाम के लिए शुरू होगी हेलीकॉप्टर सेवा, तय किया गया वन-वे किराया

लखनऊ। राम भक्तों के लिए छह जिलों से अयोध्या धाम के लिए हेलीकॉप्टर सुविधा शुरू कर दी गई है। सरकार श्रद्धालुओं को राम मंदिर और अयोध्या के हवाई दर्शन भी कराएगी। योगी सरकार राम भक्तों और पर्यटकों को हेलीकॉप्टर से अयोध्या धाम के दर्शन कराएगी। सरकार प्रदेश के छह जिलों से हेलीकॉप्टर सेवा उपलब्ध कराने जा रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ हेलीकॉप्टर सेवा की शुरुआत लखनऊ से करेंगे। सरकार की ओर से प्रदेश के छह जिलों से शुरू होने वाली हेलीकॉप्टर सेवा प्रदाता ऑपरेटर का चयन किया गया है, जो ऑपरेशनल मॉडल पर हेली सर्विसेस की सेवाएं प्रदान करेगा। राम भक्तों और पर्यटकों को हेलीकॉप्टर सेवा गोरखपुर, वाराणसी, लखनऊ, प्रयागराज, मथुरा और आगरा से मिलेगी।

अयोध्या से कोलकाता व बंगलुरू के लिए शुरू हुई वायुसेवा

संवाददाता

लखनऊ। अयोध्या के अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे से बुधवार को कोलकाता व बंगलुरू के लिए भी वायुसेवा शुरू हो गई है। इस अवसर पर सीएम योगी आदित्यनाथ व केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने जनता को संबोधित किया। यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि 30 दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अयोध्या में महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे का लोकार्पण किया था। इसके साथ ही दिल्ली, मुंबई और अहमदाबाद के लिए अयोध्या से वायुसेवा शुरू हो गई थी। आज इंडियन एयरलाइंस की अयोध्या से कोलकाता और बंगलुरू के लिए भी वायुसेवा शुरू हो गई है। उन्होंने कहा कि बीते नौ साल में यूपी एयर कनेक्टिविटी में एक प्रमुख राज्य बनकर उभरा है। प्रदेश में अब चार अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे हो गए हैं। इस मौके पर केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि यूपी लगातार विकास की नई ऊंचाइयों को छू रहा है। अगर हम तुलना करें तो अमेरिका की 70 फीसदी आबादी के बराबर जनसंख्या यूपी में रहती है और यूरोप की आधी आबादी के बराबर जनसंख्या यूपी में रहती है। उन्होंने कहा कि बीते नवंबर को पूरे देश ने दिवाली मनाई थी। हमने फिर 3 दिसंबर को भी दिवाली मनाई जब राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश के चुनाव नतीजे आए और अब 22 जनवरी को पूरे विश्व में भगवान राम के भक्त रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर दिवाली मनाएंगे।

पीडीए की प्रथम चरण की यात्रा को अखिलेश ने दिखाई हरी झंडी

सपा दारा सिंह के खिलाफ नहीं उतरेगी प्रत्याशी

संवाददाता

लखनऊ। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बुधवार को हरी झंडी दिखाकर पीडीए यात्रा को रवाना किया। उन्होंने बताया कि सीटों के बंटवारे पर जल्द ही निर्णय होगा। इंडिया गठबंधन मजबूत हो हम इस पर काम कर रहे हैं। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बुधवार को पीडीए की प्रथम चरण की यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यात्रा का प्रथम चरण 1 फरवरी तक चलेगा। इस मौके पर सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि 2024 का साल नया जरूर है पर यह केंद्र की सत्ता परिवर्तन का भी साल है। आज लोकतंत्र खतरे में है लोकसभा से सांसदों को सवाल पूछने पर निलंबित कर दिया जाता है। ऐसे में जनता सरकार से क्या उम्मीद रखे।

अखिलेश यादव ने कहा कि 2024 में पीडीए गठबंधन ही एनडीए को हराएगा। इंडिया गठबंधन के साथ सीटों के बंटवारे पर उन्होंने कहा कि इस पर जल्द ही फैसला होगा। केंद्र में हमारे सहयोग से सरकार बनेगी तो युवाओं को नौकरियां मिलेंगी। उन्होंने प्रदेश की योगी सरकार पर निशाना साधते हुए निवेश के दावों पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि तमिलनाडु और गुजरात निवेशकों की पहली पसंद है। वहां सुविधाएं भी बेहतर हैं। ऐसे में यूपी में कौन निवेश करेगा? सरकार को जानकारी देनी चाहिए कि प्रदेश में कितना निवेश आया और इससे कितने लोगों को रोजगार मिला। राम मंदिर कार्यक्रम में जाने को लेकर अखिलेश यादव ने कहा कि हम लोग पुराने धार्मिक लोग हैं। हमारे लिए पीडीए ही हमारा भगवान है। यूपी विधान परिषद की एक सीट पर हो रहे उपचुनाव में सपा कोई उम्मीदवार नहीं उतारेगी। इस सीट पर भाजपा ने दारा सिंह चौहान को प्रत्याशी बनाया है। अखिलेश यादव ने कहा कि पीडीए यात्रा में सपा के सभी नेता शामिल होंगे और जगह-जगह पर मीडिया को भी संबोधित किया जाएगा।

रामलला आज परिसर में करेंगे भ्रमण, शुद्धिकरण के बाद बांधी गई मूर्ति की आंखों पर पट्टी, 22 को खुलेगी

संवाददाता

लखनऊ। विवेक सृष्टि से शुरू हुआ अनुष्ठान अब बुधवार से राम जन्मभूमि परिसर में किया जाएगा। बुधवार को रामलला की मूर्ति परिसर में प्रवेश करेगी और मूर्ति को परिसर का भ्रमण कराया जाएगा। प्रायश्चित पूजन व कर्मकुटी पूजन के साथ रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का सात दिवसीय अनुष्ठान मंगलवार से शुरू हो गया। प्राण प्रतिष्ठा का मुख्य यजमान श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के सदस्य डॉ. अनिल मिश्र को बनाया गया है। मंगलवार को करीब तीन घंटे तक प्रायश्चित पूजा हुई। इसके बाद यजमान को सरयू स्नान कराया गया। मूर्ति निर्माण स्थल की भी पूजा हुई। चयनित मूर्ति का शुद्धीकरण करते हुए उनकी आंखों पर पट्टी बांधी गई है, यह पट्टी 22 जनवरी को खोली जाएगी। प्रायश्चित पूजा दोपहर एक बजे विवेक सृष्टि परिसर में आचार्य अरुण दीक्षित के निर्देशन में शुरू हुई। इस दौरान मुख्य यजमान डॉ. अनिल मिश्र ने सपत्नीक संकल्प लिया और पूजन शुरू किया। यह पूजन उस स्थल पर हुआ जहां रामलला की चयनित अचल मूर्ति का निर्माण किया गया है। पूजन के दौरान मूर्तिकार अरुण योगीराज भी मौजूद रहे। प्रायश्चित पूजा भगवान से क्षमा और यजमान के शुद्धीकरण के लिए होती है। प्रायश्चित पूजा के माध्यम से रामलला से क्षमा मांगी गई। ये क्षमा मूर्ति बनाने के दौरान छेनी-हथौड़ी या किसी भी वजह से उन्हें जो चोट लगी होगी, उसके लिए मांगी जाती है। इसके बाद कर्मकुटी पूजन की प्रक्रिया हुई। इस पूजन के बाद ही मंदिर और प्राण प्रतिष्ठा से जुड़े कार्यक्रम की शुरुआत होती है। पूजन के बाद मुख्य यजमान डॉ. अनिल मिश्र सरयू तट पहुंचे जहां उन्हें दशविधि स्नान कराया गया। यजमान को सबसे पहले गोमूत्र से स्नान कराया गया। इसके बाद गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत, कुशोदक, भस्म, मिट्टी और शहद से स्नान कराए जाने के बाद अंत में सरयू जल से स्नान कराया गया। दौरान प्रायश्चित पूजा से जुड़े मंत्रोच्चार गूंजते रहे। यजमान द्वारा गोदान की रस्म भी निभाई गई। विवेक सृष्टि से शुरू हुआ अनुष्ठान अब बुधवार से राम जन्मभूमि परिसर में किया जाएगा। बुधवार को रामलला की मूर्ति परिसर में प्रवेश करेगी और मूर्ति को परिसर का भ्रमण कराया जाएगा। फिर मंदिर परिसर में बने यज्ञ मंडप में अनुष्ठान शुरू होंगे। अयोध्या। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के मुख्य यजमान श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के सदस्य डॉ.अनिल मिश्र हैं। यजमान के रूप में उन्होंने मंगलवार को प्रायश्चित पूजन में हिस्सा लिया। अब वे सात दिनों तक यजमान की ही भूमिका में रहेंगे। प्राण प्रतिष्ठा कराने वाले कर्मकांडी ब्राह्मणों ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, सीएम योगी आदित्यनाथ, राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, राममंदिर ट्रस्ट अध्यक्ष महंत नृत्य गोपाल दास, संघ प्रमुख मोहन भागवत और डॉ. अनिल मिश्र सपत्नीक मुख्य आयोजन के समय 22 जनवरी को उपस्थित रहेंगे। प्रधानमंत्री मोदी गर्भगृह में अपने हाथ से कुशा और श्लाका खींचेंगे। उसके बाद रामलला प्राण प्रतिष्ठित हो जाएंगे। इसके बाद पीएम मोदी भोग अर्पित करने के साथ ही आरती भी करेंगे।

लोकसभा चुनाव में विपक्ष को मात देने के लिए भाजपा का बड़ा प्लान, 10 फीसदी वोट बैंक और छोटे दलों इपर फोकस

लखनऊ। लोकसभा चुनाव-2024 में भारतीय जनता पार्टी दस फीसदी वोट बैंक बढ़ाने में ताकत लगाएगी। यूपी में गृहमंत्री अमित शाह, जेपी नड्डा, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह के क्लस्टर वार प्रवास होंगे। लोकसभा चुनाव-2024 में भाजपा पिछले लोकसभा चुनाव की तुलना में दस प्रतिशत वोट बढ़ाने में ताकत लगाएगी। पार्टी ने नए मतदाताओं के साथ फ्लोटिंग मतदाताओं को साधने की रणनीति बनाई है। मंगलवार को नई दिल्ली स्थित भाजपा के राष्ट्रीय मुख्यालय में हुई पार्टी के बैठक में गृहमंत्री अमित शाह और राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने क्लस्टर प्रभारियों को चुनाव का रोडमैप सौंपा। बैठक में पार्टी के शीर्ष नेताओं ने कहा कि सभी लोकसभा क्षेत्रों में विपक्षी दलों के ऐसे नेता जो अपने दल में उपेक्षित महसूस कर रहे हैं, उन्हें भाजपा से जोड़ना है।

सम्पादकीय

कर्ज के चंगुल में फंसी दुनिया के बीच भारतीय रिजर्व बैंक ने उठाए महत्वपूर्ण कदम

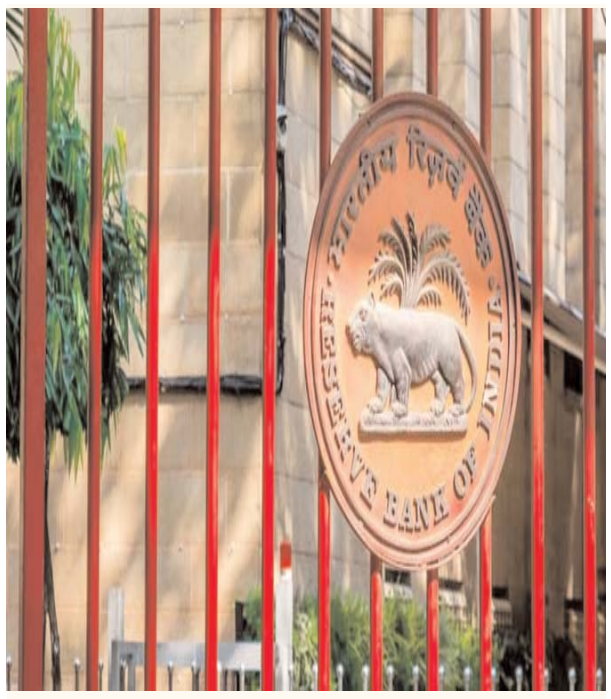

आईएमएफ का यह कहना कि पिछले वर्ष कुल वैश्विक कर्ज वैश्विक जीडीपी का 238 फीसदी था, बताता है कि पूरी दुनिया कर्ज के जाल में किस कदर उलझी है। ऐसे में, भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा देश में असुरक्षित घरेलू कर्ज को, जो वित्तीय अस्थिरता को बढ़ा भी सकते हैं, रोकने के लिए उठाए गए कदम महत्वपूर्ण हैं। वर्तमान वित्तीय वर्ष की शुरुआत में हमने देखा कि वैश्विक अर्थव्यवस्था राजकोषीय और मौद्रिक नीति दोनों उपायों से मंदी से उबर रही थी। दरअसल, वित्त वर्ष 2022 में मुद्रास्फीति से निपटने के लिए विभिन्न देशों में ब्याज दरें बढ़ाई गई, सार्वजनिक ऋण में भारी कमी आई और सरकारी वित्त में सुधार भी हुआ था। इस आर्थिक सुधार से अंतरराष्ट्रीय व्यापार और निवेश में कुछ हद तक स्थिरता भी संभव लग रही थी। लेकिन आर्थिक सुधारों के लिए विभिन्न देशों में अपनाई गई नीतियों में काफी फर्क भी दिखा। भारत जैसी उभरते बाजारों वाली विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में व्यापक आधार वाले आर्थिक सुधार दिखे। लेकिन कम आय वाली विकासशील अर्थव्यवस्था वाले देशों ने व्यापक आर्थिक स्थिरता का अनुभव किया, जिससे अत्यधिक सामाजिक और आर्थिक संकट पैदा हुए। संसाधनों के अभाव वाले क्षेत्रों की संसाधन-बहुल क्षेत्रों तक पहुंच कैसे सुनिश्चित की जाए, इस संदर्भ में हाल के समय में कई वैश्विक नीतिगत चर्चाएं भी हुई। नई दिल्ली में आयोजित जी-20 सम्मेलन में मजबूत, सतत, संतुलित और समावेशी विकास की जरूरत पर बल दिया गया। हालांकि इस स्थिति की जटिलता के कई आयाम हैं। ऐसा ही एक महत्वपूर्ण मुद्दा है बढ़ते वैश्विक कर्ज का। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, पिछले वर्ष कुल वैश्विक कर्ज कुल वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (वैश्विक जीडीपी) का 238 फीसदी था, जो 2019 की तुलना में नौ फीसदी ज्यादा था। अगर इन्हीं आंकड़ों को डॉलर में देखें, तो यह कर्ज 2,350 खरब डॉलर था, जो 2021 की तुलना में करीब दो सौ अरब डॉलर ज्यादा था। इसमें सबसे ज्यादा चिंता का विषय घरेलू और निजी क्षेत्र का बढ़ता कर्ज है। हालांकि 2008 की वैश्विक मंदी के बाद से घरेलू कर्ज पर पूरी तरह से निगरानी रखी गई है, लेकिन फिर भी पिछले पंद्रह वर्षों में यह काफी तेजी से बढ़ा है। कोविड महामारी ने तो इसे और भी तेजी से बढ़ाया है। उल्लेखनीय है कि घरेलू कर्जों का उच्च स्तर वित्तीय अस्थिरता का एक प्रमुख स्रोत हो सकता है। हालांकि वैश्विक नीतिगत चर्चाओं में कोविड महामारी के बाद वित्तीय स्थिरता को वापस लाने पर फोकस किया गया है, लेकिन जब बात घरेलू और निजी क्षेत्र के कर्ज की हो, तो ज्यादा सोच-विचार जरूरी हो जाता है। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि घरेलू कर्ज की प्रकृति, विशेषताएं और प्रभाव विभिन्न देशों में भिन्न-भिन्न होते हैं। उल्लेखनीय है कि अगर असुरक्षित घरेलू कर्ज ज्यादा बढ़ जाते हैं, तो वित्तीय स्थिरता के लिए बड़ा खतरा पैदा हो जाता है। दूसरी तरफ, सुरक्षित घरेलू कर्ज, मसलन रियल एस्टेट के लिए लिया गया कर्ज, वास्तविक मांग बढ़ा सकते हैं और घरेलू संपत्ति पैदा करते हैं। कर्ज निर्माण की इस प्रक्रिया की विस्तृत समझ रखना जरूरी है। इस समस्या की भयावहता को समझने के लिए आइए, भारत सहित कुछ प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में घरेलू कर्ज की स्थिति को दो काल-खंडों 2008 और 2022 में समझते हैं। 2008 वह वर्ष था, जब पूरी दुनिया में मंदी छाई थी, जबकि 2022 कोविड महामारी के ठीक बाद का वर्ष था। दोनों वे वर्ष थे, जब देशों की अर्थव्यवस्थाओं में सुधार दिखा। दोनों काल-खंडों के बीच कनाडा, फ्रांस, इटली और जापान में घरेलू कर्ज तेजी से बढ़ा। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के आंकड़ों के अनुसार, कनाडा, फ्रांस, इटली और जापान में यह 2008 के क्रमशः 83.47, 48.60, 38.98 और 60.27 फीसदी से बढ़कर क्रमशः 102.38, 66.14, 41.72 और 68.15 फीसदी हो गया। जबकि भारत में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के अनुपात में घरेलू कर्ज सर्वाधिक न्यूनतम में से रहा, जो वित्त वर्ष 2022 के जीडीपी का करीब 35 फीसदी था और 2008 से 2022 के दौरान इसमें तेज गिरावट देखने को मिली। भारत में घरेलू कर्ज 2008 में जीडीपी का 40.85 फीसदी था, जो 2022 में 35.56 फीसदी रह गया। अमेरिका और ब्रिटेन में भी इस कालखंड में घरेलू कर्ज में कमी आई। भारत में घरेलू क्षेत्र से उत्पन्न होने वाले असुरक्षित कर्ज के जोखिमों को रोकने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा हाल ही में उठाए गए कदम उल्लेखनीय हैं। असुरक्षित कर्ज पर अंकुश लगाने के लिए केंद्रीय बैंक ने नवंबर, 2023 में बैंकों और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) दोनों के लिए क्रेडिट कार्ड जैसे असुरक्षित उपभोक्ता कर्ज पर जोखिम का भार 25 फीसदी तक बढ़ा दिया है। केंद्रीय बैंक के इस कदम का उद्देश्य महज इतना है कि देश के वित्तीय क्षेत्र को घरेलू क्षेत्र से उत्पन्न होने वाले किसी भी बड़े वित्तीय जोखिम से बचाया जाए। हालांकि भारत का घरेलू कर्ज ज्यादा नहीं है, फिर भी केंद्रीय बैंक द्वारा दिखाई जा रही सतर्कता का महत्व है। इससे जोखिमों को कम करने और वित्तीय क्षेत्र की स्थिरता सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी। सारांश के तौर पर कह सकते हैं कि पूरी दुनिया में बढ़ते घरेलू कर्ज से वैश्विक अर्थव्यवस्था में अस्थिरता आएगी, जिसका नकारात्मक असर भारत समेत सभी उभरते बाजारों वाली अर्थव्यवस्थाओं पर भी पड़ेगा। पिछले वर्ष इसी समय के आसपास अमेरिका के सिलिकॉन वैली बैंक में जो संकट दिखा था, हालांकि जिस पर काबू पा लिया गया था, इसी समस्या का एक उदाहरण है। पूरी दुनिया को ऐसी नीतियों की जरूरत है, जिनका फोकस इस बढ़ते कर्ज पर काबू पाने पर हो। अर्थशास्त्रीय सिद्धांत बताते हैं कि घरेलू कर्ज के बढ़ने से अल्प अवधि में खपत और विकास को बढ़ावा मिलता दिख सकता है, लेकिन लंबे समय में इसका विकास पर उल्टा ही असर होता है। यह दिखाने का दरअसल कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है कि घरेलू कर्ज में वृद्धि वित्तीय सेवाओं या विभिन्न क्षेत्रों के बीच वित्तीय असंतुलन के बढ़ने से होती है। हालांकि यह मान लेना गलत नहीं होगा कि महामारी के वक्त आर्थिक विरोधाभास और चारों तरफ व्याप्त अनिश्चितता ही घरेलू कर्ज में वृद्धि के प्रमुख कारण थे।

सोशल मीडिया में जजों की ट्रोलिंग और कुछ नैतिक सवाल

बात अब मीडिया ट्रायल और अदालती फैसलों की आलोचना से कहीं आगे फैसले देने वाले जजों की ट्रोलिंग तक आन पहुंची है। यही कारण है कि हाल में भोपाल में आयोजित दसवें मप्र न्यायाधीश सम्मेलन में जिला न्यायालयों के जजों ने यह मुद्दा जोर शोर से उठाया और वरिष्ठ जजों से मार्गदर्शन मांगा कि न्यायाधीशों की ट्रोलिंग पर उन्हें क्या करना चाहिए? सोशल मीडिया पर न्यायाधीशों की ट्रोलिंग भी अदालती अवमानना हो सकती है या नहीं? सोशल मीडिया में किसी खास वैचारिक एजेंडे अथवा पूर्वाग्रह दुराग्रह के चलते गढ़े जाने वाले नरेटिव, न्यूसेंस और जजों की व्यक्तिगत आलोचना को किस रूप में लिया जाना चाहिए? क्योंकि भारत में सोशल मीडिया की नकेल कसने के लिए बहुत कड़े कानून नहीं है। ऐसे कानून बन भी जाएं तो फिर व्यक्ति की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार का क्या होगा? वैसे भी कई लोगों का मानना है कि सोशल मीडिया दरअसल जनता की आवाज है। लाख आलोचना के बावजूद इसे दबाया नहीं जा सकता। सम्मेलन में शामिल देश के सुप्रीम कोर्ट के ज्यादातर न्यायाधीशों की राय यही थी कि जजों की सोशल मीडिया पर ट्रोलिंग के मामलो को फिलहाल इग्नोर (अनदेखा) करना ही बेहतर है। भाव यही कि ऐसे तत्वों के मुंह लगने से कोई फायदा नहीं है। हालांकि यह उत्तर भी कई सवालों से भरा है। यूं न्यायपालिका के सामने नई चुनौती आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस(एआई) की भी है, लेकिन उसका मामला थोड़ा अलग है। न्यायाधीशों पर सोशल मीडिया के हमलों का मामला ज्यादा संवेदनशील इसलिए है क्योंकि अदालती फैसले समाज में न्याय की रक्षा का काम करते हैं। इसी से समाज को संचालित करने का दिशानिर्देश और सुसूत्रता भी मिलती है। अदालती फैसले हमेशा निष्पक्ष और न्यायसंगत प्रतीत हों, ऐसा जरूरी नहीं है, लेकिन उन फैसलों की आलोचना तार्किक और कानूनी आधार पर ही की जा सकती है। लेकिन जब ऐसे फैसलों के पीछे न्यायाधीश के विवेक, न्यायिकता अथवा पूर्वाग्रह को लेकर सवाल उठाए जाने लगें, उनकी भद्दे ढंग से ट्रोलिंग की जाए तो तब न्यायाधीशों का विचलित होना स्वाभाविक है। सम्मेलन में शामिल कई जजों ने कहा कि वर्तमान में लोकप्रिय सोशल मीडिया प्लेटफार्म जैसे कि वाट्सएप ग्रुप और फेसबुक पर हमारे विरुद्ध अमर्यादित बातें होती हैं। जिन्हें फैसला पसंद नहीं आता, वे भ्रम फैलाते हैं। भद्दे कमेंट करते हैं। क्या ऐसा करने वालों पर हम (न्यायाधीश) कंटेम्प्ट ऑफ कोर्ट (अदालत की अवमानना) की कार्रवाई कर सकते हैं? इन सवालो के जवाब में सुप्रीम कोर्ट के जज जस्टिस अभय एस ओक ने कहा कि न्यायाधीश सोशल मीडिया की ट्रोलिंग से न तो डरें और न हीं किसी एजेंडे के तहत गढ़े जाने वाले नैरेटिव से प्रभावित हों। इसे सिर्फ इग्नोर करें, क्योंकि सोशल मीडिया की कोई अकाउंटेबिलिटी (जवाबदेही) नहीं है। जस्टिस ओक ने बताया कि मुंबई में तो जजों को प्रभावित और परेशान करने के लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल इतना बढ़ गया है कि कई जजों के खिलाफ ही पिटीशन दायर हो जाती है। इस सम्मेलन में यह बात साफ झलकी कि आज न्यायाधीश समुदाय अगर किसी बात से सर्वाधिक चिंतित है तो वो है, सोशल मीडिया। ऐसा मीडिया जिसके हजारों मुंह, आंखें और कान हैं लेकिन कहीं कोई रिमोट कंट्रोल नहीं है। और

शायद मस्तिष्क भी नहीं है। इस मीडिया ने अब मानव जीवन में इतनी भीतर तक घुसपैठ कर ली है कि किसी का इससे बचना लगभग असंभव है। यदि कोई बचा हुआ भी है तो उस पर आदिम सभ्यता का होने का टैग लग सकता है। उन्होंने कहा, %हम इस तरह की मीडिया के लिए अभी कुछ भी नहीं कर सकते हैं। हम नहीं जानते हैं कि हमें क्या कदम उठाना है। वे न केवल लांछन लगा रहे हैं बल्कि लोगों और न्यायाधीशों की प्रतिष्ठा को प्रभावित कर रहे हैं। ऊपर से यह शिकायत भी है कि बोलने की स्वतंत्रता नहीं है। उन्होंने कहा कि दरसअल फैसले की नहीं न्यायाधीश की आलोचना करना मानहानि है। पिछले साल व्हाट्सएप से जुड़े एक मामले में दलीलें सुनते हुए सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश दीपक गुप्ता ने टिप्पणी की थी कि कैसे निर्दोष लोगों को ऑनलाइन ट्रोल किया जा रहा था और कैसे गुमनाम संस्थाओं ने सोशल मीडिया का इस्तेमाल प्रतिष्ठा को कीचड़ में धकेलने के लिए किया था। कुछ महीने पहले, न्यायमूर्ति इंदिरा बनर्जी और न्यायमूर्ति अजय रस्तोगी की एक अलग पीठ ने बताया था कि कैसे न्यायाधीशों को भी सोशल मीडिया का खामियाजा भुगतना पड़ता है। इसी तरह एक मामले में फर्जी खबरों और गलत सूचनाओं पर एक ऑनलाइन व्याख्यान के दौरान, न्यायमूर्ति संजय किशन कौल ने न्यायपालिका के खिलाफ सोशल मीडिया द्वारा फैलाई जा रही असहिष्णुता और खासकर न्यायपालिका के खिलाफ लगाए जा रहे आरोपों की प्रवृत्ति के खिलाफ अपनी बात कही थी। सुप्रीम कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश जस्टिस एनवी रमना ने कहा था कि अब न्यायाधीश ÷अपमानजनक सोशल मीडिया पोस्टिंग÷ का निशाना बन रहे हैं। एक तर्क दिया जा सकता है कि चूंकि भारतीय न्यायपालिका आम तौर पर पारंपरिक मीडिया में ज्यादा आलोचना की आदी नहीं रही है, इसलिए सोशल मीडिया में इस तरह अतिवादी और अमर्यादित प्रतिक्रियाएं उसके लिए परेशानी का बायस बन रही हैं। यानी सोशल मीडिया के रूप में न्यायपालिका का मीडिया से सामना एक नए किस्म का और एकतरफा टकराव है। इसमें एक हद तक सच्चाई हो सकती है। अब तक मीडिया और खासकर प्रिंट मीडिया अपने संवैधानिक और पेशेवर दायित्वों के मद्देनजर न्यायिक फैसलों की मर्यादित और तार्किक आलोचना करने तक सीमित रहा है। अमूमन चौथा स्तम्भ माने जानी वीली खबर पालिका (मीडिया) का लोकतंत्र के तीसरे स्तम्भ न्यायपालिका के प्रति सम्मान का भाव ही रहा है। हालांकि इस सदी के शुरू में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रसार ने न्यायिक फैसलों के पहले ही आरोपियों के मीडिया ट्रायल की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया। इससे भी आगे जाकर अब सोशल मीडिया उससे भी आगे जाकर सीधे न्यायाधीशों पर ही हमले करने लगा है, जोकि बेहद गंभीर और घातक है। इससे न्याय व्यवस्था पर से ही लोगों का विश्वास उठने का खतरा है। क्योंकि अगर न्यायाधीश की नीयत, नरेटिव और वैचारिक रूझान के आधार पर फैसलों की आलोचना की जाएगी तो कोई भी न्यायाधीश अपने विवेक से निष्पक्ष फैसले कैसे दे पाएगा। हमे यह नहीं भूलना चाहिए कि न्यायाधीश भी अंततः मनुष्य ही हैं। व्यक्तिगत राग द्वेष वहां भी काम कर सकते हैं। मानवीय गलतियां उससे भी हो सकती है। लेकिन कोर्ट के फैसले भी अनंतिम हैं और उनकी समीक्षा और पुनर्विचार का प्रावधान हमारी न्यायिक व्यवस्था में है। उन रास्तों को अपनाने के बजाय किसी जज को उसकी विचारधारा, धर्म, व्यक्तिगत आग्रह के आधार पर आलोचना और निंदा का निशाना बनाना परोक्ष रूप से समूची न्यायिक और प्रकारांतर लोकतांत्रिक व्यवस्था पर उंगली उठाना भी है। अब सवाल यह है कि महासागर की तरह अथाह महसूस होने वाले सोशल मीडिया पर अंकुश लगाने का कोई प्रभावी उपाय है या हो सकता है? क्या इसे कानून के जरिए प्रभावी ढंग से नियंत्रित किया जा सकता है? क्या इसे पूरी तरह इग्नोर करना न्यायपीठ पर बैठे व्यक्ति के लिए संभव है? दरअसल विश्व में सोशल मीडिया का पहला प्रतिनिधि तो रामायण काल के उस धोबी को माना जाना चाहिए, जिसने राजा राम द्वारा लंका में रावण की कैद से मुक्त सीता माता को पुनः पत्नी के रूप में स्वीकारने और उनकी पवित्रता को लेकर सवाल उठा दिया था और प्रभु राम भी उस धोबी की आवाज को अनदेखा नहीं कर पाए थे। भगवान राम ने सीता का त्याग कर सही किया या नहीं, यह हमेशा बहस का मुद्दा रहा है, लेकिन यहां बात जनमानस में चल रहे द्वंद्व और विचारों की है। अमूमन सामाजिकता से दूर रहने वाले न्यायाधीश भी क्या सोशल मीडिया से पूरी तरह अप्रभावित रह सकते हैं? यदि नहीं रह सकते तो उन्हें अपने कर्तव्य को सोशल मीडिया से अप्रभावित रह कर कैसे पूरा करना चाहिए, यह बहुत बड़ा और अब वैश्विक सवाल बन चुका है। हालांकि कई देशों में सरकारों ने सोशल मीडिया पर अंकुश के लिए कुछ कानून बनाए हैं, लेकिन उसका असर महासागर में दो चार मछलियां पकड़ पाने जैसा ही है। बतौर एक लोकतंत्र न्यायपालिका और न्यायाधीश की विवेकशीलता पर विश्वास कायम रखने तथा सोशल मीडिया के रूप में व्यक्ति की अभिव्यक्ति की आजादी बनाए रखने के बीच आदर्श संतुलन कैसे बनाएं रखें, यह देश और दुनिया के सामने भी बड़ी चुनौती है।

उनके राम, अपने राम, सबके राम, हमारे 'राम'

आज पूरा देश ही नहीं, कमोबेश दुनिया का एक बहुत बड़ा हिस्सा राममय होता जा रहा है। जैसे-जैसे 22 जनवरी 2024 को अयोध्या में श्रीराम मंदिर के भव्य उद्घाटन का समय नजदीक आ रहा है, अनेक जमातों के कई उपद्रवियों ने मुसलमानों से अनुचित अपील की है, उनसे घर के अंदर रहने और ट्रेन यात्रा से बचने का आग्रह किया है। ऐसी कार्रवाइयों के बावजूद, यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि ये गुमराह अपीलें देश की एकजुट भावना को प्रतिबिंबित नहीं करती हैं, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट के फैसले को पूरे देश के लोगों ने शांतिपूर्ण ढंग से स्वीकार कर लिया है। देश एकजुट है और कुछ शरारती तत्वों की राजनीतिक चालें सद्भाव और स्वीकार्यता के समग्र परिवेश पर भारी नहीं पड़नी चाहिए। आगामी 22 जनवरी को अयोध्या में राम मंदिर उद्घाटन में वैश्विक स्तर पर 7,000 से अधिक अतिथियों के आने का अनुमान है, कम से कम एक महीने तक 3-5 लाख दैनिक आगंतुकों की उम्मीद है। तीर्थयात्रियों की यह वृद्धि विभिन्न व्यवसायों के लिए आकर्षक अवसर उपलब्ध करवाती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी उक्त तिथि को दोपहर 12:15 बजे के आसपास अनुष्ठान करेंगे और 2.77 एकड़ में फैले नागर शैली के मंदिर में गुलाबी बलुआ पत्थर का निर्माण और भगवान राम का प्रतिनिधित्व करनेवाला एक उल्लेखनीय शालिग्राम पत्थर है। तीन मंजिल की संरचना में भगवान राम और हनुमान के लिए समर्पित स्थान, एक संग्रहालय, एक यज्ञशाला, एक सामुदायिक रसोई और एक चिकित्सा सुविधा शामिल है, जो 67 एकड़ में फैली हुई है। मंदिर के इतिहास में 16वीं शताब्दी में बाबर द्वारा इसका विध्वंस, उसके बाद मस्जिद निर्माण और 1992 में विध्वंस, भारत सरकार द्वारा गठित श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की देखरेख में राम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण के पक्ष में अयोध्या विवाद का निपटारा शामिल है। विचारणीय है कि पिछले 495 वर्षों से चला आ रहा अयोध्या श्री राम जन्मभूमि विवाद सन् 1528 ई. में भगवान् श्री राम की जन्मभूमि माने जानेवाले स्थान पर एक मस्जिद के विवादित निर्माण के साथ उत्पन्न हुआ था। इससे सांप्रदायिक तनाव बढ़ गया, जिसके अंग्रेजों को सन् 1859 ई. में बाड़ लगाने के लिए मजबूर होना पड़ा, जिससे हिंदुओं और मुसलमानों दोनों के लिए सीमित पहुंच प्रदान की गई। सन् 1949 ई. में विवाद तब और बढ़ गया, जब मस्जिद के अंदर मूर्तियाँ पाई गईं, जिसके बाद कानूनी लड़ाई आरंभ हुई और अंततः सन् 2019 ई. में सुप्रीम कोर्ट के फैसले में हिंदुओं को 2.77 एकड़ जमीन आवंटित की गई। 6 दिसंबर 1992 ई. की विवादास्पद घटनाओं में विवादित ढाँचे का विध्वंस हुआ, जिससे बड़े पैमाने पर सांप्रदायिक दंगे भड़क उठे। सन् 2010 ई. में, इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने विवादित भूमि को सुन्नी वक्फ बोर्ड, श्री रामलला विराजमान और निर्मोही अखाड़े के बीच विभाजित कर उन्हें आवंटित कर दिया। सुप्रीम कोर्ट ने सन् 2011 ई. में इस फैसले पर रोक लगा दी, सन् 2017 ई. में अदालत के बाहर समाधान का आग्रह किया। हालाँकि , कोई समाधान नहीं होने पर, अदालत ने सन् 2019 में दैनिक सुनवाई शुरू की, जिसका समापन 9 नवंबर, 2019 को राम जन्मभूमि के पक्ष में एक ऐतिहासिक फैसले में हुआ। सन् 2020 में 28 वर्षों के बाद, मूर्तियों को स्थानांतरित किया गया और 5 अगस्त को निर्माण शुरू हुआ। अंततः, 22 जनवरी, 2024 को रामलला के भव्य मंदिर की प्रतिष्ठा, भारत के इतिहास में इस लंबे और विवादास्पद अध्याय के निर्णायक समापन का प्रतीक है। देश में सर्वोच्च न्यायिक प्राधिकारी के रूप में सर्वोच्च न्यायालय की भूमिका उसके निर्णयों की व्यापक स्वीकृति की माँग करती है, भले ही वे किसी विशिष्ट धार्मिक समुदाय के पक्ष में हों, चाहे वह हिंदू हों या मुस्लिम। हिंदू समुदाय के पक्ष में राम मंदिर के फैसले के मामले में, हर किसी के लिए फैसले को सम्मान के साथ स्वीकार करना महत्वपूर्ण है, यह समझते हुए कि सुप्रीम कोर्ट का फैसला हमारी कानूनी प्रणाली में अंतिम निर्णय है। इस नजरिए से संभावित दंगों की निराधार अफवाहों को स्पष्ट रूप से खारिज किया जाना चाहिए, क्योंकि शांतिपूर्ण माहौल को बढ़ावा देना सर्वोपरि है। यहाँ यह जानना और पहचानना अनिवार्य है कि यदि निर्णय मुस्लिम समुदाय के पक्ष में होता, तो वही सम्मान और स्वीकृति आवश्यक होती। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में न्यायपालिका की पवित्रता को क़ायम रखना सामाजिक सद्भाव के लिए आवश्यक है। व्यक्तिगत संबद्धताओं की परवाह किए बिना एकता पर जोर देना, न्याय के सिद्धांतों और कानून के शासन के प्रति सामूहिक प्रतिबद्धता सुनिश्चित करता है, जिससे देश के लोकतांत्रिक ताने-बाने को मजबूती मिलती है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ ने %दीपोत्सव% नामक एक हृदयस्पर्शी एवं समावेशी पहल की है, जो 22 जनवरी को अयोध्या में राम मंदिर के अंदर भगवान् राम की मूर्ति के प्राण प्रतिष्ठा समारोह से पहले देशभर में 1,200 दरगाहों और मस्जिदों को मिट्टी के दीयों से रोशन करने की योजना बना रही है। 12 से 22 जनवरी तक निर्धारित यह कार्यक्रम एकता और समावेशी समाज के लिए एक सुंदर भाव का प्रतीक है। भाजपा अल्पसंख्यक विंग के संयोजक यासर जिलानी ने साझा किया, ÷हमने देश भर में 1,200 छोटी/बड़ी मस्जिदों, दरगाहों और अन्य मुस्लिम धार्मिक स्थानों की पहचान की है, जहां हम दीये जलाएंगे।÷ अकेले दिल्ली में, जामा मस्जिद और निज़ामुद्दीन दरगाह सहित 36 महत्वपूर्ण

स्थानों से संबद्ध लोग भाग लेंगे। 30 दिसंबर को अपनी अयोध्या यात्रा के दौरान, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने 22 जनवरी को दीये जलाने का आह्वान किया, जिससे इसे देशव्यापी दिवाली उत्सव में बदल दिया गया। उन्होंने 14 से 22 जनवरी तक तीर्थ स्थलों और मंदिरों में स्वच्छता अभियान को प्रोत्साहित किया। सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने के उद्देश्य से यह विचारशील पहल, विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और जातीयताओं के लोगों को एक साथ लाने की भाजपा की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। जैसे ही भगवान राम का %प्राण प्रतिष्ठा% समारोह शुरू होता है, जो एक महत्वपूर्ण घटना है, राष्ट्र सामूहिक रूप से एकता, भाईचारे और सद्भाव की भावना का जश्न मनाता है। सभी धर्मों को स्वीकार करने और उनका सम्मान करने में, हम भारत के सच्चे लोकाचार को अपनाते हैं, जो उन मूल्यों का प्रतीक है जो हम सभी को एकजुट करते हैं। अब, जबकि अधिकांश आम लोगों ने सुप्रीम कोर्ट के हाल के फैसले को बिना किसी विवाद के स्वीकार कर लिया है, तब कुछ समूहों, विशेष रूप से जमातियों की ओर से चिंताएं उत्पन्न हो रही हैं, जो झूठी कहानी और अफवाह फैलाने में लगे हुए हैं। इन समूहों का दावा है कि फैसला मुसलमानों के पक्ष में नहीं था और संभावित दंगों की आशंका जताई जा रही है। यह आख्यान एक रणनीतिक राजनीतिक कदम प्रतीत होता है, जो अपने एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए पीड़ित कार्ड खेल रहा है। यहां यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि वर्तमान सरकार ने देश भर में शांति बनाए रखने और हर धर्म के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने को लगातार प्राथमिकता दी है। सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने में सरकार का ट्रैक रिकॉर्ड विविध समुदायों के बीच समझ को बढ़ावा देने की उसकी प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। जनता के लिए धार्मिक संबद्धताओं के बावजूद शांति और सद्भाव बनाए रखने के लिए समर्पित सरकार के निराधार दावों और वास्तविक प्रयासों के बीच अंतर करना महत्वपूर्ण है। खुली बातचीत और समझ को प्रोत्साहित करने से निराधार भय को दूर करने और एकजुट और समावेशी समाज को बढ़ावा देने में सहायता मिल सकती है। 22 जनवरी, 2024 को अयोध्या में राम मंदिर अभिषेक समारोह से पहले शांतिपूर्ण माहौल सुनिश्चित करने के उद्देश्य से एक रणनीतिक कदम में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कथित तौर पर अपने कैबिनेट सहयोगियों को संयम बरतने और आक्रामकता से बचने का निर्देश दिया है। ये सख्त निर्देश सोमवार को केंद्रीय कैबिनेट की बैठक के दौरान जारी किए गए। प्रधानमंत्री ने तनाव भड़कानेवाले अनुचित बयान देने से बचने के महत्व पर जोर दिया। यह निर्देश शांति और सद्भाव बनाए रखने की एक व्यापक रणनीति का हिस्सा है, जो ऐतिहासिक घटना के आसपास शांतिपूर्ण माहौल के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। साथ ही, मंत्रियों को अपने निर्वाचन क्षेत्रों में शांति बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने और समारोह के बाद अपने संबंधित क्षेत्रों से स्थानीय लोगों की अयोध्या यात्रा को सुविधाजनक बनाने का निर्देश दिया गया। यह दृष्टिकोण न केवल तात्कालिक स्थिति को प्रबंधित करने के लिए बल्कि इस महत्वपूर्ण घटना के बाद एक निरंतर और बहुत आवश्यक शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व में योगदान करने के लिए एक ठोस प्रयास को दर्शाता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा उद्घाटन किए जानेवाले राम मंदिर अभिषेक समारोह में श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट द्वारा 7,000 आमंत्रित लोगों में से प्रमुख और प्रसिद्ध हस्तियों का आतिथ्य सत्कार किया जाएगा। यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जैसे नेताओं के इस कार्यक्रम को संबोधित करने की उम्मीद है, जिसका भारत और विदेशों में सीधा प्रसारण किया जाएगा। यह सभा एक महत्वपूर्ण और समावेशी अवसर को दर्शाती है, जो राम मंदिर के ऐतिहासिक उद्घाटन का गवाह बनने के लिए विभिन्न क्षेत्रों का ध्यान आकर्षित करती है। ऐतिहासिक राम मंदिर प्रतिष्ठा समारोह के बीच, हिंदू समुदाय के सदस्यों के लिए जिम्मेदारी निभाना और सांप्रदायिक सद्भाव के मूल्यों को बनाए रखना अनिवार्य है। अपनी आस्था और लंबे समय से चली आ रही आकांक्षा की परिणति का जश्न मनाते हुए, हिंदुओं के लिए अपने मुस्लिम भाइयों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील रहना महत्वपूर्ण है। राम मंदिर देखने में काफी भव्य लग रहा है। इस दृष्टि से विविधता का सम्मान और एकता को बढ़ावा देना सर्वोपरि होना चाहिए। इस महत्वपूर्ण अवसर पर, हिंदू समुदाय के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे ऐसे किसी भी कार्य से बचें, जो उनके मुस्लिम समकक्षों की भावनाओं को ठेस पहुँचा सकता है। यह आपसी सम्मान और समझ के महत्व को पहचानते हुए जिम्मेदार नागरिक के रूप में कार्य करने का आह्वान है। किसी भी उत्तेजक आख्यान में पड़ने या विभाजनकारी एजेंडे के आगे झुकने से बचना चाहिए, क्योंकि किसी राष्ट्र की ताकत विविधता के बीच उसकी एकता में निहित है। इन सिद्धांतों को बरकरार रखते हुए, हिंदू समुदाय न केवल राम मंदिर समारोह की सफलता में योगदान देता है, बल्कि एक समावेशी और सामंजस्यपूर्ण समाज की व्यापक दृष्टि में भी योगदान देता है, जो अपने सभी नागरिकों की मान्यताओं और भावनाओं का सम्मान करता है। यह जिम्मेदार दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करता है कि ऐतिहासिक घटना विभाजन के स्रोत के बजाय एकता का प्रतीक बन जाए। सभी धर्मों का सम्मान किया जाना चाहिए,÷ कई उर्दू कवियों ने विभिन्न समुदायों के बीच सहिष्णुता, एकता और सद्भाव का संदेश दिया है। अल्लामा इकबाल और फैज़ अहमद फैज़ जैसे कवियों ने अक्सर सह-अस्तित्व और पारस्परिक सम्मान के महत्व पर जोर दिया। उनकी कविता धार्मिकता से परे एकता के विषयों को पेश करती है। सीमाएं, विविधता को अपनाने के विचार को बढ़ावा दे रही हैं। हालाँकि सटीक वाक्यांश को सीधे तौर पर किसी एक कवि के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है, लेकिन सभी धर्मों का सम्मान करने की व्यापक भावना कई उर्दू साहित्यकारों की भावना में समाहित है, जो सांप्रदायिक सद्भाव और समझ की पैरोकारी करती है। अल्लामा इकबाल, एक प्रसिद्ध उर्दू कवि और दार्शनिक, ने अपनी काव्यात्मक अभिव्यक्तियों में धार्मिक सीमाओं को पार किया और इस्लामी परंपरा से परे की शख्सियतों की वाक्पटुता से प्रशंसा की। एक उल्लेखनीय उदाहरण में, इकबाल ने भगवान् राम का सम्मान करते हुए उन्हें ÷इमाम-ए-हिंद÷ या भारत के आध्यात्मिक नेता के रूप में संदर्भित किया। यह उपाधि इकबाल की भारत की विविध विरासत में निहित सांस्कृतिक और आध्यात्मिक समृद्धि की पहचान को दर्शाती है। ऐसी काव्यात्मक अभिव्यक्तियों के माध्यम से, इकबाल ने एकता और साझा आध्यात्मिक मूल्यों पर जोर देने की कोशिश की, सामूहिक पहचान की भावना को प्रोत्साहित किया जो व्यक्तिगत धार्मिक संबद्धताओं से परे है।

नगर की कमान संभालने में असमर्थ अधिशाषी अधिकारी

द अचीवर टाइम्स- नीरज शुक्ला

रामनगर बाराबंकी। नगर पंचायत रामनगर में अधिशाषी अधिकारी के पद पर तैनात विनय शंकर अवस्थी नगर की कमान संभालने में अस्मर्थ दिखाई पड़ रहे है। नगर के मोहल्ला रानी-2 में पीजी कॉलेज के बगल बने सामुदायिक शौचालय से भ्रष्टाचार की बू आ रही है। नाम न छापने की शर्त पर कुछ नगर वासियों ने बताया कि इस शौचालय का निर्माण लगभग चार वर्ष पहले अधिशाषी अधिकारी रहे मनीष राय के समय हुआ था और जब से विनय शंकर अवस्थी आये है तब से लेकर आज तक साफ सफाई नही कराई गई है। केयर टेकर तो नियुक्त है लेकिन कभी साफ सफाई के लिए नही आता है। शौचालय के अंदर पानी, विजली की व्यवस्था ध्वस्त हो गयी है। गंदगी भरमार है। हा लेकिन ये बात और है कि अधिशाषी अधिकारी को पूरा मामला पता होने के बावजूद भी इस समस्या को नजरअंदाज करते आ रहे है। कई बार इस विषय को लेकर मोहल्ला वासियों ने नगर कार्यालय के बाबू रामकरन से मामला अवगत कराया व कई समाचार पत्रों में खबर भी प्रकाशित हुई थी लेकिन आज तक सहित गंदा पानी निकल रहा है,पीजी कालेज के सामने बने हनुमान जी के मंदिर पर लगा हैंडपम्प से बालू सहित गन्दा पानी निकाल रहा है। नगर में और भी कई ऐसे नल है जिनकी मरम्मत होनी है। बार-बार इसकी शिकायत नगर के बाबू रामकरन व अधिशाषी अधिकारी से करने के बावजूद भी इस पर ध्यान नही दे रहे है।

बताते चले कि इस समय पड़ रही भीषण ठंड में अलाव की व्यवस्था को लेकर सिर्फ औपचारिकता पूर्ण की जा रही है। नगर के कर्मचारी सिर्फ दो से पांच किलो लकड़ी जलाकर चले जाते है फिर दूसरे दिन आते है और तो और कभी कभी गीली किस्म की लकड़ी भी कोई कार्रवाई नही हुई है। समय पर हैंडपम्प की देखभाल न होने की वजह से नगर के मोहल्ला लखरौरा में देवेंद्र तिवारी घर के सामने लगे इण्डिया मार्का हैंडपंप में से बालू जलाकर चले जाते है। नगर की व्यवस्था चुस्त दुरुस्त न होने की वजह से नगर की जनता विनय शंकर अवस्थी के नाखुश दिखाई पड़ रही है।

निबंध प्रतियोगिता में अनुष्का ने बाजी मारी

हरदोई। राष्ट्रीय युवा सप्ताह पर बुधवार को शांति दिवस पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में अनुष्का कश्यप, प्रिंस शर्मा और सुदीप्त प्रजापति क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय रहे। स्वामी विवेकानंद की जयंती पर मनाए जा रहे राष्ट्रीय युवा सप्ताह में अब्दुला नगर के संजय गांधी मेमोरियल इंटर कॉलेज में हुई निबंध प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक अनुराग आर्य ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कहा कि स्वामी जी के जीवनदर्शन से विद्यार्थियों को सीख लेना चाहिए। स्वामी जी ने युवाओं को शिक्षा दी है कि लक्ष्य हासिल होने तक प्रयास जारी रखना चाहिए। जिला युवा अधिकारी प्रतिमा वर्मा ने बताया कि शांति दिवस पर निबंध प्रतियोगिता में विजेता प्रतिभागियों के साथ ही राममोहन और सलोनी मिश्रा को सांत्वना पुरस्कार मिला। निर्णायक की भूमिका अगम प्रकाश त्रिवेदी और धर्मेंद्र कुमार त्रिवेदी ने निभाइ। बच्चों को निर्णायकों ने ही पुरस्कृत किया।

कलेक्टर श्री प्रसाद ने 22 जनवरी को किया शुष्क दिवस घोषित

❖ प्रभु श्रीरामलला के अयोध्या में होने वाले प्राण -प्रतिष्ठा समारोह पर जिले भर में होने वाले आयोजनों के मद्देनजर कलेक्टर ने जारी किया आदेश।

❖ 21 जनवरी की रात्रि 11.30 बजे से 23 जनवरी की सुबह 8.30 बजे तक प्रभावी रहेगा शुष्क दिवस आदेश।

द,अचीवर टाइम्स पप्पू उपाध्याय

मध्य प्रदेश। मध्य प्रदेश मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा 22 जनवरी को अयोध्या में श्रीराम मंदिर के गर्भ गृह में भगवान श्रीराम की प्राण -प्रतिष्ठा कार्यक्रम को ध्यान में रखते हुए प्रदेश में इस दिन शुष्क दिवस घोषित करने के दिए निर्देश के परिपालन में कटनी कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी अवि प्रसाद ने आज बुधवार को एक आदेश जारी कर संपूर्ण जिले में 22 जनवरी को शुष्क दिवस घोषित कर दिया है। इस दिन जिले में भांग, शराब एवं सभी प्रकार के मादक पदार्थो की दुकानें बंद रहेगी। 22 जनवरी को कटनी जिले सहित प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर बड़े कार्यक्रमों, समारोहों का आयोजन, जुलूस, प्रभात फेरी आदि निकलना है। इसके मद्देनजर कलेक्टर श्री प्रसाद ने 22 जनवरी को शुष्क दिवस घोषित कर दिया है। शुष्क दिवस अवधि में जिले की समस्त भांग एवं भांग घोंटा, कम्पोजिट मदिरा दुकानें, एफ0एल0-2, एफ0एल0-3, एफ0एल0-4 एवं वाईन शॉप (अम्वी वाईन आउटलेट) लायसेंस के अंतर्गत मदिरा का क्रय, विक्रय, परिवहन पूर्णतः प्रतिबंधित रहेगा। समस्त लायसेंस परिसरों को दिनांक 21 जनवरी की रात्रि 11.30 बजे से 23 जनवरी को प्रातः 8.30 बजे तक बंद रखा जाना आदेशित किया जाता है। कलेक्टर इस आदेश का कड़ाई से पालन सुनिश्चित किए जाने के निर्देश दिए हैं।

एक नज़र

बेटा पिंड दान करे तो सात पीढ़ियां, नाती पिंडदान करे तो इक्कीस पीढ़ियां मोक्ष प्राप्त करती है: श्री आत्मनंद सरस्वती जी

द अचीवर टाइम्स मुकेश राजपूत

सरोसी उन्नाव। विकास खंड सिकंदरपुर सरोसी के सुतियातारा चौराहा के पास श्री राम जन्मभूमि प्राण प्रतिष्ठा समारोह के अवसर पर ग्राम हाफिजाबाद निकट पांडे पेट्रोल पंप के सामने पाण्डेय गेस्ट हाउस में रामकथा के दूसरे दिन श्री अनंत श्री विभूति कनिष्ठ जगतगुरू शंकराचार्य स्वामी(श्री आत्मानंद सरस्वती जी) ने बताया कि जो बेटा पिंडदान करता है उसकी सात पीढियां मोक्ष प्राप्त करती है और बेटे का बेटा पिंडदान करता है तो उसकी 21 पीढियां मोक्ष प्राप्त करती है। आने वाले समय में हिंदू को 4 बच्चे पैदा करने चाहिए नही तो आने वाले समय में चाचा मौसी और बुआ के रिश्ते समाप्त हो रहे। कथा आयोजक. कमलेश पाण्डेय , राहुल पाण्डेय सुधांशु पाण्डेय , मनीष पाण्डेय, सहयोगी - शुभम त्रिपाठी , शिवम मिश्रा , रामांश बाजपेई ,अभिषेक त्रिपाठी, अधिकार त्रिपाठी, शुभम त्रिवेदी ,मोनू तिवारी, पार्थ त्रिपाठी अरुण कुमार सहित हजारों भक्त मौजूद रहें।

क्रिकेट प्रतियोगिता मे पुरवा एलेवन ने देवमई एलेवन टीम को अलाउट कर छः विकेट से जीता

द अचीवर टाइम्स मुकेश राजपूत

उन्नाव। पुरवा द्विपक्षीय क्रिकेट प्रतियोगिता में पुरवा एलेवन ने देवमई एलेवन को कांटे के मुकाबले में 2-0 से पराजित किया। दोनों टीमों के खिलाड़ियों ने परिचय प्राप्त करते हुए खेल भावना से क्रिकेट खेला। स्थानीय विकास खण्ड के तुसरौर स्थित क्रिकेट मैदान में पुरवा एलेवन के कप्तान एडवोकेट रत्नम चौरसिया ने टास जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला लिया। पहले बल्लेबाजी करते हुए पुरवा एलेवन आठ ओवर में 5 विकेट खोकर 52 रन ही बना सकी। जबकि जवाब खेलने उतरी देवमई एलेवन ने लगातार विकेट गंवाते हुए मात्र 48 रनों पर ही सभी विकेट गंवा दिए। इस तरह से पहला मुकाबला पुरवा एलेवन ने रोमांचक तरीके से चार रनों से जीत लिया। पुरवा एलेवन की ओर से शिवा, शुभम चौरसिया, ऋषिराज द्विवेदी, चंदन द्विवेदी ने अच्छी बल्लेबाजी की जबकि गेंदबाजी में कप्तान रत्नम चौरसिया, आवेश अवस्थी, शिवा, पारस बाजपेई ने बेहतरीन गेंदबाजी करके मुकाबले को अपने पक्ष में कर लिया। विकेटकीपर के रूप में शिवम चौत्रऋषि ने अच्छा प्रदर्शन किया। वहीं दूसरे मुकाबले में भी पुरवा एलेवन के कप्तान रत्नम ने टास जीतकर पहले देवमई एलेवन के कप्तान रामबाबू को बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किया। आठ ओवर के मुकाबले में देवमई एलेवन के बल्लेबाजों में नीरज, संदीप, साहिल, पुष्पेंद्र, रामबाबू आदि ने पुरवा एलेवन की कसी हुई गेंदबाजी के सामने बल्लेबाजी करते हुए मात्र 42 रन ही जोड़ पाए। जवाब में बल्लेबाजी करने उतरे पुरवा एलेवन के शिवा, ऋषिराज, चंदन द्विवेदी, शिवम चौत्रऋषि एवं शुभम चौरसिया ने सात ओवर में ही मैच छः विकेट से जीतकर श्रृंखला को 2-0 से अपने नाम किया। शिवम चौत्रऋषि व चंदन नाबाद रहते हुए अपनी टीम को जीत दिला दी।पहले मैच में शिवा मैन ऑफ द मैच रहे जबकि दूसरे मैच में रत्नम चौरसिया को मैन ऑफ द मैच दिया गया है। आपको बता दें कि पुरवा एलेवन की ओर से कई वरिष्ठ खिलाड़ियों ने अच्छे खेल का प्रदर्शन किया।

अज्ञात हमलावरों ने युवक को मारी गोली,मौत

द अचीवर टाइम्स निर्मल सैनी

लखनऊ। लखनऊ कमिश्नरेट के माल थाना क्षेत्र के अंतर्गत थावर गांव में मिठाई दुकानदार को अज्ञात हमलावरों ने गोली मारकर मौत के घाट उतार दिया। मौके पर पहुची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर छानबीन कर रही है। मिली जानकारी अनुसार दुबग्गा थाना क्षेत्र के लीला खेड़ा निवासी अरुण यादव थावर गांव में मिठाई व समोसे आदि की दुकान चलाते है। मृतक रुकने के लिये रोज रात को बगल के गांव सेमसी में अपने मौसा रामकुमार के यहां चले जाते थे।रात लगभग साढ़े आठ बजे अज्ञात हमलावरों ने दुकान पर बैठे अरुण यादव को गोली मार कर फरार हो गये। फायर की आवाज सुन आसपास के लोग इकट्ठा होते तब तक हमलावर फरार हो गये। अरुण यादव की मौके पर ही मौत हो गई। घटना की सूचना मिलते ही प्रभारी निरीक्षक राजेश त्रिपाठी व एसीपी वीरेंद्र विक्रम दल बल के साथ मौके पर पहुच कर जांच शुरू कर दी ।

यातायात हाईवे सुरक्षा चौकी जुहला बाईपास कटनी में सड़क सुरक्षा सप्ताह के अन्तर्गत ग्रामीणों के लिए लगाया गया लर्निंग ड्राइविंग लाइसेंस शिविर

द, अचीवर टाइम्स पप्पू उपाध्याय

कटनी। ग्रामीण क्षेत्र में जागरूकता की कमी आरटीओ से दूरी एवं समय की कमी के चलते अधिकतर ग्रामीण जनता ड्राइविंग लाइसेंस एवं वाहनों के अन्य दस्तावेज नहीं बनवा पाती है। इन्हीं समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए पुलिस अधीक्षक कटनी अभिजीत कुमार रंजन के निर्देशन में यातायात हाईवे सुरक्षा चौकी जुहला बाईपास प्रभारी सूबेदार मोनिका खड़से एवं चौकी के स्टाफ द्वारा सड़क सुरक्षा पखवाड़े के अंतिम दिन ग्राम पौड़ी में एक दिवसीय लर्निंग ड्राइविंग लाइसेंस शिविर का आयोजन कराया गया यह शिविर प्रातः 11ः00 बजे से सांय 19ः00 बजे तक चला जिसमें जुहला, जुहली,द, अचीवर टाइम्स से पप्पू उपाध्याय सुर्खी, पोडी, देवरा खुर्द, खिरवा, सरस्वाही, पड़रिया, मझगवा, बसाडी, सुड्डी से ग्रामवासी लाइसेंस बनवाने पहुंचे। शिविर में पुलिस अधीक्षक ने ग्रामवासियों से अब तक लाइसेंस न बनवाने की वजह पूछी जिस पर लोगों ने बताया कि ड्राइविंग लाइसेंस बनाने में अनेक समस्याएं हैं जिनमे प्रमुखतः समय की कमी के कारण और शहर से दूर होने के कारण वे अभी तक लाइसेंस नहीं बनवा पाए। शिविर में पुलिस अधीक्षक द्वारा उपस्थित सभी लोगो को यातायात नियमों का पालन करने हेतु शपथ दिलाई गयी साथ ही हाईवे सुरक्षा चौकी के स्टाफ द्वारा एक डेमो के माध्यम से जनता को बताया गया कि वाहन के साथ घर से निकलने से पहले कौन-कौन से दस्तावेज साथ में रखने हैं एवं वाहन का परीक्षण किस प्रकार करना है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कटनी मनोज केडिया एवं ऋषभ से मार्गदर्शन प्राप्त कर लाइसेंस बनाने हेतु आवेदकों का %लर्निंग लाइसेंस टेस्ट% कराया गया जिसमें पास होने पर 59 लोगों ने लर्निंग ड्राइविंग लाइसेंस प्राप्त किया जिसमें 11 महिलाएं भी सम्मिलित हैं। महिलाओं का लर्निंग ड्राइविंग लाइसेंस निशुल्क बनाया गया, पुरुष आवेदको ने शासन द्वारा निर्धारित शुल्क जमा करके लर्निंग लाइसेंस प्राप्त किया। इस शिविर में नगर पुलिस अधीक्षक कटनी, ख्याति मिश्रा , उप पुलिस अधीक्षक मुख्यालय श्री उमराव सिंह, थाना प्रभारी एनकेजे उनि नीरज दुबे, सरपंच मड़ई पंचायत कल्पना सिंह, एडवोकेट विजय सिंह बघेल , उप सरपंच सविता सोनू कोल, आरक्षक दीपक चक्रवर्ती, डूमन दास, अंकित आर्मो उपस्थित रहे।

जानकीपुरम विस्तार में भारत माता की प्रतिमा का अनावरण

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। जानकीपुरम विस्तार सेक्टर पांच स्थित पार्क में आज भारत माता की प्रतिमा का अनावरण भारत माता समिति के अध्यक्ष डॉ मनीष महर्षि द्वारा किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि सेवा निवृत्त जज सी .बी.आई. शिवपाल सिंह थे, भारत माता समिति के संरक्षक जी सी शुक्ला, सुशील श्रीवास्तव, प्रेम शंकर त्रिपाठी, अखिलेश मिश्रा, सनातन जी आचार्य अर्पित, प्रणव मिश्रा, जनविकास महासभा के अध्यक्ष पंकज कुमार तिवारी, प्रदीप नागर, उमेश गुप्ता, अजय सिंह, रेनू सिंह, पिंकी शुक्ला, सीमा मिश्रा, गुप्ता जी अंकित तिवारी उपस्थित रहे। भारत माता की प्रतिमा का अनावरण होने के बाद जुलूस के रूप में मौजूद लोग अटल चौराहे पहुंचे जहां उनके भारत माता के जयकारों से क्षेत्र गूंज उठा। इस मौके पर संरक्षक जीसी शुक्ल ने कार्यक्रम में शामिल लोगों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि भारत माता समिति राष्ट्रवाद से जुड़े कार्यक्रमो को करेगी ताकि लोगों में भारत माता के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ सके।

साइबर सेल ने वापस करवाए 33 हजार 558 रुपए,बाराबंकी पुलिस का किया आभार प्रकट

द अचीवर टाइम्स अखिलेश दास

बाराबंकी। जिले की साइबर सेल टीम ने बुधवार को एक बैंक खाता धारक के क्रेडिट कार्ड के माध्यम से निकाले गए 33 हजार 558 रुपए की राशि को सकुशल वापस करा दिया। जिसके संबंध में बीती 15 तारीख को आईजीआरएस के माध्यम से एक शिकायती पत्र अनिल कुमार तिवारी पुत्र सत्ती प्रसाद तिवारी निवासी 10 बटालियन पीएसी मसौली ने दिया था। क्रेडिट कार्ड के माध्यम से निकाली गई राशि को पुन वापस पाकर अनिल व उनके परिजनों ने साइबर सेल टीम सहित बाराबंकी पुलिस का आभार प्रकट किया है। इस पुलिस टीम में प्रभारी साइबर सेल निरीक्षक विजय सिंह सिरोही, उप निरीक्षक चंद्र प्रकाश यादव, मुख्य आरक्षी राजन यादव, आरक्षी अभिषेक चपराणा, गौरव त्रिपाठी व सुधाकर भदोरिया शामिल रहे।

जीएसके का नया कैंपेन सात वैक्सीनेशन के साथ सेवन स्टार प्रोटेक्शन देने के लिए करेगा प्रोत्साहित

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। ग्लैक्सोस्मिथक्लाइन फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड (जीएसके) ने आज 1 से 2 साल की उम्र के शिशुओं को कई प्रकार की गंभीर बीमारियों के संक्रमण से सुरक्षा प्रदान करने वाले विभिन्न टीकाकरण के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए मल्टी-चैनल कैंपेन लॉन्च किया। इंडियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स इस उम्र के बच्चों को 7 टीके लगवाने का सुझाव देता है। इनमें चिकनपॉक्स और हेपेटाइटिस ए की पहली डोज, मेनिंजाइटिस व एमएमआर की दूसरी डोज, पीसीवी एवं डीटीपी एचआईबी आईपीवी की बूस्टर डोज और फ्लू की वार्षिक डोज शामिल हैं। वैसे तो भारत में पहले साल लगने वाले टीके की कवरेज बहुत अच्छी है, लेकिन दूसरे साल में ड्रॉप आउट बढ़ जाता है। देश में बड़ी संख्या में बच्चों का आंशिक रूप से ही टीकाकरण हुआ है। ग्लैक्सोस्मिथक्लाइन फार्मास्युटिकल्स, इंडिया की एक्जीक्यूटिव वाइस प्रेसिडेंट मेडिकल अफेयर्स डॉ. रश्मि हेगड़े ने कहा पिछले तीन वर्षों में देश में चिकनपॉक्स, मीजल्स और फ्लू जैसी कुछ ऐसी बीमारियों के संक्रमण के मामले सामने आए हैं जिनसे टीकाकरण की मदद से बचाव संभव है। वैक्सीन से बचाव वाली बीमारियां मात्र शॉर्ट टर्म में ही बच्चों के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव नहीं डालती हैं बल्कि इनसे बच्चों के संपूर्ण विकास पर लंबी अवधि में भी व्यापक दुष्प्रभाव पड़ता है टीकाकरण के पूरे शेड्यूल का पालन करने से स्वस्थ एवं प्रसन्न बचपन सुनिश्चित होता है इससे यह भी सुनिश्चित होता है कि बच्चे स्वस्थ वयस्क के रूप में बड़े हों। इस कैंपेन के माध्यम से हम माता-पिता से कहना चाहते हैं कि अपने बच्चों के दूसरे वर्ष में भी उनके लिए तय किए गए टीके उन्हें अवश्य लगवाएं। जीएसके का कैंपेन माता-पिता को दूसरे वर्ष में भी टीकाकरण के शेड्यूल का पूरी तरह पालन करने के लिए प्रेरित करेगा, जिससे इस तरह की बीमारियों से उनके बच्चों की लगातार सुरक्षा सुनिश्चित हो। आंशिक टीकाकरण बच्चों को संक्रामक बीमारियों के कारण गंभीर परेशानियों के खतरे में डाल सकता है। जिन बच्चों का आंशिक रूप से टीकाकरण हुआ है, वो परिवार में टीकाकरण न करवाए हुए अन्य छोटे बच्चों या बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील बुजुर्ग दादा-दादी के भी संक्रमण का शिकार होने का कारण बन सकते हैं। जीएसके ने टेलीविजन, सोशल मीडिया और देशभर में पीडियाट्रिशियंस के क्लीनिक्स में पोस्टर समेत कई चौनल्स के माध्यम से इस कैंपेन को लॉन्च किया है। बच्चों के लिए टीकाकरण शेड्यूल के बारे में ज्यादा जानकारी के लिए माता-पिता को पीडियाट्रिशियंस से संपर्क करना चाहिए।

अपने हाथों से घरों पर चलता हथौड़ा दिल को दे रहा चोट

द अचीवर टाइम्स अखिलेश दास

बाराबंकी। पिछले साल बाढ़ के बाद आई तबाही को देखते हुए जमुरिया नाले को अतिक्रमणमुक्त करने की योजना पर काम शुरू हो गया है। डीएम के स्तर से अवैध निर्माणों को तोड़ने का आदेश जारी किया। इसके बाद नाले के किनारे के घरों को लोग खुद तोड़ रहे हैं। कठिन परिश्रम से बने घर को तोड़ता देख लोगों की आंखों से आंसू निकल रहा है। मेहनत की पाई-पाई जोड़कर जिस आशियाने को बनाया, बीवी-बच्चों संग जिंदगी गुजारी, आज जब उसे अपने हाथों से तोड़ना पड़ा तो आंखों से आंसू झलक उठे। जमुरिया नाला की तलहटी और रेठ नदी के फ्लड एरिया के 25 मीटर दायरे में बसे परिवारों का सोमवार को कुछ ऐसा ही हाल था। दरअसल, रेठ नदी के जल प्रवाह को सामान्य करने और बाढ़ की संभावनाओं को देखते हुए फ्लड एरिया में बने निर्माणों को ध्वस्त करने का आदेश जारी हुआ था। क्षेत्र वासियों को अपने मकानों और जरूरत के सामानों को खुद हटाने के लिए दी गई मियाद सोमवार को पूरी हो चली थी। इसके साथ ही चार किलोमीटर लंबे इस नाले की दोनों पटरियों पर सालों से बसे परिवार अपने ही बनाए घरों को तोड़ने में जुटे दिखे। शहर के लखपेड़ाबाग मोहल्ले में महारानी लक्ष्मी बाई इंटर कॉलेज के आगे बसे मोहम्मद लतीफ व उनके दो भाईयों के घर बने हैं। सोमवार को ध्वस्तीकरण के डर से घर के अंदर लगे दरवाजे उखड़वाए। साथ ही सामान इकट्ठा कर रहे हैं। इन्होंने बताया कि प्रशासन के ध्वस्तीकरण से पहले स्वयं ही मकान खाली करने की तैयारी में हैं। उधर, कॉलेज के पीछे जमुरिया के निकट नीरज कुमार ने अपने प्लॉट की बाउंड्रीवाल को ध्वस्त करा दिया है।

ईंटों के ढेर से टकराया बाइक सवार, मौत

बेनीगंज। कोहरे के कारण बाइक सवार ईंटों के ढेर से टकरा गया। हादसे में बाइक सवार की मौत हो गई। बेनीगंज कोतवाली क्षेत्र के जरौआ गांव निवासी पंकज (24) लखनऊ में रेलवे कैंटीन में काम करता था। मंगलवार को वह अपने दोस्त दीपक के साथ अतरौली गया था। देर शाम वापस गांव जा रहा था। अतरौली कोथावां मार्ग पर सड़क किनारे लगी ईंटों से बाइक टकरा गई। घटना में पंकज और दीपक घायल हो गए। पुलिस ने एंबुलेंस की मदद से दोनों को कोथावां सीएचसी पहुंचाया। जहां पंकज को मृत घोषित कर दिया गया, जबकि दीपक को मेडिकल कालेज रेफर कर दिया गया। बाइक चालक हेलमेट लगाए था। बेनीगंज कोतवाल उमाकांत दीपक ने बताया कि घने कोहरे में घटना हुई है। परिजनों ने फिलहाल कोई आरोप नहीं लगाए हैं।

ओवरटेक करते समय मोटरसाइकिल हुई अनियंत्रित दो घायल

द अचीवर टाइम्स कुन्दन सिंह

हसनगंज उन्नाव। मोहान से जा रहे मोटरसाइकिल सवार युवकों ने अज्ञात वाहन को ओवरटेक करते समय मोटरसाइकिल हुई अनियंत्रित जिससे मोटरसाइकिल चालक गंभीर रूप से घायल पीछे बैठा युवक हुआ घायल घायलों को पीआरवी के जवानों ने एम्बुलेंस की मदद से समुदायिक स्वस्थ केन्द्र में कराया भर्ती शराब के नशे में मोटरसाइकिल चालक रंजीत उम्र 24 वर्ष पुत्र शिवकुमार निवासी जमालपुर व आशीष उम्र 18 वर्ष पुत्र देशराज निवासी कोरारा फरहदपुर मंडी से पांच सौ मीटर पीछे पहुंचे ही थे तभी अज्ञात वाहन को ओवरटेक करते समय मोटरसाइकिल अनियंत्रित होकर गिर गयी मोटरसाइकिल चालक के सर पर गम्भीर चोटे आई हैं जिसमें पीछे बैठा युवक भी घायल हो गया जैसे ही पीआरवी के जवानों को सूचना मिली मौके पर पहुंचे पीआरवी जवानों ने एम्बुलेंस की मदद से घायलों को सीएचसी हसनगंज लाये जहां डॉक्टरों ने हालत नाजुक देख मोटरसाइकिल चालक को जिला अस्पताल रिफर कर दिया।

स्कूलों को शुल्क प्रतिपूर्ति की धनराशि प्राप्त नहीं होती है तो सम्बन्धित विद्यालय के प्रबन्धक/प्रधानाचार्य पूर्ण रूप से होंगे उत्तरदायी, कड़ी कार्यवाही के निर्देश

संवाददाता

आगरा। खण्ड शिक्षा अधिकारी विरेन्द्र शर्मा ने नगर क्षेत्र में संचालित समस्त मान्यता प्राप्त, सी0बी0एस0ई0 एवं आई0सी0एस0ई0 विद्यालयों के प्रबन्धक/प्रधानाचार्य को अवगत कराया है कि महानिदेशक स्कूल शिक्षा एवं राज्य परियोजना निदेशक, उ0प्र. लखनऊ एवं जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी आगरा द्वारा अवगत कराया गया है कि शैक्षिक सत्र 2023-24 में निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 की धारा 12 (1) (ग) के अन्तर्गत अध्ययनरत छात्रों के शुल्क प्रतिपूर्ति हेतु वांछित बजट प्राविधान शासन द्वारा स्वीकृत किया जा चुका है तथा बजट आवंटन शीघ्र ही किये जाने की सम्भावना है, जिसके सम्बन्ध में प्रारूप-1 एवं प्रारूप-02 पर त्रुटिरहित सूचना एवं शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा अपेक्षित सूचनाओं से सम्बन्धित प्रारूप 1 से 5 संलग्न कर वांछित सूचनायें तैयार कर अपने अपने कार्यालय खण्ड शिक्षा अधिकारी कार्यालय में दिनांक 18.01.2024 तक हार्डकॉपी एवं सॉफ्ट कॉपी में नगर क्षेत्र के,कार्यालय खंड शिक्षा अधिकारी नगर क्षेत्र में प्राप्त कराने के साथ-साथ www.rtewz.upsdc.gov.in पर ई-मेल भी किया जाना सुनिश्चित करें। विद्यालय के साथ-साथ निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनिय 2009 के अन्तर्गत अध्ययनरत छात्र/छात्राओं का विवरण तथा फीस विवरण का पंजीकरण कराना सुनिश्चित करें। शुल्क प्रतिपूर्ति हेतु प्रपत्र 01 एवं 02 एवं शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा अपेक्षित सूचनाओं से सम्बन्धित प्रारूप 1 से 5 व्हाटसअप ग्रुप पर प्रेषित कर दिया गया है। साथ ही सम्बन्धित विद्यालय खंड शिक्षा अधिकारी नगर क्षेत्र आगरा कार्यालय से सम्पर्क स्थापित करते हुए भी उक्त प्रपत्र 01 एवं 02 एवं शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा अपेक्षित सूचनाओं से सम्बन्धित प्रारूप 1 से 5 को प्राप्त कर सकते है। अपेक्षित सूचनाओं से सम्बन्धित प्रारूप 1 से 5 पर सूचना हार्ड एवं साफ्ट कॉपी में खंड शिक्षा अधिकारी नगर क्षेत्र कार्यालय में प्राप्त कराने के साथ-साथ, आर0टी0ई0 की बेबसाईट www.rtewz.upsdc.gov.in पर विद्यालय, छात्र/छात्रा एवं विद्यालय की फीस का पंजीकरण निर्धारित अवधि दिनांक 18.01.2024 तक पूर्ण न करने पर विद्यालय को शुल्क प्रतिपूर्ति की धनराशि प्राप्त नहीं होती है तो उसके लिए सम्बन्धित विद्यालय के

एडीए की रिक्त जमीनों का किया स्थलीय अवलोकन, कब्जा लेते हुए बाउंड्री/फेंसिंग करने बोर्ड लगाने एवं जमीनों को लेकर प्रोजेक्ट प्लान करने के निर्देश दिए

- रमाडा कट फ्लाईओवर पर, आस-पास पॉइंट पर आकर्षक लाइटिंग करने एवं साइनेज लगाने के निर्देश।
- ताजनगरी फेस 2 में एडीए हाइट्स का किया निरीक्षण।
- बिल्डिंग व फ्लैट्स का गुणवत्ता के साथ जीर्णोद्धार का काम करने के दिये निर्देश।

संवाददाता

आगरा। मंडलायुक्त रितु माहेश्वरी ने आज विकास प्राधिकरण द्वारा कराए जा रहे विकास कार्यों का निरीक्षण किया। इस दौरान साथ में एडीए वीसी चर्चित गौड़ , सचिव गरिमा सिंह , अवर अभियंता अविन्द्र सिंह एवं अन्य अधिकारी मौजूद रहे। मंडलायुक्त द्वारा इनर रिंग रोड़ के टोल पर बनाये जा रहे यूटिलिटी सेंटर का निरीक्षण किया और निर्माण कार्य के बारे में जानकारी ली। यूटिलिटी सेंटर में एडमिनिस्ट्रेशन ब्लॉक, पार्किंग, टॉयलेट, पाथवे, सर्विस रोड़ और कियोस्क का निर्माण किया जाएगा। मंडलायुक्त ने कियोस्क के साइज बढ़ाने एवं ले आउट को रिडिजायन करने के निर्देश दिए साथ ही गुणवत्ता के साथ सभी काम मार्च माह तक पूरा करने के निर्देश दिए। पास में ही एडीए द्वारा बनाये जा रहे एंट्री गेट का निरीक्षण किया। यहां कास्टिंग बिछाए जाने का काम चल रहा था। एंट्री गेट की डिजायन को देखा। इस काम को भी जल्द पूर्ण करने के निर्देश दिए। इसके बाद रमाडा फ्लाईओवर के नीचे चल रहे विकास कार्यों को देखा। यहां सड़क के दोनों ओर तीन पॉइंट पर स्कल्प्चर, ग्रीनरी और फाउंटेन लगाकर सौंदर्यीकरण का कार्य किया जाएगा। मंडलायुक्त ने तीनों पॉइंट और फ्लाईओवर पर आकर्षक लाइटें व फ़साड़ लगाने के निर्देश दिए। एक्सप्रेसवे से आगरा के प्रवेश करने वाले लोगों व पर्यटकों को ध्यान में रखते हुए एक साइनेज बोर्ड लगाने को कहा जिस पर आगरा के सभी सरंक्षित व ऐतिहासिक स्मारकों, प्रमुख स्थलों की जानकारी दिखाई दे। तत्पश्चात मंडलायुक्त महोदया ने महुआ खेड़ा, एत्मादपुर मदरा के आसपास, बरौली (दिगनेर रोड़), बरौली अहीर क्षेत्र में एडीए की जमीन का अवलोकन किया। सभी जमीनों पर कब्ज़ा लेते हुए बाउंड्रीवॉल/फेंसिंग करवाने, एडीए का बोर्ड लगाने एवं इन जमीनों को लेकर प्रोजेक्ट प्लान करने हेतु संबंधित अधिकारी को निर्देश दिए। ग्वालियर रोड़ की तरफ जाने वाले इनर रिंग रोड की सर्विस रोड़ को भी देखा। एंड पॉइंट पर साइनेज बोर्ड लगाने को कहा। इससे आगे एनएचएआई द्वारा लगभग 8 किमी लंबा कनेक्टिविटी रोड़ बनाया जा रहा है। इसके अलावा रैपुरा जाट से मंडावली तक लगभग 12.5 किमी लंबा दूसरा कनेक्टिविटी रोड़ बनाया जा रहा है। मौके पर मौजूद एनएचएआई अधिकारियों से कार्य प्रगति के बारे में पूछा। निर्धारित समय पर दोनों प्रोजेक्ट कार्य को पूरा कराने के निर्देश दिए। इसके बाद फतेहाबाद रोड पर सपा कार्यालय के सामने खाली पड़ी एडीए की जमीन को लेकर प्लान बनाने और ताजनगरी फेस 2 में ब्रजधाम कॉलोनी के अंदर जमीनों से अतिक्रमण हटाने के साथ बोर्ड लगाने के निर्देश दिए। ताजनगरी में एडीए हाइट्स का निरीक्षण किया। यहां सभी 9 टॉवर बिल्डिंग में प्राइवेट फर्म द्वारा किये जा रहे जीर्णोद्धार कार्य की प्रगति देखी। अवगत कराया गया कि अभी 2 टॉवरों पर बाहरी दीवारों और अंदर फ्लैट्स पर काम चल रहा है। लगभग 80 प्रतिशत काम हो गया है। मंडलायुक्त महोदया ने कर्मचारियों की संख्या बढ़ाकर जल्द से जल्द गुणवत्ता के साथ काम पूर्ण करने के निर्देश दिए। इस दौरान एडीए हाइट्स में रह रहे लोगों ने मंडलायुक्त से मुलाकात की और पीपीपी मोड पर संचालित क्लब हाउस की सुविधा न दिए जाने एवं गेट बंद होने की समस्या रखी

एक नज़र

प्राण प्रतिष्ठा धर्म के मुताबिक अनुकूल नहीं राम टंडन

आगरा। कांग्रेस के पूर्व शहर अध्यक्ष राम टंडन ने कहा है कि अयोध्या में होने वाले राम मंदिर उद्घाटन समारोह अनुकूल नहीं हो सकता क्योंकि धर्म आचार्यो के मुताबिकजिस मंदिर का जीवन उद्धार पूर्ण रूप से ना हो इसका उद्घाटन सनातन धर्म में नहीं हो सकता हमारे बड़े संतों द्वारा इस बात को बखूबी बताया गया है कि सनातन धर्म में आधे अधूरे किसी भी धार्मिक काम का उद्घाटन नहीं हो सकता अयोध्या मामले को पूर्ण रूप से राजनीतिक लाभ लेने की लिए धार्मिक स्थल को राजनीतिक बना दिया गया है जिसका की उद्घाटन आगामी 22 जनवरी को अयोध्या में होने जा रहा है सनातन धर्मी कोई भी इस आयोजन से संतुष्ट नहीं है संतों का कहना है कि आधे अधूरे मंदिरों का उद्घाटन सनातन धर्म में नहीं हो सकता हम सभी को खुशी है कि राम मंदिर मुद्दा जो वर्षो से भारतीय जनता पार्टी बना रही थी उसका आज अंत हो गया।

न्याय यात्रा श्री बदलेगा 2024 का लोकसभा चुनाव राम टंडन

आगरा। कांग्रेस के पूर्व शहर अध्यक्ष राम टंडन ने राहुल गांधी की न्याय यात्रा को सफल बताते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी राहुल जी की न्याय यात्रा से घबराए हुए हैं क्योंकि आने वाला वक्त कांग्रेस का है आगामी लोकसभा चुनाव में भी इस यात्रा से काफी फर्क पड़ने वाला है जनता अब जान चुकी है कि सच्चाई क्या है कांग्रेस के शासनकाल में जनता ने खुशहाल जिंदगी बिताई जबकि भाजपा शासन काल में जनता पर ही अत्याचारों की बाढ़ आ गई आगामी लोकसभा चुनाव में जनता भारतीय जनता पार्टी को सबक सिखाने का काम करेगी इंडिया गठबंधन की फुल फुल एचडी आगामी लोकसभा चुनाव में होगी आगरा शहर का हर एक कांग्रेसी लोकसभा चुनाव में तन मन धन से पार्टी के प्रत्याशी को छुड़ाने का काम करेगा नायक यात्रा पूरे हिंदुस्तान में घूम कर जनता को न्याय दिलाने का काम राहुल गांधी जी करेंगे राहुल गांधी जी के अलावा कोई अन्य नेता इस तरह की यात्रा नहीं कर रहा जनता का दर्द सिर्फ और सिर्फ कांग्रेस ही समझ सकती है।

हाड़ कंपा देने वाली ठंड से ठिठुर रहे पश्चिमी यूपी के लोग, 10 साल में सबसे सर्द रहा दिन, पारा 3.8

मेरठ। कोहरे की मोटी चादर ने शहर को अपने आगोश में ले लिया है। कड़ाके की ठंड के बीच दिन और रात गुजर रहे है। सर्दी में हीटर और ब्लोवर भी फेल हो गए हैं। गर्म कपड़ों में भी सर्दी से राहत नहीं मिल रही है। मंगलवार का दिन पिछले 10 सालों में सबसे सर्द रहा है। पारा गिरता हुआ 12 डिग्री पर पहुंचा है। इस सीजन में पहली बार इतना कम तापमान दर्ज किया गया है। अभी जेट स्ट्रीम (पृथ्वी की ऊपरी सतह पर चलने वाली तेज हवाएं) हवाओं से 20 जनवरी तक ठंड का असर बना रहेगा। आधा जनवरी बीतने के बाद भी ठंड के तेवर ढीले नहीं पड़े है। ठंड लगातार बढ़ती जा रही है, सोमवार को अच्छी धूप निकलने के बाद मंगलवार का दिन सीजन में पिछले दस सालों में सबसे सर्द रहा है। इस समय दिन और रात बहुत सर्द चल रहे है, जिस कारण से राहत नहीं मिल रही है। रात से पड़ना शुरु हो रहा कोहरा अगले दिन दोपहर तक रहता है। सोमवार की शाम से शुरु हुआ कोहरा मंगलवार की दोपहर तक रहा,धूप के भी दर्शन नहीं हुए। धूप न निकलने के चलतेसर्दी का असर और ज्यादा हो रहा है। कोहरे के चलते वाहनों की रफ्तार धीमी हो रही है। मौसम कार्यालय पर दिन का अधिकतम तापमान 12.0 डिग्री व रात का न्यूनतम तापमान 3.8 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड़ किया गया।

बंद मकान से लाखों के आभूषण व नगदी चोरी

अलीगढ़। कस्बे के मोहल्ला खत्रीपाड़ा में एक बंद मकान से चोर लाखों रुपये के जेवर और नगदी चुराकर ले गए। पीड़ित ने पुलिस को तहरीर दी है। मोहल्ला खत्रीपाड़ा निवासी नरेंद्र कुमार अग्रवाल पुत्र सुरेश चंद मसाला व्यापारी हैं। सोमवार को वह परिवार के साथ रिश्तेदारी में गए थे। उनके घर में दो द्वार हैं। मुख्य द्वारा का बाहर से ताला लगा था, जबकि दूसरा दरवाजा अंदर से बंद था। देर रात चोरों ने उनके मकान के दूसरे दरवाजे को किसी तरह खोल लिया और अंदर घुस गए। मंगलवार को वह घर पहुंचे तो देखा कमरे में रखी आलमारी खुली पड़ी है। आलमारी से जेवर व रुपये गायब देख उनके होश उड़ गए। पीड़ित के मुताबिक चोर चार लाख रुपये से अधिक के जेवर और नगदी निकालकर ले गए।

फौजी की ट्रेन से गिरकर मौत

अलीगढ़। दिल्ली-कानपुर रेलवे ट्रैक चुआवली के पास ड्यूटी से छुट्टी लेकर लौट रहे पंजाब के फौजी की ट्रेन से गिरकर मौत हो गई। जेब से मिले मोबाइल, दस्तावेजों के आधार पर शिनाख्त हो सकीं। पुलिस के अनुसार पंजाब के मुक्तसर साहिब के थाना कोट बाई के गांव खुनन खुर्द निवासी लखबिंदर सिंह (34) पुत्र प्रकाश सिंह सेना में पंजाब रेजीमेंट में नायक थे। तेलंगाना के सिकंदराबाद में तैनाती थी। वह 13 जनवरी को एक माह की छुट्टी पर ट्रेन से पंजाब जा रहे थे। सोमवार को दिल्ली-कानपुर रेलवे ट्रैक चुआवली फाटक के पास ट्रेन से गिरने से मौके पर उनकी मौत हो गई। जेब से मिले मिले कागजों व फोन के आधार पर उनकी शिनाख्त हो सकी। मंगलवार को पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराकर परिवार को सौंप दिया। वह अपने पीछे दो बच्चों सहित परिवार वालों को रोता-बिलखता छोड़ गए हैं।

मेडिकल रिसर्च से ही रोगों के निजात को सही उपचार मिला: डा गुप्ता

एस एन मे शोध मामलो मे आये दिन रच रहा है इतिहास

संवाददाता

आगरा। एस. एन . मेडिकल कॉलेज के विभागों में रिसर्च कार्य को नई गति मिली है। जिससे रोगों का सही तरीके से उपचार हो पाना संभव हो सका है उक्त उदगार मेडिकल कालेज के प्राचार्य डा प्रशांत गुप्ता ने व्यक्त किये। प्रधानाचार्य डॉ प्रशांत गुप्ता ने कहा कि मेडिकल में शोध एब रिसर्च की भूमिका महत्वपूर्ण वं लाभकारी है, जिससे रोग का बेहतर निदान संभव होता है। उन्होंने कहा कि मेडिकल कालेज के विभाग रिसर्च के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। इस अवसर पर नेत्र रोग विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो स्निग्धा सेन ने कहा है कि गत वर्ष में विभाग में चल रहे रिसर्च कार्य पर आधारित कई शोध लेख पबमेड अनुक्रमित व प्रतिष्ठित राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशित हुए हैं । प्रो सेन ने कहा है कि प्टेरीज़ियम, जिसे सरल भाषा में नाखूना कहते हैं और जिसके रोगी इस क्षेत्र में बहुतायत में हैं, पर आधारित शोध पत्र अंतर्राष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशित हुआ है। इसके अतिरिक्त नेत्र दान एवं गुर्दा प्रत्यारोपण मरीज़ों में नेत्र समस्याओं पर आधारित शोध लेख अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त राष्ट्रीय जर्नल (इण्डियन जर्नल ऑफ़ ऑफ़्थलमोलॉजी एवं इण्डियन जर्नल ऑफ़ ट्रांसप्लानटेशन) में प्रकाशित हुए हैं । विभाग अध्यक्ष डॉ स्निग्धा जैन ने कहा है कि विभाग के संकाय सदस्यों ने शोध कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया गया है। उन्होंने विभाग की डॉ अनु जैन द्वारा किए गए शोध कार्य में किए गए योगदान के बारे में भी अवगत कराया। इसके अतिरिक्त गत वर्ष में विभाग के स्नातकोत्तर छात्रों ने अपने अपने शोध पत्र राष्ट्रीय कांफ्रेंस में प्रस्तुत कर सराहना एवं उत्साह अर्जित की है। इसमें प्रमुख रूप से डा मेरेनसोबा, डा महिपाल, डा प्रीति, डा जतिन, डा अदीबा, डा आलोक मेडिकल कालेज की मिडिया प्रभारी डॉ प्रीति भारद्वाज ने दी है।

मायके वालों पर लगाया बच्ची को बेचने का आरोप, रिपोर्ट दर्ज

अलीगढ़। एक महिला ने अपने चाचा और मायके वालों पर नवजात बच्ची को बेचने का आरोप लगाया है। कोर्ट के आदेश पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। मामला दो साल पुराना बताया जा रहा है। रिपोर्ट में गांव दहोड़ा निवासी पूनम पत्नी करन कुमार ने कहा है कि उसने अपनी मर्जी से मार्च 2021 में करन कुमार के साथ शादी की थी। उसके गर्भवती होने पर थाना इगलास के गांव जवार निवासी उसके मायके वाले उसे गांव ले गए। वहां उसके चाचा लालाराम, एक अपंजीकृत चिकित्सक पवन सिंह, एक अस्पताल संचालक बोधपाल उर्फ गुड्डू निवासी पुनहरा थाना जलेसर जिला एटा ने मिलीभगत कर उसका एक नवंबर 2021 को प्रसव कराया। प्रसव के बाद उसकी बच्ची को गायब कर दिया। पूनम ने बच्ची को दो लाख रुपये में नगला बरी थाना निधौली कलां जिला एटा निवासी एक दंपती को बेचने का आरोप लगाया है।

माता पिता की प्रेरणा से लोगो की मदत करना सीखा : डा अबधेश

- दीन दुखियो की सेवा करना सास ससुर से प्रेरणा मिली : इति सिंह।
- सैकड़ो लोगो को पुण्यतिथि पर कम्बल किये वितरण।

संवाददाता

आगरा। एत्मादपुर की ब्लॉक प्रमुख ने अपने सास ससुर की पुण्यतिथि पर सेकड़ो गरीवो को कंबल बितरण किये इस अबसर पर ब्लॉक प्रमुख के पति व भाजपा नेता डा अबधेश कुमार सुमन ने कहा कि माता पिता की प्रेरणा से लोगो की सेवा करने की सीख मिली है। इस अवसर पर ब्लॉक प्रमुख इति सिंह सुमन ने लोगो को सम्बोधित करते हुए कहा कि ब्लॉक प्रमुख पद कोई राजनीती या आय का पद नहीं है क्योंकि सेवा करने का है यह कार्य उन्होंने अपने ससुर मंत्री नारायण सिंह सुमन और सास श्रीमती कलावती जी से सीखा है। डा सुमन कहा कि उनके पिता जो एत्मादपुर से विधायक और मंत्री रहे उनसे प्रेरणा मिली और जनता के बीच आकर उनकी सेवा कर रहा हूँ। इस अवसर पर वरहन मे चौपाल लगाकर सेकड़ो गरीवो को कम्बल बितरण किये। इससे पूर्व ब्लॉक प्रमुख इति सिंह और उनके पति मंत्री जी और माता जी की पुण्यतिथि से पूर्व दर्जनों बेधर लोगो को निजी रूप से उनके आसियाना बनबा चुके है। जिले मे अकेले ब्लॉक प्रमुख है जो विकास खंड क्षेत्र के गरीबो के लिए ऐसे कार्य कर रहे है इस अबसर पर एत्मादपुर विकास खंड के प्रधान और क्षेत्र पंचायत सदस्य मौजूद थे।

18 जनवरी को आएंगे मेरठ उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य

संवाददाता

मेरठ। सरस्वती लोक कालोनी में श्री जागेश्वर धाम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित किया जाएगा। 15 जनवरी से 22 जनवरी तक आयोजित प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव में उपमुख्यमंत्री शामिल होने पहुंचेंगे।

प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य 18 जनवरी को मेरठ आएंगे। वह दोपहर 12 बजे दिल्ली रोड स्थित सरस्वती लोक कॉलोनी में श्री जागेश्वर धाम मंदिर के पंचांग पूजन में शामिल होंगे। एक घंटे कार्यक्रम में रहने के बाद वह 1 बजकर 5 मिनट पर लोक निर्माण विभाग के निरीक्षण भवन में पार्टी पदाधिकारियों और जन प्रतिनिधियों के साथ संवाद करेंगे। दो बजे कार द्वारा गाजियाबाद में आयोजित कार्यक्रम के लिए रवाना हो जाएंगे। मंगलवार को प्रशासन के पास उनका अधिकारिक कार्यक्रम आ गया है। श्री सरस्वती प्रेम स्मृति ट्रस्ट के महासचिव वरुण अग्रवाल ने बताया कि 15 जनवरी से 22 जनवरी तक आयोजित प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव में शारदापीठाधीश्वर जगदगुरू शंकराचार्य राजराजेश्वराश्रम महाराज अभ्यागत मुख्य यजमान होंगे। श्री कैलाश तीर्थ आश्रम के संस्थापक कनक प्रभानंद सरस्वती जी महाराज के सानिध्य में होने वाले समारोह में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी, उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक और स्वतंत्र देव सिंह को भी आमंत्रित किया गया है। इनके अलावा 22 जनवरी को भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री सुनील बंसल एवं प्रदेश के कई मंत्री और जनप्रतिनिधि प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शामिल होंगे। मुख्य यजमान कैंट विधायक अमित अग्रवाल और उनकी पत्नी मधु अग्रवाल रहेंगी।

ताहिर हुसैन बने यूथ कांग्रेस जिलाध्यक्ष

सोमेश सिंह बने खेरागढ़ विधानसभा अध्यक्ष

संवाददाता

आगरा। पश्चिम उत्तर प्रदेश संगठनात्मक चुनाव में जिला अध्यक्ष पद पर ताहिर हुसैन खेरागढ़ विधानसभा से ÷अध्यक्ष÷ पद पर सोमेश सिंह बघेल (निर्वाचित) विजयी हुए है युवा कांग्रेस के चुनाव का परिणाम जारी हो चुका है । यूथ कांग्रेस ने उत्तर प्रदेश में प्रदेश अध्यक्ष, प्रदेश महासचिव, जिला अध्यक्ष, एवं विधानसभा अध्यक्ष पद हेतु चुनाव करवाये थे जगनेर निवासी सोमेश सिंह बघेल ने खेरागढ़ से विधासभा अध्यक्ष पद के लिए ऑनलाइन आवेदन पत्र दाखिल था। विधानसभा अध्यक्ष के पद के लिए जिले में सर्वाधिक 398 वोटो से विजयी हुए है सोमेश सिंह बघेल। जिला प्रवक्ता कांग्रेस अनुज शिवहरे ने बताया की सोमेश बघेल बहुत ही मेहनती जुझारू कर्मठ कार्यकर्ता है काफी लंबे समय से कांग्रेस के सक्रिय सदस्य हैं एवं विभिन्न पदों पर विराजमान रह कर अपनी जिम्मेदारी निभाई है, सोमेश सिंह बघेल कई धार्मिक एवं सामाजिक संगठनों से जुड़े हैं। इस अवसर पर युवा कांग्रेस खेरागढ़ विधानसभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष सोमेश सिंह बघेल ने अपने सभी कांग्रेसजनों मतदाताओं, समर्थकों एवं शुभचिंतकों का आभार व्यक्त किया। परिणाम की घोषणा के बाद जिला अध्यक्ष राघवेन्द्र सिंह मीनू, प्रदेश प्रवक्ता अनिल शर्मा, जिला प्रवक्ता अनुज शिवहरे, जिला अध्यक्ष युवा कांग्रेस हेमन्त चाहर, सरपंच चंद्रशेखर शर्मा देवरी वाले , बुरहान शमशी, एनएसयूआई प्रदेश उपाध्यक्ष गौरव शर्मा, सुगम शिवहरे, सचिन वर्मा, योगेश उपाध्याय, फिरोज कसान, रविंद्र जादौन, मनीष शर्मा, मासूम खान, रोहित धनगर, अजय बंसल, तुषार बिंदल, सोहिल खान , प्रशांत रावत, राजकुमार तोमर दिव्यांश शर्मा, मोहित, प्रदीप बघेल, भूपेंद्र बघेल, शिवम कुशवाह, प्रमोद तिवारी, आकाश बघेल, आदि ने हर्ष व्यक्त किया!

रोजगार मेले में 237 अभ्यर्थियों ने किया प्रतिभाग 14 नियोक्ता कंपनियों ने 157 अभ्यर्थियों का किया चयन

संवाददाता

आगरा। उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन, जिला सेवायोजन कार्यालय एंव राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों के संयुक्त तत्वाधान में डी.डी.यू.जी.के.वाई. योजनान्तर्गत विकास खण्ड स्तरीय रोजगार मेले का आयोजन ब्लाक बिचपुरी के एक्सीलेंट डिग्री कॉलेज, लड़ामदा, आगरा में किया गया। कार्यकम का उद्घाटन मुख्य अतिथि शशिकला, जिला पंचायत सदस्य आगरा ने फीता काट कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर शशिकला, जिला पंचायत सदस्य आगरा ने कहा कि वर्तमान में प्रदेश एंव देश की सरकार की मंशा है कि कोई भी युवक अथवा युवती बेरोजगार नहीं रहे, इसके लिए समय समय पर मेलों का आयोजन कर बेरोजगारों को रोजगार दिलाने का काम सरकार कर रही है। श्रीवत्स कृष्ण, असिस्टेंट कमिश्नर, जिला उद्योग केन्द्र ने कहा कि जीवन में आगे बढने के लिये कौशल का ज्ञान होना बहुत जरूरी है, इसलिये सभी युवा कौशल प्रशिक्षण लेकर रोजगार व स्वरोजगार पा सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 सुनील यादव ने किया व बताया कि वृहद रोजगार मेला में तकनीकी एवं गैर तकनीकी पदों पर भर्ती हेतु शिक्षित युवा बेरोजगार, उ0प्र0 कौशल विकास मिशन एवं आई0टी0आई0 के प्रशिक्षित कुल 237 अभ्यर्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। 14 नियोजकों-पी.एन.जी. एच.आर सर्विस, पेन एच.आर सोल्यूशन प्रा0लि0, अवंत करियर प्रा0लि0, बी.एस. एण्टरप्राइसेस, डीम्स कियेशन एण्ड टेक्नोलोजी प्रा0लि0, डस्की स्टेलिअन एडुकेशन, माघवी एण्टरप्राइसेस, यजाकी इण्डिया, दीपक टॉयज प्रा0लि0, एल0आई0सी0, पटेल एण्ड पाटिल स्क्योरिटीज़ प्रा0लि0, टेनेक्को, अमाघनी प्रा0लि0, प्लम्बर इण्डिया आदि कंपनियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। प्रतिभागी अभ्यर्थियों के सापेक्ष विभिन्न कम्पनियों में कुल 157 अभ्यर्थियों का चयन किया गया एंव मेले में रोजगार प्राप्त 25 अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र वितरण किये गए।

आयोजित वृहद रोजगार मेले में अमित कुमार धाकरे जिला कौशल प्रबंधक, रविन्द्र सिंह तोमर जिला कार्यक्रम प्रबंधक, शिवदत्त सिंह वरिष्ठ सहायक सेवायोजन आदि उपस्थित थे। अमित कुमार धाकरे जिला कौशल प्रबंधक ने बताया कि अगला विकास खण्ड स्तरीय रोजगार मेला 18.जनवरी को ब्लॉक बरोली अहीर के सी0एल0आई0टी0आई0 नवामील बमरोली कटारा फतेहाबाद रोड़ आगरा में आयोजित किया जाएगा।

कड़ाके की ठंड में भी खाली मिले रैन बसेरे, न कहीं जलते दिखे अलाव

एजेंसी

मेरठ। प्रभारी मंत्री धर्मपाल सिंह ने मंगलवार रात रैन बसेरों का निरीक्षण किया। रैन बसेरों में शरणार्थी नहीं मिले और तीन जगह पर अलाव भी जलते नहीं मिले। नगर निगम की व्यवस्था पर प्रभारी मंत्री ने नाराजगी जाहिर की और निगम के अधिकारियों को व्यवस्था सुधारने की बात कही। मंत्री पशुधन एवं दुग्ध विकास, राजनैतिक पेंशन अल्पसंख्यक कल्याण, मुस्लिम वक्फ एवं हज तथा नागरिक सुरक्षा विभाग/प्रभारी मंत्री धर्मपाल सिंह रात में मेरठ सर्किट हाउस पहुंचे। महापौर हरिकांत अहलूवालिया, महानगर अध्यक्ष सुरेश जैन रितुराज, जिलाधिकारी दीपक मीणा, नगर आयुक्त डॉ. अमित पाल शर्मा के साथ बातचीत की। प्रभारी मंत्री ने रात में रैन बसेरों का औचक निरीक्षण करने की बात कही। प्रभारी मंत्री धर्मपाल सिंह ने महापौर, महानगर अध्यक्ष और अधिकारियों के साथ पहले सोहराब गेट बस स्टैंड, मेडिकल कॉलेज, शेरगढ़ी और फिर तिरंगा गेट स्थित रैन बसेरों का निरीक्षण किया। उन्होंने शरणार्थियों से रैन बसेरों में उपलब्ध सुविधाओं, कंबल एवं अलाव आदि के बारे में जानकारी प्राप्त करते हुए संबंधित अधिकारी को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान शेरगढ़ी बसेरे में एक भी शरणार्थी नहीं मिला, शहर में कई जगह पर अलाव भी नहीं जलते दिखाई दिए। हालांकि तीन जगह निगम के अधिकारियों ने अलाव जलते प्रभारी मंत्री को दिखाए। प्रभारी मंत्री ने निगम के अधिकारियों को व्यवस्था दुरुस्त करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर एडीएम प्रशासन अमित कुमार, अपर नगर आयुक्त प्रमोद कुमार प्रभारी नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉक्टर हरपाल सिंह सहित अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

6.67 किमी लंबाई, 350 करोड़ लागत.... इंदौर में बन रहे एलिवेटेड रोड से किन-किन इलाकों को फायदा?

संवाददाता

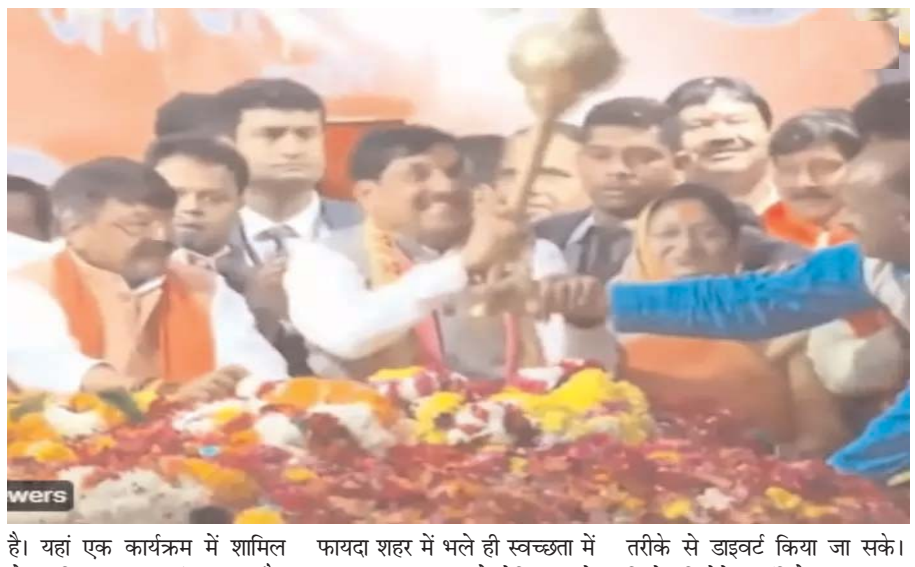

इंदौर। मध्य प्रदेश की औद्योगिक नगरी कहा जाने वाला इंदौर शहर में विकास के कई काम हो रहे हैं। इसी कड़ी में एक काम एलिवेटेड रोड का भी है। जिसका शुभारंभ करने के लिए सीएम मोहन यादव खुद शहर के दौरे पर आए है। जानिए शहर की जनता के लिए क्यों है यह रोड खास की सीएम कर रहे हैं उद्घाटन। प्रदेश के मुखिया बने मोहन यादव आज एमपी की औद्योगिक नगरी इंदौर के दौरे पर है। यहां पहुंच कर सीएम ने सबसे पहले बड़ा गणपति में पूजन गणपति बप्पा का आशीर्वाद लिया। इसके बाद राजवाड़ा तक रोड शो किया। सीएम आज यहां की जनता को एक बार फिर कई लाभकारी सौगात देने के लिए आए हुए है। इनमें से सबसे खास एलिवेटेड रोड है। जिसका शुभारंभ सीएम मोहन यादव करेंगे। दरअसल, सीएम मोहन यादव एक दिवसीय इंदौर दौरे में आए हुए है। यहां एक कार्यक्रम में शामिल होकर विश्राम बाग पहुंच कर स्क्रैप से बने श्री राम मंदिर का लोकार्पण करेंगे। इसके साथ ही शहर की ट्रैफिक सिस्टम को और स्मूथ बनाने के लिए एलिवेटेड रोड की सौगात भी जनता को देंगे। जानिए क्या है एलिवेटेड रोड जनता को क्या होगा फायदा शहर में भले ही स्वच्छता में नए आयाम गढ़ रहा हो लेकिन बढ़ते वाहनों की संख्या के चलते लगने वाले जाम से लोगों को परेशान होना ही पड़ता है। इसी समस्या के समधान के एक ऐसी रोड तकनीक का उपयोग किया जा रहा है जिससे एक ही रोड के ट्रैफिक को अलग अलग तरीके से डाइवर्ट किया जा सके। जिसे एलिवेटेड कॉरिडोर कहा जाता है। इसके लिए सीएम मोहन यादव आज 350 करोड़ की लागत से बनने वाले 6.67 किमी लंबे एलिवेटेड कोरिडोर की आधारशिला रखेंगे। यह कोरिडोर एलआईजी तिराहा से होकर नवलखा चौराहे तक बनाया जाएगा। यह कॉरिडोर जमीन से 30 फीट ऊंचा होगा। जिसमें से करीब 5 कट निकाले जाएंगे। इनमें से एक गिटार चौराहे पर दूसरा गीता भवन चौराहे पर तीसरा मधुमिलन चौराहा होगा। वहीं, चौथा कट शिवाजी वाटिका, पांचवा कट पीपल्याहाना की तरफ होगा। इसको पूरा होने में करीब दो साल का समय लगेगा। इस कोरिडोर के बनने के बाद से शहर की जनता को घंटों तक ट्रैफिक में नहीं फसना पड़ेगा। वहीं, इस कोरिडोर के बन जाने के बाद शहर में यातायात सुधार होगा साथ ही शहर सफाई के साथ ही साथ यातायात में भी नंबर वन आने की दिशा में एक कदम और आगे बढ़ जाएगा। इस कोरिडोर के बनने के बाद वाहन एक ही गति में निकल सकेंगे। जिसके चलते ट्रैफिक की समस्या काफी हद तक कम होगी। साथ ही गाड़ी चलाने वालों की समय के साथ डीजल पेट्रोल की बचत होगी वो अलग।

केंद्रीय मंत्री प्रल्हाद जोशी से मिले सीएम धामी, थर्मल पावर स्टेशन को लेकर हुई चर्चा

संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री ने केंद्रीय मंत्री से उत्तराखंड को एक कोल ब्लॉक का आवंटन प्राथमिकता पर करने का अनुरोध किया। केंद्रीय मंत्री ने यथासंभव सहयोग के प्रति आश्वस्त किया। सीएम पुष्कर सिंह धामी ने आज बुधवार को नई दिल्ली में केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री प्रल्हाद जोशी से मुलाकात की। सीएम ने न्यूनतम 1000 मेगावाट के पिट-हेड थर्मल पावर प्लांट स्थापित किए जाने के लिए उत्तराखंड को लगभग 125 मिलियन टन भंडारण क्षमता की एक कोल ब्लॉक का आवंटन करने का अनुरोध किया। सीएम ने कहा कि अनुकूल औद्योगिक नीति के कारण राज्य में तेज गति से औद्योगिक विकास हुआ है, जिसके कारण बिजली की मांग में निरन्तर वृद्धि हुई है। सर्दियों के मौसम में बिजली की कमी हो जाती है, क्योंकि कम तापमान के कारण नदियों में पानी का बहाव कम हो जाता है। राज्य में बिजली की मांग प्रतिवर्ष लगभग चार से पांच प्रतिशत की दर से बढ़ रही है। औद्योगिकीकरण बढ़ने के कारण आने वाले वर्षों में विद्युत की मांग और बढ़ने की संभावना है। मुख्यमंत्री ने कहा कि ऊर्जा मंत्रालय के द्वारा की गई संस्तुति के दृष्टिगत राज्य में विद्युत परियोजनाओं के तेज गति से विकास किए जाने के लिए यूजेवीएन लि. (राज्य सरकार का उपक्रम) और टीएचडीसी इंडिया लि. के बीच एक संयुक्त उपक्रम (टीएचडीसीआईएल-यूजेवीएनएल एनर्जी कंपनी लिमिटेड) का गठन किया गया है। टीएचडीसी इंडिया लि. की तापीय विद्युत उत्पादन के क्षेत्र में भी अनुभव को ध्यान में रखते हुए राज्य की विद्युत मांग की आपूर्ति के लिए इस नए संयुक्त उपक्रम के माध्यम से एक पिट-हेड थर्मल पावर प्लांट स्थापित किया जाना प्रस्तावित है। उत्तराखंड उन कुछ राज्य में से एक है जहां कोई भी थर्मल पावर स्टेशन संचालित नहीं है। मुख्यमंत्री ने केंद्रीय मंत्री से उत्तराखंड को एक कोल ब्लॉक का आवंटन प्राथमिकता पर करने का अनुरोध किया। केंद्रीय मंत्री ने यथासंभव सहयोग के प्रति आश्वस्त किया।

एक नज़र

केंद्रमंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने मुख्यमंत्री नवीन पटनायक की आलोचना की

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर। केंद्रीय शिक्षा, कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने मुख्यमंत्री नवीन पटनायक की आलोचना की है । प्रदेश बीजेपी कार्यालय में आयोजित विलय उत्सव के दौरान धर्मेंद्र ने सीधे मुख्यमंत्री से सवाल किया । केंद्रीय मंत्री ने स्वास्थ्य, शिक्षा, सिंचाई और कानून व्यवस्था समेत कई मुद्दे उठाए और पूछा कि यह कैसा बदलाव है ।उन्होंने आगे कहा, हृष्टत्रक्ककी रिपोर्ट में ओडिशा की हालत बहुत खराब है । महिला उत्पीड़न के मामले में ओडिशा सबसे खराब 3 राज्यों में से एक है। उन्होंने मुख्यमंत्री से श्वेत पत्र जारी करने की मांग की ।धर्मेंद्र प्रधान ने यह भी कहा कि मुख्यमंत्री के हिन्जिली निर्वाचन क्षेत्र की कई युवा महिलाएं तमिलनाडु में काम कर रही हैं। केंद्रीय मंत्री ने मुख्यमंत्री जगननाथ ठंडा पकड़ कर बताया है कि हिन्जिली निर्वाचन क्षेत्र से कोई काम नहीं बहार मे करने वाला है । उन्होंने आगे कहा कि अगर बीजेपी को सिर्फ 5 साल दिए जाएं तो डबल इंजन सरकार के जरिए ओडिशा में काफी सुधार किया जाएगा ।

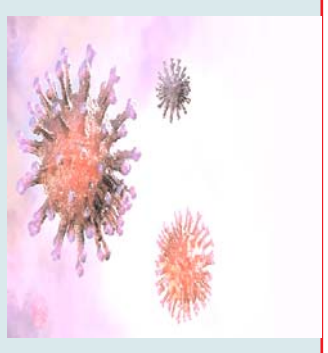

नोएडा-ग्रेनो में ठंड के चलते 18 जनवरी से बदला स्कूलों का समय, यहां जानें क्या है नई टाइमिंग

नोएडा। घने कोहरे और अत्यधिक ठंड को देखते हुए गौतमबुद्ध नगर के जिलाधिकारी द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुपालन में नर्सरी से 8वीं तक के सभी स्कूलों में कक्षाएं 18 जनवरी से अगले आदेश तक सुबह 10 बजे से संचालित की जाएंगी। गौतम बुद्ध नगर के बेसिक शिक्षा अधिकारी राहुल पंवार ने यह जानकारी दी। नोएडा और ग्रेटर नोएडा के सभी स्कूलों में नर्सरी से आठवीं तक की कक्षाएं ठंड के कारण 18 जनवरी से सुबह 10 बजे शुरू होंगी। गौतम बुद्ध नगर के बेसिक शिक्षा अधिकारी राहुल पंवार ने कहा कि यह समय जिला प्रशासन के अगले आदेश तक जारी रहेगा। अधिकारी ने आदेश को सख्ती से लागू करने को कहा। पंवार ने कहा, ÷घने कोहरे और अत्यधिक ठंड को देखते हुए गौतमबुद्ध नगर के जिलाधिकारी द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुपालन में नर्सरी से 8वीं तक के सभी स्कूलों में कक्षाएं 18 जनवरी से अगले आदेश तक सुबह 10 बजे से संचालित की जाएंगी।÷

कोरोना से होने वाली मौतों ने बढ़ाई चिंता; देश में एक दिन में तीन की मौत, 180 नए संक्रमित भी मिले

नई दिल्ली। पांच दिसंबर तक मामलों में कमी दर्ज की गई थी। लेकिन ठंड का मौसम आते ही मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। कोविड-19 का एक नया वेरिएंट सामने आने से भी स्वास्थ्य महकमे की चिंता बढ़ गई है। हालांकि, फिलहाल इस वेरिएंट के नए मामले सामने नहीं आ रहे हैं। कोरोना महामारी एक बार फिर तेजी से पैर पसार रहा है। हर दिन नए मामले सामने आ रहे हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय ने मंगलवार को बताया कि भारत में सिर्फ एक दिन में कोविड-19 के 180 नए मामले सामने आए हैं। इससे संक्रमण के सक्रिय मामलों की संख्या बढ़कर 2,804 हो गई है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से सुबह आठ बजे अद्यतन आंकड़ें जारी किए गए। पिछले 24 घंटे में महाराष्ट्र में संक्रमण से तीन लोगों की मौत हुई। पांच दिसंबर तक मामलों में कमी दर्ज की गई थी। लेकिन ठंड का मौसम आते ही मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। कोविड-19 का एक नया वेरिएंट सामने आने से भी स्वास्थ्य महकमे की चिंता बढ़ गई है। हालांकि, फिलहाल इस वेरिएंट के नए मामले सामने नहीं आ रहे हैं। 2020 की शुरुआत में महामारी अपने चरम पर थी, तब हर दिन आने वाले मरीजों की संख्या लाखों में थी। तब से देश भर में लगभग चार वर्षों में 4.5 करोड़ से अधिक लोग संक्रमित हुए हैं। वहीं, 5.3 लाख से अधिक मौतें हो चुकी हैं। आधिकारिक सूत्रों का कहना है कि पिछले साल 31 दिसंबर को 841 नए मामलों की एक दिन में वृद्धि दर्ज की गई, जो मई 2021 में रिपोर्ट किए गए चरम मामलों का 0.2 प्रतिशत है। कुल सक्रिय मामलों में से, इनमें से अधिकांश (लगभग 92 प्रतिशत) होम आइसोलेशन के तहत ठीक हो रहे हैं। मंत्रालय की वेबसाइट के अनुसार, बीमारी से उबरने वाले लोगों की संख्या बढ़कर 4.4 करोड़ से अधिक हो गई है। मरीजों के ठीक होने की राष्ट्रीय दर 98.81 प्रतिशत है। देश में अब तक कोविड टीकों की 220.67 करोड़ खुराक दी जा चुकी हैं।

कुल्हाल बॉर्डर पर रोकी ज्ञान गोदड़ी यात्रा, संगत में आक्रोश, पुलिस के साथ हुई नोकझोंक

एजेंसी

देहरादून। गुरुरचरण सिंह बब्बर ने कहा कि हरकी पैड़ी में सिखों का 460 साल पुराना गुरुद्वारा है। हम सबके साथ मिलकर समाज की सेवा करना चाहते हैं। हम केवल अपना हक-अधिकार मांग रहे है। हरकी पैड़ी हरिद्वार में गुरु नानक साहिब गुरुद्वारा ज्ञान गोदड़ी स्थापित किए जाने की मांग को लेकर यात्रा के रूप में हरिद्वार जा रहे सिख समुदाय के जत्थे को पुलिस प्रशासन ने कुल्हाल बॉर्डर पर रोक लिया। जत्थे को रोके जाने पर संगत ने आक्रोश प्रकट करते हुए इसे अधिकारों का हनन करार दिया। बॉर्डर पर पुलिस प्रशासन के साथ हुई करीब एक घंटे की वार्ता के बाद जत्थे में शामिल लोग वापस लौट गए। ऑल इंडिया सिक्ख कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष गुरुचरण सिंह बब्बर के नेतृत्व में चार वाहनों में सवार होकर जत्था दोपहर 12ः40 बजे पांवटा साहिब हिमाचल पहुंचा। जत्थे में 19 पुरूष और पांच महिलाएं शामिल थीं। यहां माथा टेकने के बाद जत्था दोपहर 2ः10 बजे कुल्हाल बॉर्डर पहुंचा। जहां पहले से मौजूद भारी पुलिस ने पुल पर बैरीकेड लगाकर वाहनों को रोक लिया। पुलिस प्रशासन की ओर से रोके जाने पर गुरुरचरण सिंह बब्बर ने कहा कि हरकी पैड़ी में सिखों का 460 साल पुराना गुरुद्वारा है। हम सबके साथ मिलकर समाज की सेवा करना चाहते हैं। हम केवल अपना हक-अधिकार मांग रहे है। गुरु के प्रकाश पर्व पर उन्हें हरिद्वार में जाकर स्नान और अरदास आदि करने से रोका जाना, उनके अधिकारों का हनन है। तहसीलदार सुरेंद्र कुमार, सीओ भाष्कर शाह, कोतवाली प्रभारी राजेश साह के समझाने पर जत्थे में शामिल सभी लोग वाहनों में सवार होकर वापस दिल्ली लौट गए। रोके जाने पर जत्थे में शामिल लोगों ने ज्ञान खोदड़ी गुरूद्वारा साहिब लेकर रहेंगे के नारे लगाए। सभी लोगों को पुलिस चौकी के पीछे बने शेड में ले जाया गया। जहां चाय नाश्ता कराने के बाद सभी को लौटा दिया गया। सुरक्षा की दृष्टि से बॉर्डर पर भारी पुलिस बल तैनात रहा। कोतवाली के साथ ही कालसी, सहसपुर, सेलाकुई थाना पुलिस के साथ भारी पुलिस बल तैनात रहा। पुलिस के खुसफिया विभाग के पुलिस कर्मी भी सतर्क रहे।

दोपहर बाद बदला मौसम, चारधाम समेत समेत ऊंची चोटियों पर हुई बर्फबारी, ठंड बढ़ी

एजेंसी

चमोली। आज मैदानी इलाकों में कोहरा छाने का अलर्ट जारी किया गया है। वहीं, विंटर बारिश न होने की वजह से सूखी ठंड परेशान कर रही है। उत्तराखंड में मौसम पल-पल करवट बदल रहा है। बुधवार को सुबह से आसमान में बादल छाए रहे, लेकिन दोपहर बाद मौसम ने करवट बदली और बदरीनाथ धाम, फूलों की घाटी, हेमकुंड, औली, रुद्रनाथ, हनुमान चट्टी, समेत ऊंचाई वाले इलाकों में बर्फबारी शुरू हो गई। जबकि निचले स्थान में मौसम खराब होने से कड़ाके की ठंड हो रही है। वहीं, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री धाम सहित आस-पास खरशाली गांव , जानकीचट्टी, नारायण पुरी फूलचट्टी क्षेत्र में भी हल्की बर्फबारी हुई। मौसम वैज्ञानिकों की मानें तो अभी फिलहाल तीन-चार दिन बारिश के आसार नहीं हैं। मौसम विज्ञान केंद्र की ओर से जारी पूर्वानुमान के अनुसार आज मैदानी इलाकों में कोहरा छाने का अलर्ट जारी किया गया है। मौसम केंद्र के निदेशक बिक्रम सिंह ने कहा, विंटर बारिश न होने की वजह से सूखी ठंड परेशान कर रही है।

यूपी के स्कूलों में फिर बढ़ी छुट्टियां, आगरा-बलिया से लेकर इन जिलों से जुड़ा नया आदेश

संवाददाता

आगरा। उत्तर प्रदेश के लगभग सभी जिलों में कड़ाके की सर्दी का सितम जारी है। शीतलहर और गलन से तापमान में भारी गिरावट आई है। इसके चलते आगरा समेत अन्य जिलों में जिलाधिकारियों ने एक फिर से स्कूलों में अवकाश को बढ़ा दिया है। वहीं कोहरे से रेल यातायात भी प्रभावित हो रहा है। उत्तर प्रदेश में ठंड बढ़ने के वजह से कई जिलों में स्कूलों की छुट्टियां 20 जनवरी तक बढ़ा दी गई हैं। अत्यधिक ठंड और गलत से जनजीवन बुरी तरीके से प्रभावित हुआ है। एक तरफ कोहरे के कारण रेल यातायात बाधित हुआ है। ट्रेनें अपने नियत समय से कई घंटे से अविलंब चल रही है। आगरा, गाजीपुर, सोनभद्र, बलिया समेत कई जिलों में छुट्टी का ऐलान किया गया है। आगरा में कक्षा 8 तक के सभी स्कूल अब 19 जनवरी तक के लिए बंद रहेंगे। इससे पूर्व कक्षा पांच तक के स्कूलों में 20 जनवरी तक के अवकाश की घोषणा की थी। डीएम के आदेश स्कूल के बच्चों और उनके अभिभावकों को राहत दे रहे हैं। कड़ाके की सर्दी और शीतलहर से ठिठुरन पैदा हो गई है। मंगलवार को सीजन का सबसे ठंडा शहर आगरा रहा। अधिकतम तापमान 11.2 डिग्री सेल्सियस से आगे नहीं बढ़ सका। इसके अगले दिन बुधवार को यही आलम रहा। जिलाधिकारी भानु चंद्र गोस्वामी ने स्कूलों में एक बार फिर से अवकाश बढ़ा दिया है। कक्षा 8 तक के सभी बोर्ड के स्कूल अब 19 जनवरी तक बंद रहेंगे। डीएम ने ये आदेश सभी बोर्ड के स्कूलों को पालन करने के लिए जारी किए हैं। इसके अलावा कक्षा 12 तक के स्कूलों में समय परिवर्तन किया गया है। कक्षा 9 से 12 तक के छात्रों को लिए स्कूल सुबह 10.30 बजे खुलेंगे और अवकाश 3.30 बजे किया जाएगा। ये आदेश सभी बोर्ड के स्कूलों के लिए जारी किए हैं। मंगलवार और बुधवार दो दिनों से आगरा में सूर्य देवता के दर्शन नहीं हुए हैं। पिछले सप्ताह से लगातार तापमान में गिरावट देखी जा रही है। मौसम विभाग ने अगले 5 दिनों के लिए चेतावनी भी जारी कर दी है। विभागीय अधिकारियों का कहना है कि न्यूनतम तापमान और अधिकतम तापमान में अंतर कम होने के चलते सर्द मौसम बना हुआ है। बुधवार को न्यूनतम तापमान 4.6 डिग्री सेल्सियस रेकॉर्ड किया गया। जो कि सामान्य से 10 डिग्री कम है। बलिया में ठंड और शीतलहर के चलते आठवीं तक के विद्यालय 20 जनवरी तक बंद करने का आदेश दिया गया है। डीएम रवींद्र कुमार के निर्देश पर बीएसए मनीष कुमार सिंह ने आदेश जारी किया। छुट्टी अवधि के दौरान विद्यालय में अध्यापक, कर्मचारी उपस्थित रहेंगे। सोनभद्र जिले में पड़ रही कड़ाके की ठंड, कोहरा और शीतलहर को देखते हुए शनिवार 19 जनवरी तक कक्षा आठवीं तक के विद्यालयों को बंद रखने का आदेश दिया गया है। सोनभद्र के जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी नवीन पाठक ने इस संबंध में पत्र जारी करते हुए ये जानकारी दी है। पहले यह आदेश 17 जनवरी तक था। अब ठंड को देखते हुए इसे आगे बढ़ा दिया गया है। आदेश के मुताबिक, कक्षा 1 से 8 वीं तक सभी राजकीय, परिषदीय, सहायता प्राप्त, निजी मान्यता प्राप्त, सीबीएसई, आईसीएसई बोर्ड सहित अन्य बोर्ड के समस्त विद्यालयों में 19 जनवरी 2024 तक शीतावकाश घोषित किया गया है। पूरा उत्तर भारत शीतलहर और ठंड के चपेट में है। ऐसे में आम लोगों का जन जीवन बुरी तरीके से प्रभावित हो रहा है। एक तरफ ठंड और गलत को लेकर मौसम विभाग से जारी एडवाइजरी को देखते हुए 1 से 8 क्लास तक के सभी स्कूलों को 20 जनवरी तक बंद कर दिया गया है। वहीं ट्रेन यात्रियों को ट्रेनों की लेट लतीफ के कारण भारी असुविधा का सामना करना पड़ा रहा है। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय ने विद्यालय संचालन को लेकर नोटिस जारी किया है। बीएसए हेमंत राव ने प्रतिकूल मौसम को देखते हुए 1 से 8 क्लास की छुट्टियों को बढ़ा दिया है। बुधवार को बीएसए कार्यालय से जारी नोटिस के अनुसार 18 से 20 जनवरी तक अत?यधिक गलन और ठंड के कारण शिक्षण कार्य स्थगित रहेंगे। क्लास 1 से लेकर 8 तक समस्त परिषदीय मान्यता प्राप्त, सहायता प्राप्त और निजी विद्यालय बंद रहेंगे। इस दौरान अध्यापक, शिक्षामित्र, अनुदेशक विद्यालय में उपस्थित रहकर प्रशासकीय कार्यों को करेंगे। अत्यधिक कोहरे के कारण रेल गाड़ियां अपने नियत समय से कई घंटे देरी से चल रही है। दीनदयाल उपाध्याय -पटना रेलखंड की बात करें तो इस रेल रूट पर कई गाड़ियां नियत समय से 1 लेकर 7 घंटे तक देरी से चल रही है। गाजीपुर के दिलदारनगर स्टेशन पर कोहरे और ठंड में ट्रेनों के बिलंब से चलने के कारण काफी संख्या में दूरदराज से आये लोगों को रेलवे स्टेशन पर ट्रेनों का इंतजार करना पड़ रहा है। सबसे ज्यादा विलंब से दिल्ली की ओर से आने वाली सभी ट्रेनों है। ठंड और घने कोहरे ने ट्रेन पकड़ने वाले यात्रियों के परेशान में इजाफा किया है।

बाप रे! बरेली में 5 करोड़ की स्मैक के साथ दो भाई गिरफ्तार, दिल्ली-मुंबई और पंजाब तक करते थे सप्लाई

संवाददाता

बरेली। बरेली पुलिस ने फतेहगंज में अफीम फैक्ट्री पकड़ी गई है। इसे चलाने वाले दो भाइयों को गिरफ्तार किया। इनके कब्जे से पांच करोड़ की स्मैक बरामद की गई है। थाना फतेहगंज पश्चिमी में एनडीपीएस एक्ट में मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई की जा रही है। ये स्मैक दिल्ली, पंजाब, मुंबई और उत्तराखंड में सप्लाई करते थे। बरेली पुलिस ने फतेहगंज में घर में चल रही अफीम फैक्ट्री को पकड़ लिया। इसे संचालित करने वाले भाइयों को गिरफ्तार कर लिया गया है, उनके पास से पांच करोड़ की स्मैक बरामद की गई है। दोनों भाई घर में ही अफीम फैक्ट्री चलाते थे। थाना फतेहगंज पश्चिमी में उनके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट में मुकदमा दर्ज किया गया है। तस्कर छत्तीसगढ़ और झारखंड से अफीम लाकर बरेली में उसे तैयार करते थे। फिर उसे स्मैक बनाकर बनाकर दिल्ली, पंजाब, मुंबई और उत्तराखंड में सप्लाई करते थे। एसपी देहात मुकेश चंद्र मिश्रा ने बताया कि बुधवार को मुखबिर की सूचना पर फतेहगंज पश्चिमी पुलिस टीम ने मोहल्ला सराय नई बस्ती में दबिश दी। पुलिस टीम ने मोहल्ला सराय नई बस्ती निवासी नदीम उर्फ मुन्ना और उसके भाई मोहसिन को मौके से ही गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने चार किलो 82 ग्राम स्मैक, एक किलो 800 ग्राम पावर पाउडर और 12 किलो 200 ग्राम कट पाउडर बरामद किया। पूछताछ में पता चला कि नदीम उर्फ मुन्ना अपने घर में स्मैक बनाता था। कच्चा माल अफीम पाउडर झारखंड से मंगवाते थे। पावर पाउडर और कट पाउडर का इस्तेमाल कर डली की शक्ल में बनाते थे। पुड़िया बनाकर पॉलीथीन में रखकर मिलक, रामपुर, काशीपुर, उत्तराखंड, दिल्ली में अपने भाई मोहसिन के सहयोग से सप्लाई करते थे। तस्करों से पूछताछ की जा रही है कि वह झारखंड में किससे स्मैक मंगवाते थे। नदीम के खिलाफ फतेहगंज पश्चिमी और मीरगंज थाने में पांच मुकदमे दर्ज है। गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में फतेहगंज पश्चिमी थाना प्रभारी धनंन्जय कुमार पाण्डेय, एसआई राजेश कुमार, ब्रहमपाल सिंह, सिपाही अनिल कुमार, अनुज कुमार, सलीम, अनिल कुमार, कपिल कुमार, मो इरशाद और रजत कुमार शामिल रहे।

कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा..अंकिता हत्याकांड में VIP का नाम उजागर करने ले लिए सड़कों पर उतरे

संवाददाता

देहरादून। राजधानी में कांग्रेस ने भारत जोड़ों यात्रा निकाली। इस दौरान पार्टी दिग्गजों के नेतृत्व में बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता इस यात्रा में शामिल हुए। पूर्व सीएम हरीश रावत, नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य सहित वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं के नेतृत्व में राजधानी में भारतभारत जोड़ो यात्रा निकाली। इस दौरान कांग्रेसियों ने अंकिता हत्याकांड में वीआईपी का नाम उजागर करने की मांग की। सोमवार को अंकिता हत्याकांड में न्याय की मांग को लेकर कांग्रेसी सड़कों पर उतरे। हाथीबडकला से गांधी पार्क तक भारत जोड़ो यात्रा निकालते हुए पूर्व सीएम हरीश रावत ने कहा कि अंकिता हत्या कांड में उनके माता पिता ने एक वीआईपी का नाम लिया है। लेकिन सरकार उस वीआईपी को बचाने का काम कर रही है। सरकार को तत्काल उस वीआईपी का नाम उजागर कर उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज करनी चाहिए। अगर सरकार ऐसा नहीं करती है तो यह समझा जाएगा कि वीआईपी सत्तापक्ष का है। ओर जानबूझ कर सरकार उसे बचाने का काम कर रही है। नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने भी वीआईपी का नाम उजागर करने की मांग की। बता दें, कि पौड़ी जिले के गंगा भोगपुर के वनंतरा रिजॉर्ट में रिसेप्शनिस्ट के पद पर काम करने वाली अंकिता भंडारी की 18 सितंबर, 2022 को हत्या कर दी गई थी। 24 सितंबर, 2022 को पुलिस ने उसका शव चीला नहर से बरामद किया था। इस हत्याकांड की जांच एसआईटी ने की और करीब 500 पेज की चार्जशीट अदालत में पेश की।

बिश्नोई की फिरकी में फंसा अफगानिस्तान

डबल सुपर ओवर में भारत की जीत, सीरीज भी 3-0 से जीती

एजेंसी

बेंगलुरु। अफगानिस्तान के खिलाफ टी-20 सीरीज के शुरुआती दो मैच में शून्य पर आउट होने वाले रोहित शर्मा ने तीसरे और आखिरी टी-20 में 121 रन की बेमिसाल पारी खेली। मगर यह मैच रोहित शर्मा के रिकॉर्ड पांचवें शतक से ज्यादा दो-दो सुपर ओवर। खराब अंपायरिंग, खिलाड़ियों के बीच बहस और नियमों की अज्ञानता के लिए याद रखा जाएगा। रोहित शर्मा और रिंकू सिंह के बीच 190 रन की रिकॉर्ड साझेदारी के बूते भारत ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 212/4 का स्कोर खड़ा किया। जवाब में अफगानिस्तान ने गुलबदीन नईब के तूफानी अर्धशतक की मदद से 212 रन बनाने हुए मैच टाई कर दिया। मामला सुपर ओवर तक पहुंचा। पहले सुपर ओवर में भी जब नतीजा नहीं निकला तो दूसरी बार सुपर ओवर हुआ, जिसमें भारत ने बाजी मारी। मैच और सीरीज जीतने के बाद कप्तान रोहित शर्मा बेहद खुश नजर आए। प्लेयर ऑफ द मैच चुने गए कप्तान रोहित शर्मा ने कहा कि, मुझे याद नहीं है आखिरी बार ऐसा कब हुआ था। मुझे लगता है कि मैंने आईपीएल के एक मैच में तीन बार बल्लेबाजी की है। साझेदारी बनाना महत्वपूर्ण था। मैं और रिंकू लगातार बात कर रहे थे। 22 रन पर चार विकेट गंवाने के बाद बेहद दबाव था और हमारे लिए लंबे समय तक क्रीज पर टिके रहना महत्वपूर्ण था। रोहित शर्मा ने रिंकू सिंह की दिल खोलकर तारीफ की। भारतीय कप्तान ने कहा कि उनकी टीम को रिंकू जैसे किसी खिलाड़ी की जरूरत है। रिंकू पारी के अंत में आकर फिनिश करते हैं और लेफ्ट हैंड से बल्लेबाजी करते हैं। अपने शुरुआती इंटरनेशनल करियर में रिंकू ने भारत को संकट से बाहर निकालने में रोहित शर्मा की मदद की और 39 गेंदों में नाबाद 69 रन बनाए। बकौल रोहित, पिछली कुछ सीरीज जो उन्होंने खेलीं, उसमें दिखाया कि वह बल्ले से क्या कर सकते हैं। वह बहुत शांत हैं और अपनी ताकत को अच्छी तरह से जानते हैं।

दुल्हन के लुक में चार चांद लगा देंगे नथ के ये डिजाइन

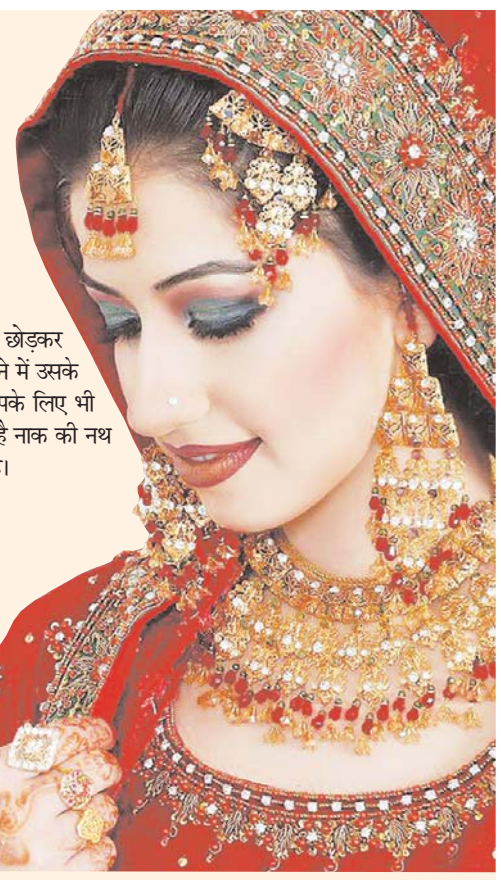

अपनी शादी के वक्त हर दुल्हन चाहती है कि वो वर्ल्ड की बेस्ट दुल्हन (ब्राइडल) लगे। इसके लिए मेकअप और हेयर स्टाइल को छोड़कर सबसे पहले जिससे दुल्हन की खूबसूरती बढ़ती है वो है उसकी ड्रेस और ज्वैलरी। जी हां- एक दुल्हन को सबसे ज्यादा खूबसूरत दिखाने में उसके गहने बहुत अहमियत रखते हैं। लेकिन एक ब्राइडल के लिए इन गहनों को पसंद करना का काम ही सबसे मुश्किल होता है। यदि आपके लिए भी ज्वैलरी डिजाइंस को चुनना मुश्किल हो गया है तो चलिए हम आपकी थोड़ी सी मदद कर देते हैं, ज्वैलरी का सबसे खास हिस्सा होता है नाक की नथ और इसके कई सारे डिजाइन आपको मार्केट में मिल जाएंगे। जिसमें से कुछ बेहद खास और लेटेस्ट डिजाइन हम आपके लिए लाएं है।

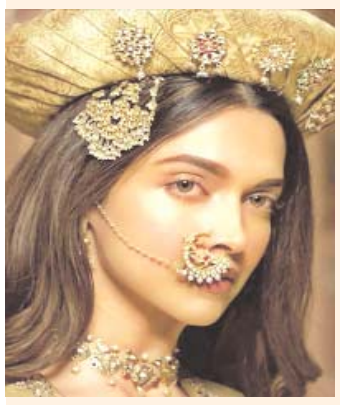

मस्तानी (रिंग)स्टाइल नथ-दीपिका पादुकोण की आपने बाजीराव मस्तानी तो जरूर देखी होगी। इसमें दीपिका मे कई तरह की नथ पहनी है। यदि आप भारी-भरकम नथ से बचना चाहती है तो ये आपके लिए बेस्ट ऑप्शन है। यह मार्केट में आपको मस्तानी नथ के नाम से

हूप नथ-रानी-महारानियों की तरह बड़ी नथ पहनने से बेहतर है आप छोटी सी नोज रिंग पहने। यह आपको आकर्षक लुक के साथ एक मॉडर्न लुक भी देगी। बड़ी सी नथ पहनने से अच्छा है कि आप छोटी सी ही नोज रिंग पहनें। यह पहनने और कैरी करने में आसान

बंगाली स्टाइल-यदि आप बंगाली फैमिली से बिलॉन्ग करती हैं या बंगाली स्टाइल आपको पसंद है तो इसमें आपको हल्के क्रॉफ्टवर्क वाली और चैन से जुड़ी हुई नथ मिल जाएगी और किसी भी तरह के फेसकट पर खूब जचेगी।

मल्टीपल चेन नथ-ऐसी नथ खासकर सॉउथ इंडियन कल्चर में ज्यादा देखी जा सकती हैं। लेकिन अगर आप सबसे हटकर कुछ अलग करना चाहती है तो तीन चेन वाली नथ को पहनकर ट्राई कर सकती है। इसके साथ ही आप तीन चेन वाली नथ के साथ हैवी मांगटीका ही पहने तो ज्यादा अच्छा लगेगा। .

जड़ाऊ नथ-अक्सर राजस्थानी की तरह कई जगहों पर जड़ाऊ नथ को पहनने का रिवाज होता है। यह वजन मे थोड़ी भारी जरूर होती है लेकिन दिखने में बेहद खास लुक देती है। आप इसे जड़ाऊ लंहगे के साथ पहन सकती है।

दुल्हन अपनाएं नए ट्रेंड की ज्वेलरी व गहनें

कुंदन संग क्रिस्टल की खूबसूरती-ब्राइडल ज्वलेरी की डिजाइन भी इस बार बिग ऐंड बोल्ड थीम पर ही आधारित रहेगी। पिछली बार की तरह कुंदन इस बार भी फैशन में है। लेकिन नया टच देने के लिए इस बार कुंदन के साथ क्रिस्टल को भी मैच कर दिया गया है। इसमें रंग के भी कई विकल्प हैं, यानी आप ड्रेस के हिसाब से कोई भी रंग चुन सकती हैं। अगर आप कुंदन का सस्ता विकल्प ढूंढ़ रही हैं, तो पोल्की और क्रिस्टल जड़ित ज्वेलरी भी अपने लिए ले सकती हैं। सोने और चांदी में ही नहीं, आर्टिफिशियल ज्वेलरी में भी कुंदन और क्रिस्टल जड़ित आकर्षक गहने की कई वैरायटी हैं। चोकर का क्रेज-दुल्हन के लिए नेकलेस के बजाय चोकर्स लें, क्योंकि ये अभी फैशन में है। गले से चिपके होने के साथ ये आपकी खूबसूरती को निखारते भी हैं। छोटी-छोटी झुमकी और बिग पेंडेंट वाले चोकर्स की डिजाइन में कई रंगों को पिरोया गया है। अलग-अलग रंग में मिलने वाले चोकर में बीड्स, क्रिस्टल, कुंदन की खूबसूरती भी देखने लायक है। गोल्ड में भी चोकर की कई वैरायटी हैं, जिसमें सेमी-प्रेशियस स्टोन का इस्तेमाल किया गया है। इसलिए ये आपको सस्ता भी पड़ेगा। अगर आपका लहंगा लाइट वर्क का है, तो रत्नजड़ित लंबे नेकलेस भी आप चोकर्स के साथ पहन सकती हैं। ईयर रिंग्स में झुमके का फैशन-साड़ी या लहंगे के साथ लंबा हैंगिंग ईयररिंग या फिर हैवी झुमकियां एक अलग ही अंदाज को बयां करती हैं। हैंगिंग ईयर रिंग्स, बिग स्टड आपको बोल्ड लुक देते हैं और ये फैशन में भी हैं। आर्टिफिशियल के अलावा गोल्ड में भी लड़ियों वाली हैंगिंग ईयररिंग्स की कई वैरायटी है। अगर आप डायमंड लेने की सोच रही हैं, तो रोज कट डायमंड, पोल्की, क्रिस्टल और पर्ल ब्लेंड यानी मोती जड़ित सोने की ज्वेलरी आप अपने लिए ले सकती हैं। फैशन कुछ खास हो- हर साल ज्वेलरी के ट्रेंड में तो बदलाव आता ही रहता है, लेकिन हर बार अपने लिए कुछ नया लें, यह भी संभव नहीं है। इसलिए ऐसी ज्वेलरी खरीदें, जो न सिर्फ आपकी खूबसूरती को बढ़ाए, बल्कि आप उसे ज्यादा-से-ज्यादा मौके पर पहन भी सकें। यानी ज्वेलरी की ऐसी डिजाइन चुनें, जो हमेशा फैशन में बनी रहे। ज्वेलरी खरीदते समय अपना बजट भी तय करें। फिर बजट के हिसाब से अपनी ज्वेलरी तय करें। अगर छोटी-छोटी ज्वेलरी पहनना पसंद है, तो लोगों को दिखाने के लिए भारी-भरकम सोने या डायमंड के सेट पर खर्च न करें। सोने के लंबे नेकलेस की जगह आप कई लेयर्स वाला मोतियों का नेकलेस भी शादी के लिए ले सकती हैं। एथनिक स्टाइल की ज्वेलरी आजकल काफी चलन में हैं। अगर सगाई या मेहंदी में हल्की साड़ी या सलवार कमीज पहन रही हैं, तो इसके साथ इस तरह की ज्वेलरी कैरी करें।

रैंप अच्छा होगा, तो डिजाइनर कपड़ों की शान बढ़ेगी

एक अच्छा डिजाइनर अपनी नई सोच और क्रिएटिविटी के लिए ही जाना जाता है. लेकिन सिर्फ क्रिएटिविटी ही सबकुछ नहीं होती है. डिजाइनर की कामयाबी इस बात पर भी निर्भर करती है कि वो अपने कलेक्शन को रैंप पर कैसे पेश करता है. इसके लिए डिजाइनर्स को जमकर मेहनत करनी पड़ती है। मुश्किल से 20 मिनट के शो में अपनी क्रिएटिविटी की छाप ऑडियन्स पर छोड़नी होती है। यही इंप्रेशन आगे चलकर डिजाइनर के लिए अच्छे बिजनेस का पैमाना भी बनता है. अपने अनोखे क्रिएशन्स को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाने के मकसद से एक डिजाइनर छोटी से छोटी चीज का ध्यान रखता है. फिर चाहे वो उसका कलेक्शन हो, मॉडल्स का सेलेक्शन हो, शो के लिए चुना गया म्यूजिक हो या फिर रैंप ही क्यों न हो। हाल ही में राजधानी दिल्ली में चल रहे फैशन के महाकुंभ इंडिया कुट्योर वीक में डिजाइनर्स ने अपनी क्रिएटिविटी दिखाते हुए एक से बढ़कर एक कलेक्शन पेश किया। मशहूर फैशन डिजाइनर मनीष मल्होत्रा ने पर्शियन स्टोरीज् नाम के कलेक्शन को जब रैंप पर पेश किया तो उनकी इस कहानी को बयां करने की जिम्मेदारी बॉलीवुड की मस्तानी दीपिका पादुकोण ने उठायी. हर बार की तरह इस बार भी मनीष ने रैंप को डिजाइन करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी. इस रैंप की लंबाई सामान्य रैंप से ज्यादा थी. खुद दीपिका भी इतने लंबे रैंप पर कैटवॉक करके थक गई थीं. दीपिका ने बाद में कहा भी कि उन्होंने मॉडलिंग से ही करियर की शुरुआत की है, कई शोज किए हैं लेकिन थकी कभी नहीं थी. इतना भारी लहंगा भी पहली बार ही पहना है. ये रैंप काफी लंबा था। वहीं डिजाइनर तरुण तहिलयानी ने अपने कलेक्शन को पेश करने के लिए सूफी कथक डांसर मंजरी चतुर्वेदी को रैंप पर उतारा. च्लास्ट डांस ऑफ कोर्टिसनज् नाम के कलेक्शन में मंजरी ने अपने नृत्य से हॉल में मौजूद दर्शकों को एक अलग ही मूड में पहुंचा दिया.वहीं बॉलीवुड के एक और पसंदीदा डिजाइनर गौरव गुप्ता ने भी रैंप के साथ एक्सपेरिमेंट करते हुए एक अलग अंदाज में अपना कलेक्शन पेश किया. गौरव ने बताया कि उन्हें इस रैंप को डिजाइन करने में बहुत मजा आया बहुत सारे स्कल्पचर्स और स्पाइरल शेप्स को लेकर रैंप तैयार किया गया। कुट्योर वीक के आखिरी दिन ऑफसाइट वेन्यू में अपने कलेक्शन को शोकेस किया था डिजाइनर मानव गंगवानी ने कश्मीर की खूबसूरती से प्रेरित हो डिजाइनर ने अपना बेगम जन्नतज नाम का कलेक्शन लोधी होटल में पेश किया, जिसे एक रैंप में तब्दील किया गया। होटल के इंटीरियर और मौजूद जगह को ध्यान में रखते हुए मानव का रैंप नॉर्मल रैंप से काफी बड़ा था. जिसकी वजह से मॉडल्स को रंग-बिरंगे कपड़े पहनकर तिगुनी लंबी वॉक करनी पड़ी. बॉलीवुड क्वीन कंगना रनौट ने मानव के लिए रैंप पर कैटवॉक की. बाद में कंगना ने कहा कि वो रैंप पर चलने के दौरान बहुत स्पेशल फील कर रही थीं. रैंप लंबा था इसलिए थोड़ी थकान भी हुई।

अनमोल विरासतों का गढ़ है असम का शिवसागर

पूर्वोत्तर में स्थित राज्य असम की पहचान अहोम राजाओं से भी जुड़ी है। तकरीबन 600 सालों तक यहां राज करने वाले अहोम राजाओं की कहानियों को करीब से महसूस करना चाहते हैं तो शिवसागर आएं। कितना अच्छा हो कि आप इतिहास को किताबों में पढ़ने के बजाय उसे अपनी आंखों के सामने चलता-फिरता देख सकें। चौंकिए नहीं, ऐतिहासिक स्थलों पर पहुंच कर इतिहास आपकी आंखों के आगे जीवंत हो उठता है। बात हो रही है असम की राजधानी गुवाहाटी से करीब 360 किलोमीटर दूर स्थित शिवसागर की, जहां अहोम राजाओं की निशानियां हर ओर बिखरी हुई दिख जाती हैं। ब्रह्मपुत्र की सहायक नदी दिखू के किनारे स्थित इस स्थान की कुदरती खूबसूरती भी अनछुई है यानी यहां पर्यटकों की भीड़ उतनी नहीं पहुंचती, जितनी किसी आम चर्चित पर्यटन स्थलों में पहुंचती है। बहरहाल, यदि आपकी रुचि अपने देश से जुड़ी विरासतों व संस्कृति को जानने-समझने में है, तो शिवसागर जिला आपको खूब भाएगा। साफ-सुथरी और प्राकृतिक सुंदरता से सजी यहां की अनमोल विरासतों की ठंडी छांव में देर तक रुककर इस स्थान को देखने का आनंद ही कुछ और है। इसी जलाशय के नाम पर शिवसागर जिले का नाम है। यह 129 एकड़ भूभाग में फैला हुआ है। यहां आप नौका विहार यानी बोटिंग का भी आनंद ले सकते हैं। सर्दियों में आने की योजना बने तो यहां प्रवासी पक्षियों के जमावड़े को देख सकते हैं। बेहतरीन फोटोग्राफी की जगह भी है यह। सबसे बड़ा कृत्रिम सरोवर अहोम राजा स्वर्गदेव रुद्र सिंह द्वारा तैयार यह सरोवर असम का सबसे बड़ा कृत्रिम सरोवर है। रुद्र सिंह ने अपनी माता जयमती की याद में इसे तैयार करवाया था। राजा ने सरोवर के उत्तरी छोर पर तीन मंदिर भी बनवाए, जिनमें जयदोल या केशवनारायण विष्णु दोल की खासी चर्चा होती है। इस मंदिर में भगवान विष्णु के अनेक अवतारों की प्रतिमाएं स्थापित हैं। मुख्य मंदिर के पीछे भगवान सूर्य देव तथा भगवान गणेश के मंदिर भी बने हुए हैं। अगर आप देश की कुछ खूबसूरत वास्तुकलाओं को देखना चाहते हैं तो आपको यहां आकर अपार खुशी होगी। यकीनन आप अहोम युग की इस उत्कृष्ट कला की प्रशंसा करने से खुद को नहीं रोक पाएंगे। यह दुमंजिला इमारत शिवसागर जिले के जयसागर इलाके में स्थित तलातल घर से उत्तर-पूर्व की ओर है। इसे अहोम राजा स्वर्गदेव प्रमत्त सिंह ने बनवाया था। अहोम काल में यह राजघराने के सदस्यों के लिए आमोद-प्रमोद और खेल-कूद का स्थल हुआ करता था। इसमें बैठकर वे भैंसा युद्ध, सांड़ युद्ध आदि खेलों का आनंद लिया करते थे। आपको इसकी बनावट खूब लुभाएगी। ऐसा लगता है, जैसे छत पर उलटा करके कोई नाव रख दी गई हो। इसे एशिया की सबसे पुरानी रंगशाला भी माना जाता है। शिवसागर में स्थित शिव दोल भारत के पवित्र तीर्थ स्थलों में एक माना जाता है। इसे पूर्वोत्तर भारत का सबसे ऊंचा शिव मंदिर माना जाता

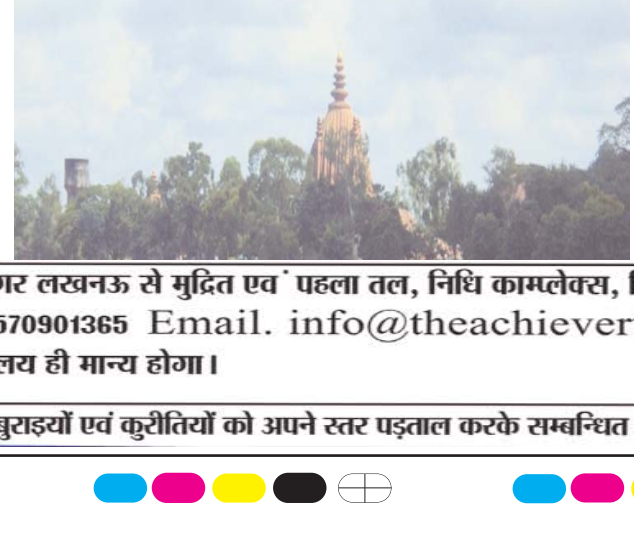

गर्भावस्था के दौरान न खाएं जीरा

अगर आपको लगातार सर्दी-जुकाम जैसी समस्या रहती है तो जीरे का सेवन जरूर करें। जीरे में मौजूद विटामिन-सी और आयरन सर्दी-जुकाम से लड़ने में मदद करते हैं और आपकी इम्युनिटी को बढ़ाने में मदद करते हैं। जीरा फेफड़ें से जुड़ी अन्य समस्याओं में कारगार साबित होता है और ये अस्थमा के मरीजों के लिए भी लाभकारी है। जीरा पेट और पाचन क्रिया के लिए अच्छा माना जाता है। पेट दर्द, अपच, डायरिया, मॉर्निंग सिकनेस में जीरे के सेवन से लाभ मिलता है। छाछ में भुना जीरा और काली मिर्च डालकर पीने से पेट संबंधी समस्याएं दूर होती हैं। पेट में गैस होने पर एक गिलास पानी में एक चुटकी भुना जीरा डालकर पीने से आराम मिलता है। एनीमिया की शिकायत होने पर जीरे का पानी पीने से काफी लाभ मिलता है। इसलिए अगर आप भी एनीमिया से पीड़ित हैं तो जीरे का सेवन शुरू करें ताकि आपको इस समस्या से छुटकारा मिल सके।वे माताएं, जो अपने बच्चों को स्तनपान कराती हैं उन्हें अपने आहार में जीरा शामिल करना चाहिए। हालांकि गर्भावस्था के दौरान माताओं को अधिक मात्रा में जीरा नहीं खाना चाहिए इससे बच्चे और गर्भवती महिला दोनों को नुकसान पहुंच सकता है।

स्वामी, प्रकाषक, मुद्रक विवेक श्रीवास्तव द्वारा ओम साई क्रियेषन्स, आषा काम्प्लवे स, इन्दिरा नगर लखनऊ से मुद्रित एवं पहला तल, निधि काम्प्लेक्स, विकास नगर लखनऊ (उ0प्र0) से प्रकाषित।
RNI No.UPHIN/2015/6090 सम्पादक- विवेक श्रीवास्तव, फोन नं0- 8004949556, 7570901365 Email. info@theachievertimes.com किसी भी वाद विवाद का निस्तारण लखनऊ न्यायालय ही मान्य होगा।
समाचार-पत्र का मुख्य उद्देय ग्रामीण भारत का सत प्रतिशत मीडिया कवरेज कर समाज में फैला भ्रष्टचार समाजिक बुराइयों एवं कुरीतियों को अपने स्तर पड़ताल करके सम्बन्धित उच्चअधिकारियों को ध्यानकर्षण कर उन्हें समाप्त कराना है।